



राजस्थान डी. एल. एड. BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा-2027

तृतीय
संस्करण

नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

परीक्षोपयोगी संभावित 4000 + प्रश्नोत्तरों का संग्रह

2025 से 2026 तक के सभी विगत वर्षों के प्रश्न पत्र हल सहित संकलन

“अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं
अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।”

संपादक

अनिल सर, मारवाड़ी सर, कुणाल सर,
रतन सर, मनीष मंगल सर, नागवेंद्र सर, S.K. सर, पंकज सर

सह संपादक

गंगा सिंह, अनोप चंद,
सुमेर प्रजापत, प्रकाश मेघवाल, धर्मेश सांखला

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

10 – 21, Vani Garden K Pas,

Jhamar Kotda Road, Udaipur, 313002 Rajasthan

अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करें



TELEGRAM



INSTAGRAM



YOUTUBE



BOOK

बुक कोड - AP0147

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन

www.store.akshanshpublication.com

मुख्य वितरक - अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर M. 7850960198

योगिता बुक हाऊस, जयपुर M. 6350252387, 8432478146

खण्डेलवाल बुक कंपनी, जयपुर M. 8619587048, 9782611527

Chavi Stationary, जयपुर M. 8058470323, 9680946800

पायल बुक हाऊस, जयपुर M. 8824962419, 7296876820

Diligent, उदयपुर M. 9694575381

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिंट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01

मानसिक योग्यता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या & अक्षर श्रृंखला	1-9
2.	लुप्त संख्या	10-15
3.	कोडिंग-डिकोडिंग	16-26
4.	रक्त सम्बन्ध	27-34
5.	दिशा परीक्षण	35-44
6.	घड़ी परीक्षण	45-52
7.	कैलेण्डर	53-59
8.	सादृश्यता	60-67
9.	वर्गीकरण या बेमेल को अलग करना	68-70
10.	वर्णमाला परीक्षण	71-75
11.	तार्किक वेन आरेख	76-80
12.	जल एवं दर्पण छवियाँ	81-85
13.	आकृतियों की गणना	86-91
14.	क्रम परीक्षण	92-97
15.	बैठक व्यवस्था एवं पहेली परीक्षण	98-103
16.	घन, घनाभ और पासा	104-113
17.	आयु परीक्षण	114-116
18.	विविध	117-120
19.	न्याय वाक्य	121-131
20.	कथन और निष्कर्ष	132-138
21.	कथन एवं तर्क	139-142
22.	कथन एवं कार्यवाही	143-146
23.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ	147-149

02

शिक्षण अभिक्षमता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम	1 - 14
2.	नेतृत्व गुण	15 - 21
3.	सृजनात्मकता	22 - 26
4.	सतत् एवं समग्र (व्यापक) मूल्यांकन	27 - 36
5.	संप्रेषण	37 - 42
6.	व्यावसायिक अभिवृत्ति	43 - 46
7.	सामाजिक संवेदनशीलता	47 - 54

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	1 - 10
2.	भौतिक विस्तार	11 - 24
3.	जलवायु	25 - 30
4.	अपवाह तंत्र	31 - 40
5.	झीलें	41 - 44
6.	मृदा	45 - 48
7.	प्राकृतिक वनस्पति	49 - 54
8.	वन्यजीव अभयारण्य एवं संरक्षण	55 - 60
9.	खनिज संपदा	61 - 70
10.	जनसंख्या	71 - 74
11.	रबी एवं खरीफ की प्रमुख फसलें	75 - 81
12.	यातायात के साधन एवं परिवहन	82 - 88

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	लोक देवता	1 - 9
2.	लोक देवियाँ	10 - 15
3.	संत-सम्प्रदाय	16 - 28
4.	प्रमुख दुर्ग	29 - 39
5.	महल एवं स्मारक	40 - 44
6.	हवेलियाँ, बावड़ियाँ एवं छतरियाँ	45 - 49
7.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद, दरगाह	50 - 61
8.	मेले एवं त्योहार	62 - 70
9.	लोककला एवं हस्तकला	71 - 78
10.	चित्रकला	79 - 83
11.	लोकगीत एवं संगीत	84 - 87
12.	लोक वाद्ययंत्र	88 - 91
13.	लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	92 - 103
14.	आभूषण, वेशभूषा एवं खानपान	104 - 110
15.	रीति - रिवाज एवं प्रथाएँ	111 - 116
16.	भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य	117 - 127

05**राजस्थान का इतिहास**

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएँ	1 - 8
2.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	9 - 47
3.	1857 की क्रांति	48 - 55
4.	किसान आन्दोलन	56 - 65
5.	जनजातीय आन्दोलन	66 - 69
6.	राजनीतिक जनजागरण	70 - 75
7.	प्रजामण्डल आन्दोलन	76 - 81
8.	राजस्थान का एकीकरण	82 - 86
9.	प्रमुख व्यक्तित्व	87 - 94

06**राजस्थान राजव्यवस्था**

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राज्यपाल	1 - 7
2.	मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	8 - 12
3.	राज्य विधानसभा	13 - 17
4.	उच्च न्यायालय	18 - 22
5.	राज्य लोक सेवा आयोग	23 - 26
6.	राज्य निर्वाचन आयोग	27 - 30
7.	राज्य मानवाधिकार आयोग	31 - 32
8.	जिला प्रशासन	33 - 37
9.	पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन	38 - 44

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	1-3
2.	वाक्य विचार	4-7
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	8-18
4.	समास एवं समास विग्रह	19-23
5.	उपसर्ग	24-26
6.	प्रत्यय	27-33
7.	पर्यायवाची शब्द	34-38
8.	विलोम शब्द	39-46
9.	युग्म शब्द	47-52
10.	वाक्यांश के लिए एक शब्द	53-56
11.	शब्द शुद्धि	57-61
12.	वाक्य शुद्धि	62-64
13.	मुहावरे	65-71
14.	लोकोक्तियाँ	72-77

S.No.	CHAPTER	PAGE NO.
1.	ARTICLES	1 - 3
2.	PREPOSITION	4 - 6
3.	CONNECTIVES (CONJUNCTIONS)	7 - 8
4.	SENTENCES	9 - 11
5.	TENSE	12 - 18
6.	DIRECT AND INDIRECT SPEECH	19 - 26
7.	VOCABULARY	27 - 38
8.	SYNONYMS	39 - 43
9.	ANTONYMS	44 - 47
10.	SPELLING ERRORS	48
11.	ONE WORD SUBSTITUTION	49 - 52
12.	READING COMPREHENSION	53 - 57
13.	CORRECTION OF SENTENCES	58 - 62
14.	SPOTTING ERROR	63 - 65

09**संस्कृत**

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	वर्ण विचार	1 - 4
2.	संधि	5 - 9
3.	समास	10 - 13
4.	उपसर्ग	14 - 15
5.	प्रत्यय	16 - 26
6.	लिंग	27 - 28
7.	शब्द रूप	29 - 32
8.	धातु रूप	33 - 39
9.	कारक	40 - 44

10**विगत वर्षों के प्रश्न-पत्र**

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	BSTC प्रश्न पत्र - 2026 (SHIFT-1)	1 - 10
2.	BSTC प्रश्न पत्र - 2026 (SHIFT-2)	11 - 20
3.	BSTC प्रश्न पत्र -2025 (SHIFT-1)	21 - 30
4.	BSTC प्रश्न पत्र -2025 (SHIFT-2)	31 - 40





मानसिक योग्यता



संख्या & अक्षर श्रृंखला (Number & Letter Series)

- इस अध्याय के अन्तर्गत प्रश्न में अंको अथवा अक्षरों (अंग्रेजी) की एक निश्चित श्रृंखला दी होती है जो एक विशेष नियमानुसार होती है हमें उस नियम का पता लगाकर ही अगली संख्या ज्ञात करनी होती है।
- श्रृंखला के प्रश्नों को हल करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें- गणितीय संक्रिया में काम आने वाली महत्वपूर्ण संख्याओं वर्ग संख्या, घन संख्या, अभाज्य संख्या, सम संख्या, विषम संख्या आदि को कण्ठस्थ याद रखे।

वर्ग संख्याएँ

$1^2 = 1$	$2^2 = 4$	$3^2 = 9$
$4^2 = 16$	$5^2 = 25$	$6^2 = 36$
$7^2 = 49$	$8^2 = 64$	$9^2 = 81$
$10^2 = 100$	$11^2 = 121$	$12^2 = 144$
$13^2 = 169$	$14^2 = 196$	$15^2 = 225$
$16^2 = 256$	$17^2 = 289$	$18^2 = 324$
$19^2 = 361$	$20^2 = 400$	$21^2 = 441$
$22^2 = 484$	$23^2 = 529$	$24^2 = 576$
$25^2 = 625$	$26^2 = 676$	$27^2 = 729$
$28^2 = 784$	$29^2 = 841$	$30^2 = 900$

घन संख्याएँ

$1^3 = 1$	$2^3 = 8$	$3^3 = 27$
$4^3 = 64$	$5^3 = 125$	$6^3 = 216$
$7^3 = 343$	$8^3 = 512$	$9^3 = 729$
$10^3 = 1000$	$11^3 = 1331$	$12^3 = 1728$

1. अभाज्य संख्या-ऐसी संख्या जो 1 तथा स्वयं से भाज्य हो अभाज्य संख्या कहलाती है। 1 से 100 तक कुल 25 अभाज्य संख्या होती है।
- 2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59, 61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97
2. श्रृंखला को हल करने के लिए कोई शॉर्ट ट्रिक नहीं है बल्कि इसका निरंतर अभ्यास ही आपको इस अध्याय पर मजबूत पकड़ बनाएगा।
3. प्रश्न की भाषा को समझकर प्रश्न को हल करने का प्रयास करें।
4. हमारे अनुभव के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाओं में अंतर के नियम का सर्वाधिक प्रयोग होता है अतः इस नियम का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

महत्वपूर्ण नियम

Rule of Gap (अंतर का नियम)

- इस नियम के अनुसार दिए गए प्रश्न में पहली और दूसरी संख्या का अंतर, दूसरी और तीसरी संख्या का अंतर और आगे भी यही क्रम जारी रखते हुए अंतर की श्रृंखला का समूह ज्ञात करके उसी आधार पर अगली संख्या प्राप्त की जाती है। इस नियम के उदाहरण अग्रांकित है

वर्णमाला श्रृंखला

- इसके अन्तर्गत दिए गए प्रश्न में अंग्रेजी वर्णों की एक निश्चित श्रृंखला दी जाती है अतः इस श्रृंखला में वर्णों को उनके वर्णमाला क्रमांक देकर अंकीय श्रृंखला बनाई जाती है और प्रश्न को हल किया जाता है।

अंग्रेजी वर्णमाला श्रृंखला

- अंग्रेजी वर्णमाला 26 अक्षरों को विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में क्रमित करके श्रेणी क्रम बनाया जाता है। वर्णमाला के अक्षरों की कोई न कोई एक निश्चित श्रेणी क्रम होती है।

अंग्रेजी वर्णमाला

अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों का स्थानीय क्रमांकित मान के साथ निरूपण								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
1	2	3	4	5	6	7	8	9
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
10	11	12	13	14	15	16	17	18
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
19	20	21	22	23	24	25	26	

अंग्रेजी वर्णमाला का विपरीत क्रम								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
26	25	24	23	22	21	20	19	18
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
17	16	15	14	13	12	11	10	9
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
8	7	6	5	4	3	2	1	

बड़े अक्षरों की श्रृंखला

- इस प्रकार की श्रृंखला के अंतर्गत कुछ अक्षर या अक्षर समूह एक निश्चित तरीके के आधार पर श्रृंखला के रूप में दिए होते हैं। इस श्रृंखला के एक या कुछ पद रिक्त होते हैं जिन्हें श्रृंखला के तरीके को ज्ञात करके करना होता है।
- इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए आपको प्रत्येक अक्षर की वर्णमाला में स्थिति (Position) को याद कर लेना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्णमाला के वृत्तीय अवधारणा का ख्याल रहे, यानी की Z के बाद फिर A, B, C, D शुरू हो जाएगा।

छोटे अक्षरों की श्रृंखला

- इस प्रकार के प्रश्नों के अंतर्गत अक्षरों की एक श्रृंखला दी गई होती है। इस प्रकार की श्रृंखला अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षरों को विभिन्न तरीकों में आवर्तित करके बनायी जाती है जो बायीं ओर से दायीं ओर किसी विशेष क्रम में बदलते हैं। श्रृंखला में एक से अधिक रिक्त स्थान हो सकते हैं। परीक्षार्थी को यह ज्ञात करना होता है कि यदि अक्षर इसी क्रम में बदलते रहें तो रिक्त स्थानों पर कौन-से अक्षर होने चाहिए। दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर श्रृंखला को पूर्ण करना होता है।

- (A) शृंखला के अंतर्गत केवल एक समान समूह पुनरावृत्ति है।
 (B) जब शृंखला में एक समान यह समूह की पुनरावृत्ति न हो बल्कि समूह के अन्तर किसी एक अक्षर की संख्या में लगातार वृद्धि होती जाए।
 (C) शृंखला के प्रत्येक समूह में अलग-अलग अक्षरों की पुनरावृत्ति।
 (D) शृंखला के अंतर्गत दो अक्षर समूहों का एकांतर में आना।

अभ्यास प्रश्न
निर्देश :- (1-15)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अंक शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

1. **120, 99, 80, 63, 48, ?**
 (a) 35 (b) 38
 (c) 39 (d) 40
2. **0, 6, 24, 60, 120, 210, ?**
 (a) 240 (b) 290
 (c) 336 (d) 504
3. **4, 9, 25, ?, 121, 169, 289, 361**
 (a) 49 (b) 64
 (c) 36 (d) 81
4. **1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21**
 (a) 10 (b) 11
 (c) 12 (d) 13
5. **2, 5, 9, ?, 20, 27**
 (a) 14 (b) 16
 (c) 18 (d) 20
6. **1, 6, 15, ?, 45, 66, 91**
 (a) 25 (b) 26
 (c) 27 (d) 28
7. **22, 24, 28, ?, 52, 84**
 (a) 38 (b) 36
 (c) 42 (d) 46
8. **240, ?, 120, 40, 10, 2**
 (a) 180 (b) 240
 (c) 420 (d) 480
9. **28, 33, 31, 36, ?, 39**
 (a) 32 (b) 34
 (c) 38 (d) 40
10. **1, 5, 13, 25, 41, ?**
 (a) 51 (b) 57
 (c) 61 (d) 63
11. **6, 17, 39, 72, ?**
 (a) 83 (b) 94
 (c) 116 (d) 127
12. **2, 3, 5, 7, 11, ?, 17**
 (a) 12 (b) 13
 (c) 14 (d) 15
13. **1, 4, 27, 16, ?, 36, 343**
 (a) 25 (b) 87
 (c) 120 (d) 125

14. 1, 1, 4, 8, 9, 27, 16, ?

- (a) 32 (b) 64
 (c) 81 (d) 256

15. 10, 100, 200, 310, ?

- (a) 400 (b) 410
 (c) 430 (d) 420

निर्देश :- (16-25)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अक्षर शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

16. **A, C, F, J, ?, ?**
 (a) L, P (b) M, O
 (c) O, U (d) R, V
17. **B, D, F, I, L, P, ?**
 (a) R (b) T
 (c) S (d) U
18. **BMO, EOQ, HQS, ?**
 (a) KSU (b) LMN
 (c) SOV (d) SOW
19. **R, U, X, A, D, ?**
 (a) F (b) G
 (c) H (d) I
20. **a, d, c, f, ?, h, g, ?, i**
 (a) e, j (b) e, k
 (c) f, j (d) j, e
21. **AC, FH, KM, PR, ?**
 (a) UW (b) VW
 (c) UX (d) TV
22. **U, B, I, P, W, ?**
 (a) D (b) F
 (c) Q (d) X
23. **Z, ?, T, ?, N, ?, H, ?, B**
 (a) W, R, K, E (b) X, Q, K, E
 (c) X, R, K, E (d) W, Q, K, E
24. **A, G, L, P, S, ?**
 (a) U (b) W
 (c) X (d) Y
25. **T, R, P, N, L, ?, ?**
 (a) J, G (b) K, H
 (c) J, H (d) K, I

निर्देश :- (26-35)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में एक अक्षर-अंक शृंखला दी गई है जिसके एक या अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

26. **b3P, c6R, d12T, e24V, ?**
 (a) f48X (b) f46X
 (c) f48W (d) g48X

27. C3D, E7G, G16J, I35M, ?
 (a) K74P (b) K70Q
 (c) K54R (d) K36I
28. 1ZA, 3YB, 6XC, 10WD, ?
 (a) 14VE (b) 15UV
 (c) 12VE (d) 15VE
29. B2D, E3H, I4M, ?
 (a) N5R (b) N5T
 (c) N5S (d) N5Q
30. 4EZ 5GY 7IX ? 14MV 19OU
 (a) 10KW (b) 10LW
 (c) 9KW (d) 10KY
31. Z3a, W5d, T8g, Q12j, ?
 (a) M16n (b) N17m
 (c) N16k (d) K17n
32. Z1A, X2D, V6G, T21J, R88M, P445P, ?
 (a) N2676S (b) N2676T
 (c) T2670N (d) T2676N
33. G4T, ?, M20P, P43N, S90L
 (a) G4T (b) J9R
 (c) M20P (d) P43N
34. D-4, F-6, H-8, J-10, ?, ?
 (a) K-12, M-13 (b) L-12, M-14
 (c) L-12, N-14 (d) K-12, M-14
35. 2B, 4C, 8E, 14H, ?
 (a) 16K (b) 20I
 (c) 20L (d) 22L

निर्देश :-(36-50)

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न में अक्षरों का कौन-सा समूह दी गई शृंखला में खाली स्थानों पर क्रमवार रखने पर शृंखला को पूरा करेगा?

36. ab_babc_ab_b_bcb_b
 (a) c b c a a (b) c a b a c
 (c) a b c b a (d) a c a c a
37. _cb_aca_bba_ac_bacac
 (a) bcbca (b) cbaca
 (c) abcba (d) abccb
38. d_cdd_ccd_ddcc_
 (a) cccd (b) dddc
 (c) dcdd (d) cddc
39. ipi_upog_pig_pogi_g
 (a) upgii (b) puigp
 (c) giupi (d) iupgg
40. l_b_ub_ubt_blu_tub
 (a) u b t l u (b) u t l u b
 (c) t u l b u (d) b u t l u
41. a_ba_c_aad_aa_ea
 (a) babbd (b) babbc
 (c) bacde (d) babbb

42. _bac_acb_ba
 (a) cbbac (b) abbac
 (c) cabbc (d) accbb
43. k_mk_lmkk_lk_mk
 (a) lkml (b) lkml
 (c) lkmk (d) lkmm
44. ba_b_aab_a_b
 (a) abba (b) abab
 (c) baab (d) babb
45. ba_cb_b_bab_
 (a) acbb (b) bcaa
 (c) cbab (d) bacc
46. abca_bcaab_ca_bbc_a
 (a) abba (b) baba
 (c) bbaa (d) abac
47. a_bbc_aab_cca_bbcc
 (a) abba (b) caba
 (c) caab (d) acba
48. ba_ba_bac_acb_cbac
 (a) cbac (b) ccba
 (c) bcba (d) bbca
49. a_bb_caaab_bcc_aaaa
 (a) abcc (b) accb
 (c) acbc (d) acbb
50. aab_bbbaa_cbba_abc_ba
 (a) bcca (b) bcac
 (c) cbab (d) cbba

व्याख्या

1. [a]
यहाँ

$$120, 99, 80, 63, 48, ?$$

$$\begin{array}{ccccccc} \rightarrow & \rightarrow & \rightarrow & \rightarrow & \rightarrow & & \\ -21 & -19 & -17 & -15 & -13 & & \end{array}$$

अतः लुप्त पद = $48 - 13 = 35$

2. [c]
यहाँ

$$0, 6, 24, 60, 120, 210, ?$$

$$1^3-1 \quad 2^3-2 \quad 3^3-3 \quad 4^3-4 \quad 5^3-5 \quad 6^3-6 \quad 7^3-7$$

अतः लुप्त पद = $7^3 - 7$

$$= 343 - 7$$

$$= 336$$

3. [a]

यहाँ अभाज्य संख्याओं के वर्ग की शृंखला है-

$$4, 9, 25, ?, 121, 16, 28, 36$$

$$2^2 \quad 3^2 \quad 5^2 \quad 7^2 \quad 11^2 \quad 13^2 \quad 17^2 \quad 19^2$$

अतः लुप्त पद = $7^2 = 49$

4. [d] यहाँ दो शृंखला बन रही है-

1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21

3, 6, 9, 12
3 × 3 × 3 × 3 ×

(a)

1, 3, 7, ?, 21,
+2 +4 +6 +8

(b)

अतः लुप्त पद= 7+6 = 13

5. [a]

यहाँ

2, 5, 9, ?, 20, 27
+3 +4 +5 +6 +7

अतः लुप्त पद= 9 + 5 = 14

6. [d]

यहाँ

1, 6, 15, ?, 45, 66, 91,
+5 +9 +13 +17 +21 +25
+4 +4 +4 +4 +4

अतः लुप्त पद= 15 + 13 = 28

7. [b]

यहाँ

22, 24, 28, ?, 52, 84,
+2 +4 +8 +16 +32
×2 ×2 ×2 ×2

अतः लुप्त पद= 28 + 8 = 36

8. [b]

यहाँ

240, ?, 120, 40, 10, 2
÷1 ÷2 ÷3 ÷4 ÷5

अतः लुप्त पद= 240 ÷ 1 = 240

9. [b]

यहाँ

28, 33, 31, 36, ?, 39
+5 -2 +5 -2 +5

अतः लुप्त पद= 36 - 2 = 34

10. [c]

यहाँ

1, 5, 13, 25, 41, ?
+4 +8 +12 +16 +20
+4 +4 +4 +4

अतः लुप्त पद= 41 + 20 = 61

11. [c]

यहाँ

6, 17, 39, 72, ?
+11 +22 +33 +44
+11 +11 +11

अतः लुप्त पद= 72 + 44 = 116

12. [b]

यहाँ यह अभाज्य संख्याओं की शृंखला है, अतः लुप्त पद= 11 के बाद की अभाज्य संख्या = 13

13. [d]

यहाँ

1, 4, 27, 16, ?, 36, 343
1³ 2² 3³ 4² 5³ 6² 7³

अतः लुप्त पद= 5³ = 125

14. [b]

यहाँ

1, 1, 4, 8, 9, 27, 16, ?
1² 1³ 2² 2³ 3² 3³ 4² 4³

अतः लुप्त पद= 4³ = 64

15. [c]

यहाँ

10, 100, 200, 310, ?
+90 +100 +110 +120
+1 +1 +1

अतः लुप्त पद= 310 + 120 = 430

16. [c]

यहाँ

A $\xrightarrow{+2}$ C $\xrightarrow{+3}$ F $\xrightarrow{+4}$ J $\xrightarrow{+5}$ O $\xrightarrow{+6}$ U

अतः लुप्त पद= O, U

17. [b] यहाँ

B $\xrightarrow{+2}$ D $\xrightarrow{+2}$ F $\xrightarrow{+3}$ I $\xrightarrow{+3}$ L $\xrightarrow{+4}$ P $\xrightarrow{+4}$ T

अतः लुप्त पद= T

18. [a]

यहाँ

B	M	O
+3 ↓	+2 ↓	+2 ↓
E	O	Q
+3 ↓	+2 ↓	+2 ↓
H	Q	S
+3 ↓	+2 ↓	+2 ↓
K	S	U

अतः लुप्त पद= KSU

19. [b] यहाँ

R $\xrightarrow{+3}$ U $\xrightarrow{+3}$ X $\xrightarrow{+3}$ A $\xrightarrow{+3}$ D $\xrightarrow{+3}$ G

अतः लुप्त पद= G

20. [a]

यहाँ दो शृंखला चल रही है-

a $\xrightarrow{+2}$ c $\xrightarrow{+2}$ e $\xrightarrow{+2}$ g $\xrightarrow{+2}$ i

तथा

d $\xrightarrow{+2}$ f $\xrightarrow{+2}$ h $\xrightarrow{+2}$ j

अतः लुप्त पद= e, j

21. [a]

यहाँ

A	C
+5 ↓	+5 ↓
F	H
+5 ↓	+5 ↓
K	M
+5 ↓	+5 ↓
P	R
+5 ↓	+5 ↓
U	W

अतः लुप्त पद= UW

22. [a]

- यहाँ

U $\xrightarrow{+7}$ B $\xrightarrow{+7}$ I $\xrightarrow{+7}$ P $\xrightarrow{+7}$ W $\xrightarrow{+7}$ D

अतः लुप्त पद= D

23. [d]

- यहाँ

Z $\xrightarrow{-3}$ W $\xrightarrow{-3}$ T $\xrightarrow{-3}$ Q $\xrightarrow{-3}$

N $\xrightarrow{-3}$ K $\xrightarrow{-3}$ H $\xrightarrow{-3}$ E $\xrightarrow{-3}$ B

अतः लुप्त पद = W, Q, K, E

24. [a]

यहाँ

A $\xrightarrow{+6}$ G $\xrightarrow{+5}$ L $\xrightarrow{+4}$ P $\xrightarrow{+3}$ S $\xrightarrow{+2}$ U

अतः लुप्त पद= U

25. [c]

यहाँ T $\xrightarrow{-2}$ R $\xrightarrow{-2}$ P $\xrightarrow{-2}$ N $\xrightarrow{-2}$ L

$\xrightarrow{-2}$ J $\xrightarrow{-2}$ H

अतः लुप्त पद= J, H

26. [a]

यहाँ

b	3	p
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
c	6	R
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
d	12	T
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
e	24	V
+1 ↓	×2 ↓	+2 ↓
f	48	X

अतः लुप्त पद= f48X

27. [a]

यहाँ

C	3	D
+2 ↓	×2+ ↓	+3 ↓
E	7	G
+2 ↓	×2+ ↓	+3 ↓
G	16	J
+2 ↓	×2+ ↓	+3 ↓
I	35	M
+2 ↓	×2+ ↓	+3 ↓
K	74	P

अतः लुप्त पद= K74P

28. [d]

यहाँ

1	Z	A
+2 ↓	-1 ↓	+1 ↓
3	Y	B
+3 ↓	-1 ↓	+1 ↓
6	X	C
+4 ↓	-1 ↓	+1 ↓
10	W	D
+5 ↓	-1 ↓	+1 ↓
15	V	E

अतः लुप्त पद= 15 VE

29. [c]
यहाँ

B	2	D
+3 ↓	+1 ↓	+4 ↓
E	3	H
+4 ↓	+1 ↓	+5 ↓
I	4	M
+5 ↓	+1 ↓	+6 ↓
N	5	S

अतः लुप्त पद = N5S

30. [a]
यहाँ

4	E	Z
+1 ↓	+2 ↓	-1 ↓
5	G	Y
+2 ↓	+2 ↓	-1 ↓
7	I	X
+3 ↓	+2 ↓	-1 ↓
10	K	W
+4 ↓	+2 ↓	-1 ↓
14	M	V
+5 ↓	+2 ↓	-1 ↓
19	O	U

अतः लुप्त पद = 10KW

31. [b]
यहाँ

Z	3	a
-3 ↓	+2 ↓	+3 ↓
W	5	d
-3 ↓	+3 ↓	+3 ↓
T	8	g
-3 ↓	+4 ↓	+3 ↓
Q	12	j
-3 ↓	+5 ↓	+3 ↓
N	17	m

अतः लुप्त पद = N17m

32. [a]
यहाँ

Z	1	A
-2 ↓	$\times 1 + 1$ ↓	+3 ↓
X	2	D
-2 ↓	$\times 2 + 2$ ↓	+3 ↓
V	6	G
-2 ↓	$\times 3 + 3$ ↓	+3 ↓
T	21	J
-2 ↓	$\times 4 + 4$ ↓	+3 ↓
R	88	M
-2 ↓	$\times 5 + 5$ ↓	+3 ↓
P	445	P
-2 ↓	$\times 6 + 6$ ↓	+3 ↓
N	2676	S

अतः लुप्त पद = N2676S

33. [b]
यहाँ

G	4	T
+3 ↓	$\times 2 + 1$ ↓	-2 ↓
J	9	R
+3 ↓	$\times 2 + 2$ ↓	-2 ↓
M	20	P
+3 ↓	$\times 2 + 3$ ↓	-2 ↓
P	43	N
+3 ↓	$\times 2 + 4$ ↓	-2 ↓
S	90	L

अतः लुप्त पद = J 9 R

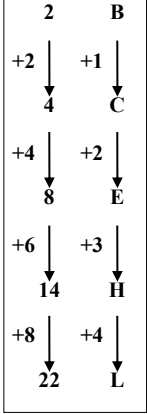
34. [c]
यहाँ

D	-	4
+2 ↓	+2 ↓	↓
F	-	6
+2 ↓	+2 ↓	↓
H	-	8
+2 ↓	+2 ↓	↓
J	-	10
+2 ↓	+2 ↓	↓
L	-	12
+2 ↓	+2 ↓	↓
N	-	14

अतः लुप्त पद = L-12, N-14

35. [d]

यहाँ



अतः लुप्त पद= 22L

36. [a]

- abcb/abcb/abcb/abcb/ab
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः cbcaa होगा।

37. [d]

- acbbac/acbbac/acbbac/ac
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः abccb होगा।

38. [b]

- ddc/dddcc/ddddccc
- अतः रिक्त स्थान पर dddc होगा।

39. [c]

- ipig/upog/ipig/upog/ipig
- अतः खाली स्थान पर क्रमशः giupi होगा।

40. [b]

- lub/tub/lub/tub/lub/tub
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः u t l u b होगा।

41. [c]

- a b b a / a c c a / a d d a / a e c a
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः bacde होगा।

42. [a]

- c b a / c b a / c b a / c b a / c b a
- अतः विकल्प (a) में दिया गया अक्षर समूह cbbac शृंखला को पूरा कर देगा।

43. [b]

- klmk/klmk/klmk/klmk
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः lkml होगा।

44. [a]

- baab/baab/baab
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः abba होगा।

45. [d]

- babc/babc/babc
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः bacc होगा।

46. [d]

- abc/aabc/aabbc/aabbcc/a
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः abac होगा।

47. [d]

- aabbcc/aabbcc/aabbcc
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः acba होगा।

48. [b]

- bac/bac/bac/bac/bac/bac
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः ccba होगा।

49. [c]

- aabbcc/aaabbbccc/aaaa
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः acbc होगा।

50. [c]

- aab/c/bba/aab/c/bba/aab/c/bba
- अतः रिक्त स्थानों पर क्रमशः cbab होगा।

अभ्यास हेतु अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

निर्देश: (1-15)

निम्नलिखित प्रत्येक शृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा?

1. 1, 2, 6, 24, ?, 720

- (a) 3
- (b) 5
- (c) 120
- (d) 8

2. 156, 506, ?, 1806

- (a) 1056
- (b) 856
- (c) 1456
- (d) 1506

3. 121, 144, 289, 324, 529, 576, ?

- (a) 961
- (b) 841
- (c) 900
- (d) 729

4. 365, 364, 355, 330, 281, ?

- (a) 280
- (b) 200
- (c) 180
- (d) 120

5. 48, 82, 44, 77, 40, 72, ?

- (a) 76
- (b) 70
- (c) 36
- (d) 40

6. 14, 28, 20, 40, 32, 64, ?

- (a) 52
- (b) 56
- (c) 128
- (d) 48

7. 3, 5, 6, 11, 9, 17, 12, ?

- (a) 20
- (b) 10
- (c) 22
- (d) 23

8. 3, 11, 38, 102, _____ 443

- (a) 227
- (b) 237
- (c) 247
- (d) 217

9. 0.5, 2, 4.5, 8, 12.5, _____?

- (a) 17
- (b) 16
- (c) 16.5
- (d) 18

10. 7, 2 = 59; 5, 3 = 28; 9, 1 = 810; 2, 1 = 13; 5, 4 = ?

- (a) 19
- (b) 9
- (c) 20
- (d) 239

11. 17, 13, 11, 7, 5, ?

- (a) 0 (b) 1
(c) 2 (d) 3

12. 132, 253, 374, 495, ?

- (a) 565 (b) 523
(c) 5116 (d) 5102

13. 165, 195, 255, 285, 345, ?

- (a) 375 (b) 390
(c) 420 (d) 405

14. 4, 10, ?, 82, 244, 730

- (a) 24 (b) 28
(c) 77 (d) 56

15. 7, 25, 61, 121, ?

- (a) 210 (b) 211
(c) 212 (d) 209

निर्देश(16-30):-

उस विकल्प का चयन करें, जो रिक्त स्थान की पूर्ति करके दी गई शृंखला को पूर्ण करेगा-

16. DKM, FJP, HIS, JHV ?

- (a) HGY (b) LGZ
(c) IGY (d) LGY

17. X, U, R, O, L, I, ? ?

- (a) HG (b) HE
(c) FC (d) GE

18. CFL, EIK, GLJ, IOI, ?

- (a) KRH (b) KRJ
(c) JRH (d) KQH

19. deb, ijg, nol, ?, xyv

- (a) stq (b) rsp
(c) rsq (d) stp

20. AZBY, CXDW, EVFU, ?

- (a) SHTG (b) GXHW
(c) GTHS (d) STHO

21. A, Z, B, Y, C, X, D, W, E, V, F, U, G, ?

- (a) T (b) R
(c) V (d) S

22. CE, GI, KM, OQ, ?

- (a) TW (b) TV
(c) SU (d) RT

23. FED, IHG, LKJ, ONM, ?

- (a) MKJ (b) VUT
(c) CBA (d) RQP

24. JN, OR, UW, BC, ?

- (a) KM (b) JJ
(c) JK (d) KJ

25. VWX, BCD, HIJ, ?

- (a) MOQ (b) NOP
(c) GHI (d) TUV

26. A, C, F, J, ?, ?

- (a) L, P
(b) M, O
(c) O, U
(d) R, V

27. AC, FH, KM, PR, ?

- (a) UW
(b) VW
(c) UX
(d) TV

28. BMO, EOQ, HQS, ?

- (a) KSU
(b) LMN
(c) SOV
(d) SOW

29. R, U, X, A, D, ?

- (a) F
(b) G
(c) H
(d) I

30. B, D, F, I, L, P, ?

- (a) R
(b) T
(c) S
(d) U

निर्देश: (31-45)

निम्नलिखित प्रश्न में अक्षरों का कौन-सा समूह खाली स्थानों पर क्रमवार रखने से दी गई अक्षर शृंखला को पूरा करेगा?

31. _aba_ba_ab

- (a) abbba
(b) abbab
(c) baabb
(d) bbaba

32. ab_baa_ab_

- (a) aaaaa
(b) aabaa
(c) aabab
(d) baabb

33. ba_abab_b_ba_aba

- (a) baab
(b) abab
(c) aabb
(d) bbaa

34. a_a_bbaa_bbba_a

- (a) aabb
(b) abaa
(c) abab
(d) aaab

35. mc_m_a_ca_ca_c_mc

- (a) acmma
- (b) camcam
- (c) aaacmm
- (d) acmmmc

36. b_aacba_bca_cb_a_caa

- (a) cabab
- (b) babcb
- (c) caaab
- (d) cabac

37. _dbc_d_ca_bcad_c_db_

- (a) aabdbac
- (b) bbdcaad
- (c) ccbbadc
- (d) acaddbc

38. b_ab_b_aab_b

- (a) abba
- (b) baaa
- (c) aabb
- (d) abbb

39. aa_bcc_aabbc_a_b_cc

- (a) abab
- (b) bcab
- (c) ccaa
- (d) bcca

40. l_b_ub_ubt_blu_tub

- (a) ubtlu
- (b) utlub
- (c) tulbu
- (d) butlu

41. _ba_bab_babb_b

- (a) baaa
- (b) abbb
- (c) babb
- (d) abab

42. b_t_a/_atd_d/ba_ad

- (a) dattac
- (b) dadtac
- (c) abdaac
- (d) abab

43. ccbab_caa_bccc_a_

- (a) babc
- (b) babb
- (c) bbba
- (d) baab

44. l_b_ub_ubt_blu_tub

- (a) ubtlu
- (b) utIub
- (C) tulbu
- (d) butIu

45. h_t_l_tt_lht_m_htt_l

- (a) hmttltm
- (b) tmhmtlm
- (C) lmtmhmt
- (d) mmhtltm

निर्देश: (46-50)

निम्नलिखित शृंखला में प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर क्या आएगा?

46. W-144, ?, S-100, Q-81, 0-64

- (a) U-121
- (b) U-122
- (c) V-121
- (d) V-128

47. 2, A, 9, B, 6, C, 13, D, ?

- (a) 9
- (b) 10
- (c) 12
- (d) 19

48. KM5, IP8, GS11, EV14, ?

- (a) BX17
- (b) BY17
- (c) CY17
- (d) CY18

49. X90D, T135H, P, 180L, L225P, H270T, ?

- (a) E315Y
- (b) D315X
- (c) D325X
- (d) C315X

50. N5V, K7T, ?, E14P, B19N

- (a) H9R
- (b) H10Q
- (c) H10R
- (d) I10R

ANSWER KEY

1. [c]	2. [a]	3. [b]	4. [b]	5. [c]
6. [b]	7. [d]	8. [a]	9. [d]	10. [a]
11. [b]	12. [c]	13. [a]	14. [b]	15. [b]
16. [d]	17. [c]	18. [a]	19. [a]	20. [c]
21. [a]	22. [c]	23. [d]	24. [b]	25. [b]
26. [c]	27. [a]	28. [a]	29. [b]	30. [b]
31. [b]	32. [b]	33. [a]	34. [b]	35. [a]
36. [c]	37. [a]	38. [d]	39. [b]	40. [b]
41. [b]	42. [d]	43. [b]	44. [b]	45. [b]
46. [a]	47. [b]	48. [c]	49. [b]	50. [c]

◆ ◆ ◆ ◆

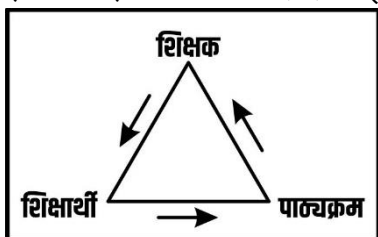


શિક્ષણ અભિક્ષમતા



शिक्षण अधिगम (Teaching Learning):-

- शिक्षण का अर्थ ज्ञान प्रदान करना, कौशल का विकास करना, पाठ पढ़ाना, उन्हें उत्साहित करना आदि है।
- सामान्य अर्थों में शिक्षण का अर्थ अध्यापक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सीखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रुचियों और अभिवृत्ति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।
- शिक्षण एक त्रिस्तरीय प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्त क्रिया होती है।



- सारांश में कहा जा सकता है कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जो सीखने को प्रभावित करती है।
- उसका स्वरूप विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग हो सकता है परंतु उन सभी का उद्देश्य छात्रों को सिखाना होता है।

शिक्षण की संकल्पना (Concept of Teaching)

- शिक्षण विद्यार्थी को कक्षा में सूचनाएँ देने मात्र तक सीमित नहीं होता वरन् इस प्रक्रिया में बच्चे का उद्दीपन, मार्ग दर्शन, दिशानिर्देशन और सीखने के लिए प्रोत्साहन जैसी प्रक्रियाएँ सन्निहित होती हैं।
- उद्दीपन बच्चों को नई चीजें सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है।
- शिक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य एक शैक्षिक सम्प्रेषण है, जो अपने विचारों से एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और अंतः क्रिया की इस प्रक्रिया से कुछ सीखते हैं।
- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बद्ध चरों को किसी पूर्व निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित रूप से संगठित किया जाता है। शिक्षण के समय शिक्षार्थियों में व्यवहारगत परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- शिक्षण की त्रिस्तरीय संकल्पना जॉन ड्यूवी ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया।
- द्विस्तरीय संकल्पना जॉन एडम्स ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी को सम्मिलित किया गया।

शिक्षण की परिभाषाएं (Defination of Teaching) :-

- क्लार्क के अनुसार**, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिये की जाती है, जिससे शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके।"
- स्मिथ के अनुसार**, "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है।"
- बी.एफ. स्कीनर के अनुसार**, "शिक्षण पुनर्बलन की आकस्मिकताओं का क्रम है।"

- एन.एल. गेज के अनुसार**, "शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना।"
- जेम्स. एम. थाइन**, "समस्त शिक्षण का अर्थ है सीखने में वृद्धि करना।"
- डॉ. एन.एन. मुखर्जी** के अनुसार, "शिक्षण कार्य प्रत्येक व्यक्ति के चाय के प्याले के समान नहीं है, यह तो कला और विज्ञान है।"
- शिक्षण एक ऐसा कार्य है, जिसमें कम से कम दो लोगों की आवश्यकता होती है तथा इन दोनों के बीच विचारों/विषय-वस्तु का आदान-प्रदान होता है, इसलिए शिक्षण एक प्रक्रिया के रूप में माना जाता है।
- मॉरीस के अनुसार**, "शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक अधिक परिपक्व व्यक्ति अन्तः संबंधों के द्वारा एक कम परिपक्व व्यक्ति को सिखाता है।"
- जैक्सन** के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक परिपक्व व्यक्ति (शिक्षक) एक अपरिपक्व व्यक्ति (शिक्षार्थी) को अन्तःक्रिया के द्वारा शिक्षा प्रदान करता है।"
- B.O. स्मिथ** - "शिक्षण क्रियाओं की एक विधि है जो सीखने की उत्सुकता जाग्रत करती है।"
- गेज** - "शिक्षण का उद्देश्य दूसरों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। इसमें पारस्परिक प्रभाव शक्ति होती है जिसमें दूसरों के व्यावहारिक क्षमता के विकास का लक्ष्य होता है।"
- रायबर्न** - "शिक्षण छात्रों को उनकी शक्तियों के विकास में योगदान देता है।"
- बर्टन** - "शिक्षण अधिगम हेतु उद्दीपन मार्ग प्रदर्शन व दिशा बोध है।"

शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching):-

- शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्य वस्तु के मध्य परस्पर अंतःक्रिया होती है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
- ब्लूम के अनुसार**, "शैक्षिक उद्देश्य केवल यह लक्ष्य नहीं है जिनके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है और मार्गदर्शन किया जाता है, बल्कि वह लक्ष्य भी है जो शिक्षा हेतु अनिवार्य प्रविधियों के निर्माण तथा उपयोग हेतु विस्तृत विनिर्देश भी देते हैं।"

शिक्षण द्विमुखी प्रक्रिया-

- एडम्स ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना है।
- इस प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र दो व्यक्ति शामिल होते हैं।
- यह एक इस प्रकार की प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विकास में बदलाव के लिए कार्य करता है।

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया-

- जॉन डी.वी. और रायबर्न के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया त्रिमुखी है।
- वर्तमान परिवेश में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विषयवस्तु के रूप में शिक्षण प्रक्रिया के तीन सोपान हैं।
- वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी मानवीय संसाधन के रूप में तथा विषयवस्तु का उपयोग भौतिक संसाधन के रूप में होता है।

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching) :-

- ◆ **शिक्षण एक उपचार विधि है** - शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों का निदान करके उन्हें सुधार के लिए उपचार बताया जाता है।
- ◆ **शिक्षण एक त्रिधुवीय प्रक्रिया है**- शिक्षण की त्रिधुवीय प्रक्रिया में ब्लूम ने शिक्षण के तीन पक्ष बताये हैं।
 - i. शिक्षण उद्देश्य
 - ii. सीखने के अनुभव
 - iii. व्यवहार परिवर्तन
- ◆ **शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है**- शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक तथा छात्र आमने-सामने बैठते हैं।
- ◆ **शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है**- शिक्षण प्रक्रिया के तहत बालकों का सर्वांगीण विकास होता है।
- ◆ शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
- ◆ शिक्षण एक उद्देश्य (सोद्देश्य) प्रक्रिया है।
- ◆ शिक्षण का मापन किया जाता है।
- ◆ शिक्षण एक अंतःप्रक्रिया है।
- ◆ शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों ही है।
- ◆ यह एक अन्तः क्रिया है।
- ◆ यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
- ◆ यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- ◆ यह एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।
- ◆ यह एक उपचार विधि है।
 - ◆ यह व्यावसायिक प्रक्रिया है।
 - ◆ यह एक तार्किक क्रिया है।
 - ◆ इसका मापन किया जाता है।
 - ◆ इसमें सुधार तथा विकास किया जाता है।
 - ◆ यह एक निर्देशन की प्रक्रिया है।
 - ◆ यह एक औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रिया है।
 - ◆ यह पथ-प्रदर्शन है।
 - ◆ यह संवेगों का प्रशिक्षण है।

शिक्षण अधिगम के सोपान

- ◆ शिक्षण अधिगम के चार सोपान हैं-
- 1. नियोजन**
 - ◆ इसमें पाठ्यवस्तु विश्लेषण, कार्य विश्लेषण, उद्देश्यों का निर्धारण व उनको लिखना आदि क्रियाएँ की जाती हैं।
- 2. व्यवस्था**
 - ◆ इसमें शिक्षण विधि का चयन, विषयवस्तु, श्रव्य-दृश्य सामग्री, सम्प्रेषण युक्तियों की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण किया जाता है।
- 3. मार्गदर्शन**
 - ◆ शिक्षक छात्रों को प्रेरित करता है।
- 4. नियंत्रण**
 - ◆ शिक्षण व अधिगम की सफलता को जाँचना, पुनः योजना बनाना और मूल्यांकन करना।

शिक्षण के चर (Variables of Teaching):-

- ◆ चर किसी भी विषय-वस्तु से संबंधित वे घटक (Component) होते हैं जो प्रभावित करते हैं या प्रभावित होते हैं।
- ◆ शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रकार से चरों का अध्ययन किया जाता है जो निम्नलिखित हैं-
- 1. स्वतंत्र चर (Independent Variable)**
 - ◆ शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतंत्र चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था नियोजन तथा परिचालन का कार्य करता है।
- 2. आश्रित चर (Dependent Variable)**
 - ◆ शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी को आश्रित चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षार्थी को शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा परिचालन के अनुरूप ही क्रियाशील रहना पड़ता है।
- 3. हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर (Intervening Variable)**
 - ◆ शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर वे चर हैं जो स्वतंत्र तथा आश्रित चर के मध्य सक्रिय होते हैं।
 - ◆ यह पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीकें आदि हैं। ये चर मिलकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण करते हैं।

शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching):-

- ◆ शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण का विभाजन भी कई प्रकार से किया जाता है।
- ◆ शिक्षण विभाजन का आधार निम्नलिखित है-
- 1. शिक्षण क्रियाओं की दृष्टि से -**
 - ◆ शिक्षण में अनेक प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। उन सभी क्रियाओं को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं-
 - i. प्रस्तुतीकरण
 - ii. प्रदर्शन
 - iii. कार्य।
- 2. शिक्षण के उद्देश्यों की दृष्टि से**
 - ◆ शिक्षण के निम्नलिखित तीन उद्देश्य हैं-
 - i. ज्ञानात्मक
 - ii. भावात्मक
 - iii. क्रियात्मक
- 3. शिक्षण के स्तरों की दृष्टि से -**
 - ◆ शिक्षण को निम्नलिखित तीन स्तरों में विभाजित किया गया है-



स्मृति स्तर

- ◆ शिक्षण के स्मृति स्तर के प्रवर्तक हरबर्ट स्पेन्सर थे।
- ◆ इसमें शिक्षण अधिगम मात्र स्मृति के सहारे टिका रहता है।
- ◆ छात्रों के सामने तथ्यों, सूचनाओं, नियमों तथा सूत्रों आदि के रूप में जो भी ज्ञान दिया जाता है, छात्र उसे केवल रटकर अपने ज्ञान भण्डार में वृद्धि करते रहते हैं।

- ◆ स्मृति स्तर के शिक्षण में अध्यापक की भूमिका प्रधान होती है और विद्यार्थी की गौण।
- ◆ इसमें अध्यापक छात्रों की रुचि, क्षमताओं तथा योग्यता आदि पर ध्यान दिए बिना शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण करता है।

बोध स्तर का शिक्षण

- ◆ शिक्षण के बोध स्तर के प्रवर्तक मॉरीसन थे।
- ◆ इस शिक्षण में विद्यार्थी अपनी बुद्धि और विचार प्रक्रिया का समुचित प्रयोग करने तथा विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों का उपयोग करने एवं विकसित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

चिंतन स्तर का शिक्षण

- ◆ इसके प्रवर्तक हण्ट थे।
- ◆ स्मृति स्तर तथा बोध स्तर के शिक्षण से जब छात्रों में आवश्यक समझ तथा सूझबूझ विकसित हो जाती है, तब आगे का शिक्षण मार्ग चिंतन स्तर के शिक्षण द्वारा तय किया जाता है।

स्तर के आधार पर शिक्षण के प्रतिमान

- 1. स्मृति स्तर** – हरबर्ट की पंच पदीय प्रणाली।
 - ◆ प्रस्तावना व तैयारी तथा उद्देश्य कथन।
 - ◆ प्रस्तुतीकरण
 - ◆ तुलना व संबंध
 - ◆ सामान्यीकरण
 - ◆ प्रयोग
- 2. बोध स्तर** – मॉरीसन
 - ◆ अन्वेषण
 - ◆ प्रस्तुतीकरण
 - ◆ आत्मीकरण
 - ◆ व्यवस्था या संगठन
 - ◆ वर्णन
- 3. चिंतन स्तर** – हण्ट
 - ◆ छात्रों के सामने समस्या – परिस्थिति उत्पन्न करना।
 - ◆ छात्रों द्वारा उपकल्पना का निर्माण करना।
 - ◆ उपकल्पना पुष्टि के लिए सूझ, चिंतन, मनन का प्रयोग करना।
 - ◆ उपकल्पना का परीक्षण तथा समस्या समाधान।

शिक्षण स्तर का क्रम

- ◆ स्मृति स्तर → बोध स्तर → चिंतन स्तर

शिक्षण विधियाँ :-

- ◆ शिक्षण को रोचक, बोधगम्य, प्रभावी एवं सरल बनाने के लिए एक अध्यापक द्वारा काम में ली जाने वाली तकनीकें शिक्षण विधियाँ कहलाती हैं। कक्षा-कक्ष में होने वाली अंतःप्रक्रिया इसमें आती है।
- ◆ शिक्षक जब अपनी विषयवस्तु को संगठनात्मक रूप से बालकों तक प्रेषित करता है, तो एक विवेकपूर्ण एवं उद्देश्य आधारित व्यवहार के माध्यम से अपने कार्य को आगे बढ़ाते हुए बालक के संपूर्ण अधिगम तक पहुँचता है, इसी व्यवहार को शिक्षण विधि कहते हैं।
- ◆ शिक्षण विधि वह महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके सहयोग से शिक्षक के कार्य आगे बढ़ते हैं और बालकों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होते हैं।

- ◆ शिक्षण विधि वह साधन रूपी कार्य है, जिसमें एक शिक्षक विषयवस्तु को संगठित करते हुए विवेकपूर्ण तरीके से बालकों तक प्रेषित करता है तथा यह उसके उद्देश्य की पूर्ति में मदद करती है।

शिक्षण विधियों की परिभाषाएँ :-

- ◆ **बाइनिंग एण्ड बाइनिंग के अनुसार-** "शिक्षण पद्धति शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।"
- ◆ **वैस्ले के अनुसार-** "शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।"
- ◆ **जॉन डी.वी-** "पद्धति वह तरीका है, जिसके द्वारा हम लोग विषयवस्तु को संगठित कर निष्कर्षों की प्राप्ति करते हैं।"
- ◆ **बाईनिंग-** "शिक्षण विधि शैक्षिक प्रक्रिया का गतिशील कार्य है।"
- ◆ **डॉ. सरोज सक्सेना-** "शिक्षण विधि वह माध्यम है, जिसके द्वारा शिक्षण अपनी विषयवस्तु को बालकों तक प्रेषित कर उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग करती है।"
- ◆ **एस.के. कोचर के अनुसार विधि-** जिस प्रकार से एक सैनिक को सभी अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान होता है, उसी प्रकार से एक शिक्षक को भी सभी विधियों का ज्ञान होना चाहिए, यह उसके विवेक, बुद्धि पर निर्भर करता है कि वह कौन-सी विधि अपनाएगा।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार विधि-

- ◆ "सर्वश्रेष्ठ पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या भी तब तक मृतप्राय है, जब तक कि उसके लिए कोई श्रेष्ठ शिक्षक एवं शिक्षक के पास विधि का अभाव है।"
- ◆ विधि शिक्षण प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है तथा एक शिक्षक की सफलता इसी पर निर्भर होती है।

शिक्षण विधियों के प्रकार :-

- ◆ शिक्षण विधियों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं-
 1. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ
 2. बाल केन्द्रित विधियाँ
- 1. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ (Teacher-centered methods)-**
 - ◆ यह वर्णनात्मक प्रकार की होती है।
 - ◆ इसमें शिक्षक मुख्य होता है तथा विद्यार्थी गौण होता है।
 - ◆ इसमें शिक्षक सक्रिय होता है और विद्यार्थी निष्क्रिय यानी श्रोता होता है।
 - ◆ इनमें केवल मौखिक सम्प्रेषण होता है।
 - ◆ इसमें विद्यार्थी के विचार, सृजनात्मकता के लिए स्थान नहीं होता है।
- i. व्याख्यान विधि -**
 - ◆ इस विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जाता है।
 - ◆ इसमें शिक्षक विषय विशेष पर व्याख्यान देता है।
 - ◆ इस विधि में बालक निष्क्रिय श्रोता बनकर सुनता है।
 - ◆ इस विधि का लाभ यह है कि बड़े समूह के शिक्षण में उपयोगी है और विषय का तार्किक क्रम बना रहता है।
 - ◆ इस विधि का दोष यह है कि छात्र निष्क्रिय रहते हैं क्योंकि इसमें केवल शिक्षक सक्रिय रहता है।

ii. प्रदर्शन विधि

- ◆ इसमें शिक्षक व छात्र दोनों सक्रिय रहते हैं।
- ◆ यह विधि छोटी कक्षाओं में उपयोगी है।
- ◆ इस विधि में छात्र देखकर सीखता है जिससे उसमें निरीक्षण, तर्क व विचार शक्ति का भी विकास होता है।

iii. पाठ्यपुस्तक विधि

- ◆ यह शिक्षा में सबसे अधिक प्रचलित विधि है।
- ◆ इस विधि के प्रयोग से हिन्दी की पाठ्यवस्तु, विभिन्न विधाओं, इतिहास तथा शब्दावली आदि का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।
- ◆ अध्याय समझ में नहीं आता है तो विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की सहायता से उसे समझ सकते हैं।

iv. कहानी विधि

- ◆ इसमें विद्यार्थी के सामने कहानी के प्रस्तुत करके अधिक से अधिक बात ग्रहण करवाई जाती है।
- ◆ अधिक ग्रहण करवाना मौखिक कहानी-कथन द्वारा ही सम्भव होता है।

विशेषताएँ :-

- ◆ इसमें शिक्षक मुख्य भूमिका में होता है तथा विद्यार्थी गौण होता है।
- ◆ अध्यापक सक्रिय रहता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता होता है।
- ◆ यह वर्णनात्मक प्रकार की होती है।
- ◆ इसके द्वारा शिक्षण में औपचारिकता की मात्रा अधिक अर्थात् केवल मौखिक सम्प्रेषण होता है।
- ◆ इसके द्वारा स्मृति स्तर व पुनः स्मरण पर ध्यान देते हुए विद्यार्थियों को ज्ञानात्मक स्तर का ही ज्ञान दिया जाता है।
- ◆ शिक्षक केन्द्रित विधियों की प्रमुख कमी यह है कि इसमें विद्यार्थियों के विचारों और सृजनात्मकता आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

2. बाल केन्द्रित विधियाँ (Child-centered method)-
i. डैकाली प्रणाली

- ◆ इस विधि के प्रवर्तक डैकाली थे।
- ◆ यह विधि मानसिक रूप से विकृत बालकों के लिए प्रयोग में ली जाती है।
- ◆ इस विधि में पुस्तकों का कम से कम प्रयोग किया जाता है।
- ◆ इस पद्धति में भाषा, संगीत की शिक्षा एवं खेल आदि प्रक्रिया है।

ii. मॉण्टेसरी प्रणाली

- ◆ इस विधि की प्रवर्तक डॉ. मारिया मॉण्टेसरी हैं।
- ◆ यह विधि प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा के विकास पर बल देती है।
- ◆ इसमें बालकों के स्वतंत्र शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण व ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल दिया है।

iii. विनेटिका योजना

- ◆ इसके प्रवर्तक कार्लटन वाशबर्न हैं।
- ◆ इसमें व्यक्तिगत विभिन्नता पर बल दिया जाता है।
- ◆ इस विधि में उच्चारण नहीं करवाया जाता है।

iv. डॉल्टन योजना

- ◆ इस विधि की प्रवर्तक कुमारी हेलेन पार्कहर्स्ट हैं।
- ◆ इस विधि को डॉल्टन विधि इसलिए कहा जाता है क्योंकि पार्कहर्स्ट ने अमेरिका के डॉल्टन नामक नगर में सर्वप्रथम इस विधि का प्रयोग किया था।

- ◆ इस विधि में अध्यापक का कार्य केवल मार्गदर्शन देना होता है।
- ◆ इस विधि में छात्र स्वतंत्र रूप से स्वयं शिक्षा ग्रहण करता है।
- ◆ इस विधि में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से विभिन्न विषयों की प्रयोगशालाओं में जाकर कार्य करते हैं।
- ◆ इस विधि में मौखिक भाषा का विकास नहीं हो पाता।

v. बेसिक शिक्षा

- ◆ इस विधि में महात्मा गाँधी के द्वारा बताया गया।
- ◆ इस विधि में मातृभाषा को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- ◆ इसमें कार्य से संबंधित शब्दावली का अधिक से अधिक प्रयोग अपने सामान्य बोलचाल की भाषा में किया जाता है जिससे बालक उस विशिष्ट कार्य की शब्दावली से परिचित हो जाता है।

vi. किण्डर गार्टन पद्धति

- ◆ इस विधि को फ्रोबेल ने विकसित किया।
- ◆ वे बालकों को पौधे के समान मानते थे।
- ◆ यह विधि छोटे बालकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है।
- ◆ इसमें बालकों को खेल द्वारा शिक्षण करवाया जाता है।
- ◆ इस विधि में बालकों को स्व-अभिव्यक्ति अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।
- ◆ इसमें गीत एवं अभिनय आदि का प्रयोग किया जाता है।

विशेषताएँ :-

- ◆ इन विधियों में शिक्षण के केन्द्र में बालक होता है तथा अध्यापक मार्गदर्शक की भूमिका में होता है।
- ◆ इन विधियों से करके सीखा जाता है। (करके सीखने के सिद्धांत पर आधारित)
- ◆ इसमें बालक की आवश्यकताओं, रुचि, स्तर, सृजनात्मकता आदि को ध्यान में रखा जाता है।
- ◆ इसमें बालक को स्वतंत्रतापूर्वक सीखने दिया जाता है।

लेखन शिक्षण विधियाँ :-
1. जेकटॉट विधि :-

- ◆ इसमें विद्यार्थी स्वयं अपनी गलतियों को सुधारते हैं।

2. पेस्टोलॉजी विधि :-

- ◆ सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान करवाया जाता है तथा पहले उन वर्णों को सीखाया जाता है जो सरल है।

3. श्रुति लेखन तथा स्वतंत्र अनुकरण विधि :-

- ◆ यह विधि अक्षरों व शब्दों को सीखने के बाद की विधि है। इसमें छात्र को शुद्ध लिखना सिखाया जाता है।

शिक्षण विधियों की विशेषताएँ

- ◆ शिक्षण विधियाँ शिक्षक के व्यवहार को प्रभावित करती हैं।
- ◆ शिक्षण विधियाँ उद्देश्यों से संबंधित होती हैं।
- ◆ शिक्षण विधियाँ यह निर्धारित करती हैं कि शिक्षक किसी परिस्थिति विशेष में कैसा व्यवहार करता है।
- ◆ शिक्षण युक्तियाँ व शिक्षण विधियाँ, व्यूह रचना में शामिल रहती हैं।
- ◆ शिक्षण कार्य कला तथा विज्ञान दोनों हैं।
- ◆ बालकेन्द्रित शिक्षा को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षक को शिक्षण विधि का चयन करते समय निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए-

- ◆ शिक्षण विधि करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षण विधि, शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षण विधि प्रभावी होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षक को विद्यार्थियों को रटने से दूर करने वाली विधि होनी चाहिए।
- ◆ इस प्रकार की शिक्षण विधि होनी चाहिए जिसे आसानी से प्रयोग में लाया जा सके।
- ◆ शिक्षण विधि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने वाली होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षण विधि कम समय खर्च करने वाली होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षण विधि शिक्षण सहायक सामग्री के माध्यम से सरल व स्पष्टता होनी चाहिए।
- ◆ शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को आत्मविश्वास से शिक्षण प्रक्रिया में भाग लेना चाहिए।
- ◆ शिक्षण विधि विद्यार्थी की योग्यता, स्तर, रुचि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली होनी चाहिए।

शिक्षण सूत्र-

- ◆ प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों के सामने जो समस्याएँ आयी तथा जिन समस्याओं के निवारण में उन्होंने जो उपाय काम में लिए उनके उन्हीं सार्थक अनुभवों को प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **कॉमेनियस, पेस्टोलॉजी, फ्रॉबेल, जॉन डी.वी., किलपैट्रिक** आदि ने संगठित करके वर्तमान शिक्षण उपागम के रूप में प्रस्तुत किया, जिन्हें **शिक्षण सूत्र** कहते हैं।

प्रमुख शिक्षण सूत्र-

- ◆ सरल से कठिन की ओर
- ◆ ज्ञात से अज्ञात की ओर
- ◆ विशिष्ट से सामान्य की ओर
- ◆ पूर्ण से अंश की ओर (स्थूल से सूक्ष्म की ओर)
- ◆ समीप से दूरी की ओर
- ◆ अनिश्चित से निश्चित की ओर
- ◆ प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर (मूर्त से अमूर्त की ओर)
- ◆ विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
- ◆ उदाहरण से नियम की ओर (आगमन से निगमन की ओर)
- ◆ मनोवैज्ञानिकता से तर्क की ओर

शिक्षण सिद्धांत

1. रुचि का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक बालकों में विषयवस्तु के प्रति रुचि को पैदा करे क्योंकि बालक में जितनी अधिक रुचि होगी वह उतना ही मानसिक रूप से सकारात्मक होकर सीखने का प्रयास करेगा।

2. प्रेरणा का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षण कार्य करते समय एक शिक्षक बालकों में प्रेरित वातावरण पैदा करे, क्योंकि जितनी प्रेरणा प्रदान करेगा बालक उतना ही सीखने के प्रति सकारात्मक होगा।

- ◆ स्कीनर ने अभिप्रेरणा को अधिगम का सर्वोच्च राजमार्ग बताया है इसलिए प्रेरित वातावरण कक्षा-कक्ष में सकारात्मक अधिगम के लिए अनिवार्य है।

3. उद्देश्य पूर्ति का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक-शिक्षार्थी दोनों को अपने-अपने उद्देश्यों का पता होना चाहिये।
- ◆ इसके अभाव में आवश्यक सकारात्मक परिणामों की प्राप्ति संभव नहीं है।

4. नियोजन का सिद्धांत-

- ◆ जब एक शिक्षक शिक्षण करने से पूर्व अपने संपूर्ण शिक्षण कार्य को नियोजित करने के लिए हरबर्ट की पंचपदी के आधार पर पाठयोजना का निर्माण करता है, जिसमें क्रमशः- इकाई, वार्षिक, दैनिक पाठ योजना बनायी जाती है।

5. विषयवस्तु का सिद्धांत-

- ◆ इसमें एक शिक्षक शिक्षण कार्य करने से पूर्ण स्वयं अध्ययन करता है और अपने मस्तिष्क में तय कर लेता है कि क्या?, कितना?, कैसे? पढ़ाना है, तो वह व्यक्ति कक्षा-कक्ष में निश्चित रूप से सफल होता है।

6. सह-सम्बद्धता का सिद्धांत-

- ◆ किसी भी एक विषय की विषयवस्तु को पढ़ाते समय दूसरे विषय से जोड़कर बताने से विषयवस्तु के प्रति बालकों में रुचि पैदा होती है और उनके अधिगम की मात्रा भी प्रभावित होती है।

7. आनन्द सिद्धांत-

- ◆ एक शिक्षक को शिक्षण कार्य करते समय इस प्रकार से प्रयास करने चाहिये कि बालक आनन्द के साथ सीखता रहे व प्रतिदिन सकारात्मक भाव के साथ में उत्साहित रहे।

8. आवृत्ति का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षण को बालकों को भिन्न-भिन्न प्रकार से स्पष्ट करते हुए या बार-बार आवृत्ति करते हुए सिखाने का प्रयास करना जिससे निश्चित रूप से सभी श्रेणियों के बालक विषय-वस्तु को समझ पाते हैं। साथ ही अपने बालकों को भी बार - बार अभ्यास करने के लिए प्रेरित करे।

9. लोचशीलता का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षण कार्य के दौरान एवं कक्षागत गतिविधियों में शिक्षक लोचशीलता पूर्ण व्यवहार न सिर्फ बालकों के लिए अच्छा होता है, बल्कि शिक्षक के लिए भी सकारात्मकता को जन्म देता है।

10. क्रियाशीलता का सिद्धांत-

- ◆ शिक्षक कार्य के दौरान बालकों को ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रखना और शिक्षण से संबंधित गतिविधियों में व्यवहार कुशलता पैदा करना।

- ◆ यह **जॉन डी.वी. के 'करके सीखो' सिद्धांत** का अनुसरण है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- ◆ शिक्षा में मुख्य परिवर्तन शिक्षक केंद्रित से छात्र केंद्रित होता है।
- ◆ शिक्षण प्रक्रम के अंग - शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम।
- ◆ कक्षा-कक्ष शिक्षण संवादमूलक होना चाहिए।
- ◆ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा प्रभावी बनाया जाता है।

- ◆ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के पदों को समझने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है।
- ◆ कक्षा-कक्ष की अन्तःक्रिया के द्वारा कक्षा-कक्ष के शिक्षण को प्रभावी बनाकर बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान ही उत्तरदायी है।
- ◆ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में केंद्र बिंदु - छात्र।
- ◆ शिक्षण कौशल - शिक्षक व्यवहार।

शिक्षण की गुणवत्ता -

- ◆ किसी भी स्तर पर शिक्षण की गुणवत्ता छात्रों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों की गुणवत्ता प्रदर्शित है।
- ◆ पठन द्वारा बोध हुआ कि नहीं, यह विद्यार्थियों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ

- ◆ शिक्षण नियोजित होना चाहिए।
- ◆ इसमें क्रियाशीलता के अवसर उपलब्ध होने चाहिए।
- ◆ शिक्षक व छात्र दोनों प्रश्न-उत्तर करें।
- ◆ शिक्षण बालक की रुचि पर आधारित होना चाहिए।
- ◆ शिक्षण वर्तमान और आगामी तैयारी प्रदान करें।
- ◆ शिक्षण सहयोग पर आधारित व वातावरण के अनुकूलन होना चाहिए।
- ◆ शिक्षक दार्शनिक, मित्र व निर्देशक के रूप में है।
- ◆ शिक्षण निदानात्मक उपचारात्मक होना चाहिए।
- ◆ शिक्षण पूर्व ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।
- ◆ शिक्षण अभिप्रेरणा से युक्त होना चाहिए।
- ◆ छात्र शिक्षक संबंध मधुर हो।
- ◆ शिक्षण प्रगतिशील हो।

शिक्षण की प्रक्रिया-

- ◆ शिक्षण की प्रक्रिया द्वारा क्रमबद्ध विकास किया जाता है। शिक्षण की विशेषता यह है कि इसमें शिक्षण-क्रियाएँ की जाती हैं।
- ◆ शिक्षण को त्रिपक्षी प्रक्रिया कहते हैं।
- ◆ इन शिक्षण-क्रियाओं के तीन पक्ष हैं-

i. शिक्षण में संकेत एवं चिह्न

- ◆ पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने में संकेत एवं चिह्न शिक्षण को प्रभावशाली बनाते हैं।
- ◆ संकेत एवं चिह्न मूल्यांकन को भी सुगम बनाते हैं।

ii. शिक्षण भाषा-विज्ञान की प्रक्रिया के रूप में

- ◆ भाषा के अभाव में छात्र एवं शिक्षक में अन्तःक्रिया नहीं हो सकती है।
- ◆ शिक्षण के स्वरूप में भाषा का प्रमुख स्थान होता है।
- ◆ शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक चिह्न तथा संकेतों की सहायता से अनुदेशन भी करता है।
- ◆ भाषा के उपयोग से शिक्षक निर्देशन देता है और व्याख्या करता है।
- ◆ शिक्षक घटनाओं का वर्णन करता है और कथनों की व्याख्या करता है।

iii. शिक्षण का तर्क

- ◆ शिक्षक के लिए तर्क बहुत अधिक उपयोगी होते हैं।

- ◆ पाठ्यवस्तु के तत्त्वों को यदि क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाए तो शिक्षक तर्कपूर्ण ढंग से शिक्षण करवा सकता है।

क्रमबद्ध रूप

- (a) शिक्षण लक्ष्यों को सूत्रबद्ध करना।
- (b) वर्तमान ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ना।
- (c) शिक्षण सहायक सामग्री का प्रस्तुतीकरण।
- (d) मूल्यांकन करना।
- (e) पुनः शिक्षण

शिक्षण व्यूह रचना-

- ◆ शिक्षक द्वारा की गई ऐसी कौशलपूर्ण व्यवस्था, जो विद्यार्थियों में उद्देश्यों के अनुसार व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए की जाती है, शिक्षण व्यूह रचना है।
- ◆ शिक्षण व्यूह रचनाएँ वह योजना होती हैं जिसमें शिक्षण के उद्देश्यों, विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन, पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, कार्य विश्लेषण, अधिगम अनुभव तथा छात्रों की पृष्ठभूमि आदि को विशेष महत्ता दी जाती है।

शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक :-

वातावरण का प्रभाव

- ◆ कक्षा कक्ष का वातावरण जिस प्रकार का होता है उसी के अनुरूप शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।
- ◆ वातावरण के उचित निर्माण के अभाव में शिक्षक शिक्षार्थियों की शिक्षण के प्रति रुचि विकसित करने में असफल रहता है।

सहायक सामग्री

- ◆ शिक्षक सहायक सामग्री के अभाव में शिक्षण को सरल, बोधगम्य व रुचिकर नहीं बना पाता है।
- ◆ अतः सहायक सामग्री भी शिक्षण को प्रभावित करती है।

शिक्षक की कुशलता

- ◆ यदि शिक्षक कुशल, बालमनोविज्ञान से परिचित है तो यह कक्षा कक्ष के वातावरण का उत्तम निर्माण करके शिक्षार्थियों के अधिगम को आसान बना सकता है।
- ◆ शिक्षक की कुशलता में ही शिक्षण की सफलता है।

नियोजित कार्य

- ◆ यदि शिक्षण कार्य पूर्व में नियोजित करके व्यवस्थित रूप से किया जाये तो बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करने की पूरी संभावनाएं होगी।
- ◆ इसके विपरीत यदि नियोजित ढंग से शिक्षण कार्य नहीं किया जाये तो दिशा विहीन, अव्यवस्थित कार्य के नकारात्मक परिणाम आने की सम्भावनाएँ बन जायेगी।

शिक्षण उद्देश्य

- ◆ शिक्षण के उद्देश्य शिक्षण कार्य को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं क्योंकि यदि शिक्षण उद्देश्य निर्धारित नहीं किये जायेंगे तो शिक्षण का कार्य दिशाहीन हो जायेगा तथा शिक्षण की सफलता संदिग्ध हो जायेगी।

अधिगम (Learning) :-

- ◆ किसी भी शिक्षा प्रणाली में अधिगम का महत्वपूर्ण स्थान है। एक सुव्यवस्थित एवं कुशल शिक्षा प्रणाली में अधिगम प्रभावशाली होना चाहिए।
- ◆ अधिगम या सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें बालक परिपक्वता की ओर आगे बढ़ता है।
- ◆ अधिगम का सामान्य अर्थ है- सीखना, प्रतिदिन होने वाले नए अनुभवों के कारण व्यवहार में आने वाला स्थायी परिवर्तन ही अधिगम है। सीखना विकास की प्रक्रिया है।
- ◆ यह प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है।
- ◆ अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में होने वाला स्थायी परिवर्तन ही अधिगम है।
- ◆ व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
- ◆ व्यवहार में वांछित परिवर्तन ही अधिगम है।
- ◆ परिपक्वता सीखने की गति पर प्रभाव डालती है।
- ◆ सीखने का उद्देश्य ज्ञानोपार्जन व कला का अर्जन है।
- ◆ सीखना एक बहुत ही व्यापक तथा महत्वपूर्ण शब्द है।
- ◆ सामान्य अर्थ में 'सीखना' व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है।

अधिगम की परिभाषाएँ

- ◆ **स्कीनर** - "व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया ही अधिगम है। व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया ही अधिगम है।"
- ◆ **हिलगार्ड** के अनुसार, "नवीन परिस्थितियों में अपने आप को अनुकूलित करना ही अधिगम है।"
- ◆ **वुडवर्थ** के अनुसार, "सीखना विकास की प्रक्रिया है। अनुभवों में वृद्धि ही अधिगम है।"
- ◆ **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार, "आदत, ज्ञान एवं अभिवृत्तियों का अर्जन करना ही अधिगम है।"
- ◆ **गेट्स एवं अन्य** - "प्रशिक्षण एवं अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।"
- ◆ **गिलफोर्ड** के अनुसार "व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।"
- ◆ **मार्गन व किंग** - "अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन सीखना है।"
- ◆ **रिली व लेविस** - "अभ्यास या अनुभूति से व्यवहार में धारण योग्य परिवर्तन सीखना है।"
- ◆ **पील** - "व्यक्ति में परिवर्तन ही अधिगम है, जो वातावरण में परिवर्तन के अनुसरण में होता है।"
- ◆ **डेनियल बैल** - "अधिगम व्यक्ति की शक्तियों तथा वातावरण की अन्तः क्रिया द्वारा सुधार का नाम है।"
- ◆ **हिलगार्ड एवं एटकिन्सन** - "पुराने अनुभवों के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाला स्थायी परिवर्तन अधिगम कहलाता है।"
- ◆ **मॉर्गन, किंग, विस्ज तथा स्कॉपलर** - "अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।"

अधिगम की विशेषताएँ

- ◆ अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है।
- ◆ अधिगम का क्षेत्र बहुत विस्तृत/ व्यापक है।

- ◆ अधिगम जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- ◆ अधिगम मानव के मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार में संशोधन की प्रक्रिया है।
- ◆ सीखना सार्वभौमिक है।
- ◆ अधिगम के द्वारा लक्ष्य की पूर्ति में सहायता मिलती है।
- ◆ अधिगम समायोजन में सहायक होता है।
- ◆ अधिगम एक विवेकपूर्ण प्रक्रिया है।
- ◆ अधिगम में समय लगता है।
- ◆ सीखना वातावरण की उपज और यह व्यवहार में परिवर्तन करना है।
- ◆ सीखना उद्देश्यपूर्ण एवं लक्ष्य निर्देशित होता है।
- ◆ अधिगम अनुमानित प्रक्रिया है, यह निष्पादन से भिन्न है।
- ◆ अधिगम अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है।
- ◆ अधिगम एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानान्तरण है।
- ◆ सीखना सर्वांगीण विकास में सहायक है।
- ◆ सीखना बुद्धि का विकास करना है।
- ◆ अधिगम सक्रिय प्रक्रिया है।
- ◆ सीखना अनुभवों का संगठन है।
- ◆ सीखना एक खोज करना है।
- ◆ अधिगम एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- ◆ अधिगम के द्वारा अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।
- ◆ अधिगम व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

अधिगम के सोपान-

- ◆ 1. अभिप्रेरणा / आवश्यकता
- 2. लक्ष्य
- 3. बाधाएँ
- 4. तत्परता
- 5. वातावरण
- 6. वातावरण के साथ अंतर्क्रिया
- 7. पुनर्बर्लन
- 8. अनुभवों का संघठन
- 9. व्यवहार में स्थायी परिवर्तन
- ◆ इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति में सबसे पहले प्रेरणा जाग्रत होती है और वह लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनुक्रिया करता है।
- ◆ मार्ग में अवधान आने पर उसे हटाने का प्रयास करता है, जिनमें सीखने के क्रिया निहित होती है।
- ◆ आगे बढ़ता हुआ व्यक्ति सभी अनुक्रियाओं करता हुआ अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

अधिगम की संकल्पना (Concept of Learning) :-

- ◆ अधिगम, व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है और उद्दीपन तथा अनुक्रिया की प्रक्रिया द्वारा प्रबलित अभ्यास का परिणाम होता है। अधिगम से होने वाले परिवर्तन सकारात्मक और सक्रिय होते हैं, नकारात्मक तथा निष्क्रिय नहीं होते हैं।
- ◆ अधिगम को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता, किन्तु व्यक्ति के व्यवहार से उसका अनुमान लगाया जा सकता है। जब कोई व्यक्ति पहले किसी काम को नहीं कर पाया परंतु बाद में उसी काम को कर लेता है, तो हम कह सकते हैं (अनुमान लगा सकते हैं) कि उसने वह काम करना सीख लिया है।

- ♦ व्यवहारवादियों ने बताया है कि अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी उद्दीपन के तत्काल बाद तथा बार-बार होने वाले सफल अनुक्रिया के फलस्वरूप उद्दीपन और अनुक्रिया में सम्बन्ध (बंध) स्थापित होते हैं।
- ♦ शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहारवादियों ने उद्देश्यों का ऐसे प्रत्यक्ष व्यवहार के रूप में उल्लेख करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिन्हें देखा और मापा जा सके।
- ♦ सीखने के समय शिक्षार्थियों के व्यवहार में आए परिवर्तनों का निश्चय करने में तथा उनका इस प्रकार शिक्षण करने में कि उनमें वांछित व्यवहार-परिवर्तन आ सके। शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अधिगम-



अधिगम के अनुक्षेत्र-

1. **संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र-** अधिगमकर्ता के संज्ञानात्मक व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है। विभिन्न मानसिक व बौद्धिक क्रियाएँ संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र में आती हैं।
2. **क्रियात्मक अनुक्षेत्र-** अधिगमकर्ता के क्रियात्मक या मनोशारीरिक व्यवहार में परिवर्तन लाना अर्थात् मांसपेशियों की गति व शक्ति में स्पष्टता लाना।
3. **भावात्मक अनुक्षेत्र-** अधिगमकर्ता के भावात्मक व्यवहार में परिवर्तन लाना। व्यवहार से संबंधित विभिन्न क्रियाएँ की जाती हैं।

अधिगम संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण -

1. **व्यवहारवादी दृष्टिकोण** - अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है और वातावरण से सीखता है।
2. **गेस्टाल्टवादी दृष्टिकोण** - अधिगम सम्पूर्ण स्थिति की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया है।
3. **हार्मिक दृष्टिकोण** - अधिगम लक्ष्य केन्द्रित रूप है। इसके प्रतिपादक मैक्डगल है।
4. **क्षेत्रीय दृष्टिकोण** - कुर्ट लेविन के अनुसार अधिगम किसी स्थिति का प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक संगठन है, प्रेरणा कहलाती है।
5. **प्रयत्न व भूल दृष्टिकोण** - थार्नडाइक प्रयत्न व भूल ही सीखना अधिगम है।

अधिगम के प्रकार

1. **ज्ञानात्मक अधिगम (Cognitive Learning)**
 - ♦ सीखने का यह तरीका बौद्धिक विकास तथा ज्ञान अर्जित करने की समस्त क्रियाओं पर प्रयुक्त होता है।
 - ♦ ये क्रियाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं-
- (a) **प्रत्यक्षात्मक सीखना (Preceptual learning)**
 - ♦ जब किसी वस्तु को देखकर, सुनकर या स्पर्श करके इसका ज्ञान प्राप्त किया जाता है तो उसे प्रत्यक्षात्मक सीखना कहते हैं।
 - ♦ शैवावास्था व बाल्यावस्था में इसी प्रकार से सीखा जाता है।
- (b) **प्रत्ययात्मक सीखना (Conceptual learning)-**
 - ♦ जब बालक साधारण ज्ञान या अनुभव प्राप्त कर लेता है तो वह तर्क, चिन्तन और कल्पना के आधार पर सीखने लगता है।
 - ♦ इस प्रकार वह अनेक अमूर्त बातें सीख जाता है, इसी को प्रत्ययात्मक सीखना कहते हैं।
- (c) **साहचर्यात्मक सीखना (Learning with Association)-**
 - ♦ जब पुराने ज्ञान तथा अनुभव के द्वारा किसी तथ्य को सीखा जाता है तो उसे साहचर्यात्मक सीखना कहते हैं।
2. **भावात्मक अधिगम (Affective learning)**
 - ♦ इसका सम्बन्ध न तो ज्ञान प्राप्ति से है और न किसी कौशल से है।
 - ♦ इसका सम्बन्ध बच्चों की कोमल भावनाओं से है।
 - ♦ भावनात्मक अधिगम का उद्देश्य यह है कि बच्चे किसी वस्तु को देखकर, किसी आवाज को सुनकर या किसी लुभावने रंग को निरखकर आनन्द प्राप्त कर सकें।
 - ♦ इसमें यह आवश्यक है कि बच्चों की रुचि का ध्यान रखा जाए।
3. **क्रियात्मक अधिगम (Conative learning)**
 - ♦ इस अधिगम में किसी कला (शिल्प हस्त) में निपुणता प्राप्त की जाती है।
 - ♦ संगीत, नृत्य, मॉडल बनाना, ड्राईंग आदि कौशल इसी के अन्तर्गत आते हैं।

कौशल प्राप्ति के चरण निम्नलिखित हैं-

- ♦ (1) तैयारी (2) उद्देश्य
- ♦ (3) प्रस्तुतीकरण या प्रदर्शन (4) अभ्यास
- ♦ (5) शुद्धिकरण (6) पुनः अभ्यास

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Learning)

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक		
घर से संबंधित Home Factors	विद्यालय से संबंधित School Factors	वातावरण से संबंधित Environmental F...
1. प्रथम गृह माँ के रूप में,	1. शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक,	1. वंशानुक्रम,
2. प्रथम पाठशाला,	2. शिक्षक से सम्बन्धित कारक,	2. वातावरण का प्रभाव,
3. परिवार की मानसिकता,	3. अधिगम प्रक्रिया व व्यवस्था...	3. शिक्षा के साधन,
4. सामाजिक व्यवहार व मूल्यों का विकास	4. विषय-वस्तु या पाठ्यवस्तु...	4. व्यक्तित्व
		5. सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण

1. व्यक्तिगत कारक

i. अभिप्रेरणा-

- ◆ सीखने की प्रक्रिया में प्रेरकों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।
- ◆ अधिगम का प्रारंभ अभिप्रेरणा को माना जाता है।
- ◆ यह अधिगम को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक है।
- ◆ अभिप्रेरणा की सुनहरी सड़क अधिगम को माना जाता है।
- ◆ **स्कीनर-** “अभिप्रेरणा, अधिगम का सर्वश्रेष्ठ राजमार्ग है।”

ii. तत्परता एवं इच्छाशक्ति

- ◆ बालक में सीखने के लिए कितनी इच्छाशक्ति है यह सीखने को प्रभावित करता है।

iii. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य

- ◆ शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य सीखने को प्रभावित करता है, जो बालक सीखने में रुचि लेते हैं वे जल्दी सीखते हैं।

iv. परिपक्वता

- ◆ अधिगमकर्ता की आयु एवं परिपक्वता सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।
- ◆ जो छात्र शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व होते हैं वो जल्दी सीखते हैं एवं सीखने में कठिनाई महसूस नहीं करते हैं।

परिपक्वता व अधिगम में अंतर -

- ◆ अधिगम एक अर्जित प्रक्रिया है जबकि परिपक्वता जन्मजात प्रक्रिया है।
- ◆ परिपक्वता की प्रक्रिया गर्भधारण से प्रारम्भ होकर जन्म के बाद भी चलती है यानी जीवनपर्यंत चलती है जबकि सीखने की प्रक्रिया व्यक्ति द्वारा परिपक्वता के एक स्तर पर पहुँचने के बाद ही होती है।
- ◆ परिपक्वता की प्रक्रिया में अभ्यास का महत्व नहीं होता है जबकि सीखने की प्रक्रिया में अभ्यास एक महत्वपूर्ण कारक है।
- ◆ परिपक्वता एक शारीरिक प्रक्रिया है जबकि अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है।

v. बुद्धिलब्धि (I.Q.)

- ◆ बालक का बुद्धि-लब्धि स्तर अधिगम को प्रभावित करता है।

vii. सीखने का समय व थकान

- ◆ सीखने का समय सीखने की क्रिया को प्रभावित करता है।
- ◆ थकान सीखने को मन्द कर देती है।

viii. पूर्वज्ञान

- ◆ बालक का पूर्वज्ञान वर्तमान सीखने को प्रभावित करता है।

viii. स्मृति

- ◆ स्मृति अधिगम को प्रभावित करती है।

(ix) भोजन व औषधियाँ, ध्यान/अवधान, जीवन उद्देश्य, रुचि व महत्वाकांक्षा आदि भी अधिगम को प्रभावित करती हैं।

2. वातावरण संबंधी कारक-

- ◆ परिवार, विद्यालय और समाज का वातावरण अधिगम को प्रभावित करती है।
- ◆ भौतिक वातावरण (जलवायु), सामाजिक, सांस्कृतिक कारक अधिगम को प्रभावित करती है।
- ◆ समय-सारिणी, मित्र-मण्डली और उपयुक्त शिक्षण परिस्थितियाँ अधिगम को प्रभावित करती हैं।

3. अध्यापक संबंधी कारक -

- ◆ छात्र-शिक्षक संबंध और शिक्षण की विधियाँ अधिगम को प्रभावित करती हैं।
- ◆ अध्यापक की अंतःक्रिया का स्तर अधिगम को प्रभावित करता है।
- ◆ विषय पर पूर्ण अधिकार एवं विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण अधिगम को प्रभावित करता है।
- ◆ शिक्षण कला व कौशल, शिक्षक का व्यवहार व व्यक्तित्व अधिगम को प्रभावित करता है।
- ◆ अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन अधिगम को प्रभावित करता है।

4. विषयवस्तु संबंधी कारक - विषयवस्तु की प्रकृति और रोचकता, लम्बाई एवं विषयवस्तु की उपयोगिता, कठिनाई भी अधिगम को प्रभावित करती है।

अधिगम की प्रक्रिया (स्मिथ के अनुसार) -

- ◆ स्मिथ ने 3 सोपान बताये हैं-

1. **अभिप्रेरक/चालक** - यह व्यवहार को शक्ति प्रदान करने व क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है।
2. **लक्ष्य/उद्देश्य**- यह जितने स्पष्ट होंगे सीखने की अभिलाषा उतनी ही प्रबल होगी।
3. **रूकावट/बाधा/कठिनाई** - यदि यह न हो तो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन व नवीन ज्ञान की आकांक्षा नहीं होगी।

अधिगम की अवस्थाएँ-

- ◆ कोई भी बालक सीखने के दौरान एक समान गति से नहीं सीख पाता है।
- ◆ गेट्स, स्कीनर एवं थॉर्नडाइक के अनुसार सीखने के दौरान बालक में विभिन्न प्रकार की अवस्थाओं का निर्माण होता है, लेकिन ये अवस्थाएँ सार्वभौमिक नहीं होती हैं।
- ◆ बालक सीखते समय अलग-अलग लक्षण प्रकट करता है तथा उसके सीखने में उतार-चढ़ाव आता रहता है इसे ही सीखने की अवस्थाएँ कहते हैं।

अधिगम की अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं-

- i. **प्रारम्भिक अवस्था**- इस अवस्था में बालक अत्यधिक ऊर्जावान होने के कारण तीव्र गति से और अधिक मात्रा में सीखता है।
- ii. **मध्यावस्था** - इस अवस्था में बालक में सीखने की गति मंद और कम हो जाती है।
- iii. **अन्तिम अवस्था** - सीखने के दौरान एक समय ऐसा आता है कि बालक का सीखना चरम सीमा पर पहुँच जाता है और वह सीखना बंद कर देता है।

नोट- सीखने की अवस्थाएँ सार्वभौमिक नहीं होती हैं।

शिक्षण और अधिगम का सम्बन्ध :-

- ◆ शिक्षक द्वारा किसी को सीखने में सहायता करने को शिक्षण कहा जाता है शिक्षक के शिक्षण की गुणवत्ता का शिक्षार्थियों के अधिगम और मूल्य की गुणवत्ता से सीधा संबंध होता है।

शिक्षण तथा अधिगम में संबंध :-

क्र.स.	उद्देश्य	अधिगम	शिक्षण
1.	ज्ञान	संकेत अधिगम उद्दीपन - अनुक्रिया अधिगम	स्मृति स्तर शिक्षण
2.	अवबोध	श्रृंखला अधिगम	अवबोध स्तर शिक्षण
3.	अनुप्रयोग	शाब्दिक साहचर्य अधिगम	
4.	विश्लेषण	बहुभेदीय अधिगम	चिंतन स्तर शिक्षण
5.	संश्लेषण	प्रत्यय अधिगम	
6.	मूल्यांकन	नियम अधिगम समस्या समाधान अधिगम	

शिक्षण एवं अधिगम-

- ♦ प्रायः शिक्षण को अधिगम का अभिन्न अंग माना जाता है। **किलपैट्रिक** ने कहा है कि शिक्षण और अधिगम में यही सम्बन्ध है, जो कि बेचने और खरीदने में हैं।

शिक्षण एवं अधिगम में अंतर:-

क्र.स.	आधार	शिक्षण	अधिगम
1.	क्रिया	शिक्षण एक सामाजिक क्रिया है। इसमें क्रियाओं का समन्वय होता है।	यह व्यक्तिगत क्रिया है।
2.	उद्देश्य	इसका उद्देश्य दूसरों को प्रभावित करना तथा उनके व्यवहार को परिवर्तित करना है।	इसका उद्देश्य निजी हित में नवीन व्यवहार अर्जित करना है।
3.	उपस्थित	शिक्षण में कम से कम दो व्यक्तियों की उपस्थिति अनिवार्य है।	अधिगम व्यक्तिगत प्रक्रिया है। प्रत्येक प्राणी निजी हित में ही सीखता है।
4.	बोध अथवा सूचक	शिक्षण शब्द में कृत्य का बोध होता है जिसमें लगातार लक्ष्य की ओर बढ़ने का आशय रहता है।	अधिगम शब्द निष्पत्ति या सफलता का सूचक होता है।
5.	भाव	शिक्षण शब्द में कुछ देने का भाव होता है।	अधिगम शब्द में लेने का भाव होता है।
6.	पूर्ति	शिक्षण व अधिगम दोनों मिलकर शिक्षण चक्र बनाते हैं।	निरंतर क्रिया के कारण अधिगम की प्राप्ति होती है।

शिक्षण अधिगम व्यूह रचना एवं विधियाँ :-

- ♦ शिक्षक शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षण विधियों के द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त शिक्षण व्यूह रचना का चयन करता है।
- ♦ **स्ट्रेचर के अनुसार**, "शिक्षण व्यूह रचनाएं वे योजनाएं होती हैं जिसमें शिक्षण के उद्देश्यों, विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन, पाठ्य-वस्तु, कार्य विश्लेषण, अधिगम अनुभव तथा छात्रों की पृष्ठभूमि आदि को विशेष महत्ता दी जाती है।"

सूक्ष्म शिक्षण विधि (माइक्रो टीचिंग) :-

- ♦ सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण प्रविधि का विकास स्टेन फोर्ड विश्वविद्यालय में सन् 1963 में **डी. एलेन** व उनके सहयोगियों (एचीसन व राबर्ट ब्रुश) ने किया। इसकी अवधारणा का विकास उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के बाद सर्वप्रथम अमेरिका में हुआ। भारत में सर्वप्रथम प्रयोग 1970 में तथा विकास 1975 के पश्चात् हुआ। सूक्ष्म अध्यापन प्रणाली शिक्षण की वह विधि है जिसके द्वारा छात्राध्यापक किसी शिक्षण कौशल को कम समय (5-10 मिनट) में छोटे समूह को (5-10 बच्चों को) पढ़ाकर अभ्यास किया जा सकता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार शिक्षकों की भूमिका एवं उत्तर दायित्व :-

- ♦ धारा 23 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त शिक्षक निम्नलिखित कर्तव्यों का पालन करेगा-
 1. विद्यालय में उपस्थित होने में नियमितता और समय का पालन।
 2. धारा 29 की उपधारा (2) के उपबंधों के अनुसार पाठ्यक्रम संचालित करना और उसे पूरा करना।
 3. विनिर्दिष्ट समय के भीतर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पूरा करना।
 4. प्रत्येक बालक की शिक्षा ग्रहण करने के सामर्थ्य का निर्धारण करना और तदनुसार यथा अपेक्षित अतिरिक्त शिक्षण, यदि कोई हो, जोड़ना।
 5. माता-पिता और संरक्षकों के साथ नियमित बैठके करना और बालक के बारे में उपस्थिति में नियमितता, शिक्षा ग्रहण करने की सामर्थ्य, शिक्षण में की गई प्रगति और किसी अन्य संसगत जानकारी के बारे में उन्हें अवगत कराना।
 6. ऐसे अन्य कर्तव्यों का पालन करना, जो विहित किए जाएँ। धारा 28 के अनुसार कोई भी शिक्षक प्राइवेट ट्यूशन या शिक्षण कार्य नहीं करेगा।

अभ्यास प्रश्न

1. निर्धारण मापनी द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों का अधिगम औसत निकाला जाता है, क्योंकि-
(a) इससे उनका अधिगम स्तर मापा जा सकता है।
(b) यह आधुनिकतम शिक्षा प्रणाली में उल्लेखित है।
(c) इससे अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन समेकित किया जाता है।
(d) ऐसा करने पर शिक्षक को वेतन प्राप्त होता है।
2. अधिगम की प्रकृति दिखाई देती है-
(a) रटने में (b) प्रक्रिया और उत्पाद में
(c) केवल उत्पाद में (d) केवल प्रक्रिया में
3. प्राथमिक स्तर पर कक्षा अध्यापक प्रणाली, विषय अध्यापक प्रणाली से अधिक उपयुक्त है, क्योंकि-
(a) विभिन्न विषयों का सहसम्बन्ध संभव है।
(b) न्यायसंगत गृहकार्य संभव है।
(c) अधिक अध्यापक-विद्यार्थी सम्पर्क संभव है।
(d) विषय ज्ञान का विशिष्टीकरण संभव है।
4. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पृष्ठपोषण आवश्यक है-
(a) अध्यापक के लिए
(b) विद्यार्थियों के लिए
(c) अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए
(d) कक्षा में क्रमोन्नति के लिए
5. एक बालक का अधिगम निम्नलिखित अधिगम ढाँचे (सैटअप) से सर्वाधिक प्रभावित होता है-
(a) शोर रहित अलग कक्षा
(b) विद्यालय में
(c) भाई-बहनों के साथ
(d) उसके अपने सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचे में
6. बालक के अधिगम के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी क्रिया सर्वाधिक योगदान देती है?
(a) देखकर सीखना (b) याद करके सीखना
(c) सुनकर सीखना (d) करके सीखना
7. प्राथमिक स्तर पर शिक्षण की सर्वोत्तम विधि कौन-सी है?
(a) व्याख्यान विधि (c) परियोजना विधि
(b) खेल विधि (d) प्रदर्शन विधि
8. छात्रों के अधिकारिता अधिगम को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक है-
(a) अधिगम हेतु समय
(b) अनुदेशन की गुणवत्ता
(c) छात्रों की लेखन गति
(d) विशिष्ट प्रकार के अधिगम के प्रति अभिक्षमता
9. विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ाने वाला वैकल्पिक चर है-
(a) बुद्धि (b) वातावरण
(c) शिक्षण गुणवत्ता (d) समय
10. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान पुनर्बलन छात्रों के अधिगम पर धनात्मक प्रभाव डालता है-
(a) हमेशा (b) अधिकांशतया
(c) कभी-कभी (d) कह नहीं सकते
11. अभिवृद्धि का आशय है-
(a) किसी वस्तु को स्वीकारना अथवा अस्वीकारना
(b) किसी वस्तु को न तो स्वीकारना अथवा न ही अस्वीकारना
(c) किसी वस्तु को पूर्ण रूप से स्वीकारना अथवा कुछ रूप से अस्वीकारना
(d) किसी वस्तु को केवल स्वीकारना
12. शिक्षण प्रक्रिया में स्वतंत्र चर की संज्ञा किसे दी गई है?
(a) शिक्षक को (b) शिक्षार्थी को
(c) शिक्षक व शिक्षार्थी को (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
13. "व्यवहार के कारण, व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।" यह कथन किसका है?
(a) गिलफोर्ड का (b) स्किनर का
(c) क्रो एवं क्रो का (d) गेट्स का
14. 'अधिगम' की प्रकृति के विषय में कौन-सा कथन असत्य है?
(a) अधिगम एक विकास की प्रक्रिया है।
(b) अधिगम एक समायोजन की प्रक्रिया है।
(c) अधिगम केवल एक सकारात्मक प्रक्रिया है।
(d) अधिगम मानव की एक प्रकृति है।
15. शिक्षण के विषय में कौन-सा कथन असत्य है?
(a) शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है।
(b) शिक्षण का मापन नहीं किया जा सकता है।
(c) शिक्षण कला एवं विज्ञान दोनों है।
(d) शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
16. विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है-
(a) बच्चों का सर्वांगीण विकास
(b) पाठ्यचर्या में अभिरुचि का विकास
(c) विद्यालय के वातावरण को आकर्षक बनाना
(d) अभिभावक-शिक्षक संबंध सशक्त बनाना
17. 'जीवन कौशल लोगों को और विकसित करने में सहायक होता है।' व्यवहार को -
(a) अनुकूलनीय और समायोजित
(b) भावुक और स्थिर
(c) अनुकूलनीय और सामाजिक
(d) अनुकूलनीय और सकारात्मक
18. प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य है-
(a) आर्थिक विकास (b) सभ्यता का विकास
(c) साक्षरता (d) राष्ट्र का विकास
19. शिक्षण प्रक्रिया में शामिल है-
(a) शिक्षक व शिक्षार्थी (b) शिक्षक व पाठ्यक्रम
(c) पाठ्यक्रम व शिक्षार्थी (d) शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम
20. शिक्षण की त्रि-स्तरीय प्रक्रिया के प्रवर्तक है-
(a) किलपैट्रिक (b) जॉन डीवी
(c) ब्लूम (d) स्मिथ
21. अधिगम में वृद्धि की जा सकती है-
(a) प्रोत्साहन देकर (c) विदेशों में भेजकर
(b) विटामिन देकर (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

- 22. अधिगम एक -**
 (a) सतत् प्रक्रिया है।
 (b) सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
 (c) व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया है।
 (d) उपर्युक्त सभी
- 23. उद्देश्य एवं अधिगम अनुभव, दोनों मिलकर बालकों में क्या व्यावहारिक परिवर्तन करते हैं। यह संकेत जिससे प्राप्त होता है-**
 (a) सहायक-सामग्री (b) मूल्यांकन
 (c) अध्यापन-विधियाँ (d) उपर्युक्त सभी
- 24. यदि शिक्षक कक्षा में शिक्षण के समय कोई गंभीर त्रुटि कर जाता है, तो उसे निम्नलिखित कार्य करना चाहिए-**
 (a) वह अपनी त्रुटि को तुरंत स्वीकार कर ले।
 (b) वह उसे भुलाने का प्रयास करें।
 (c) त्रुटि करें और भूल जाए।
 (d) उसके प्रति अज्ञान बन जाए।
- 25. शिक्षा का श्रेष्ठ गुण है-**
 (a) चरित्र-निर्माण करना (b) लक्ष्य प्राप्त करना
 (c) डिग्री लेना (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- 26. अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होना आवश्यक है, क्योंकि-**
 (a) बालक का शैक्षिक प्रगति पर अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है।
 (b) अध्यापक की व्यावसायिक उन्नति में इससे सहायता मिलती है।
 (c) दूसरे अध्यापक की प्रतिष्ठा बढ़ती है।
 (d) अध्यापक में अपने व्यवसाय के प्रति रुझान पैदा होती है।
- 27. एक प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए-**
 (a) अधिगमकर्ता की रुचियों, अभिवृत्तियों व योग्यता का।
 (b) अधिगमकर्ता की आयु का
 (c) अधिगमकर्ता की क्षमता का
 (d) उपर्युक्त सभी
- 28. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान एक छात्र की सहभागिता है, यह तभी कहा जा सकता है, यदि वह-**
 (a) शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देता है।
 (b) अपनी तरफ से पहल करता है।
 (c) दूसरों के विचारों पर प्रतिक्रिया करता है।
 (d) संबंध प्रश्न पूछता है।
- 29. आपके मतानुसार प्रभावी शिक्षण किसका परिणाम है?**
 (a) विद्यार्थियों से मित्रतापूर्वक व्यवहार का
 (b) पाठ्यवस्तु पर अधिकार और संप्रेषण का
 (c) अनुभव का
 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- 30. 'बुनियादी शिक्षा का विचार' के प्रतिपादक थे-**
 (a) महात्मा गाँधी (b) डॉ. जाकिर हुसैन
 (c) जवाहरलाल नेहरू (d) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
- 31. आपके मतानुसार सीखने हेतु आवश्यक है-**
 (a) अध्यापक द्वारा प्रोत्साहन (b) सामान्य समझ
 (c) जिज्ञासा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- 32. आपकी राय में शिक्षा से विकसित होती है-**
 (a) बौद्धिकता (b) योग्यताएँ
 (c) परिपक्वता (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
- 33. कक्षा में शिक्षण हेतु प्रवेश करने से पूर्व, मैं-**
 (a) अपने को प्रसन्नचित बनाऊँगा।
 (b) दर्पण में अपना चेहरा निहारूँगा।
 (c) आज के पाठ की शिक्षण सहायक सामग्री साथ लेकर जाऊँगा।
 (d) अपनी पाठ्य योजना व्यवस्थित करूँगा।
- 34. शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए क्योंकि इस प्रकार-**
 (a) वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है।
 (b) वह योग्य शिक्षक बन जाता है।
 (c) इसके अभाव में वह अपने छात्रों के मस्तिष्क को प्रखर नहीं बना सकता।
 (d) उसे भाषा का ज्ञान हो जाता है।
- 35. अध्यापन कार्य के विषय में आपकी क्या राय है?**
 (a) हिम्मत तोड़ने वाला (b) बहुत रोचक
 (c) चुनौतीपूर्ण (d) बहुत नीरस
- 36. अधिगम होने (सीखने) हेतु इनमें से क्या आवश्यक नहीं है-**
 (a) अनुकूल अधिगम परिस्थिति
 (b) अधिगमकर्ता की सहभागिता
 (c) साक्षर अभिभावक
 (d) विषयवस्तु का अधिगमकर्ता के स्तर के अनुरूप होना।
- 37. शिक्षा योगदान देती है-**
 (a) नवीन अधिगम पर बल देना।
 (b) बालकों के गुणों का अधिगम में उपयोग
 (c) अधिगम की विभिन्न शैलियों का विकास
 (d) उपर्युक्त सभी
- 38. शिक्षक अनुशासन की समस्या का समाधान कर सकता है-**
 (a) सहानुभूति से (b) पीटकर
 (c) डाँट-डपटकर (d) कठोर दण्ड से
- 39. "शिक्षा जीवन का अंग है" यह कथन किसका है?**
 (a) स्पेंसर का (b) क्रो एवं क्रो का
 (c) हरबर्ट का (d) जॉन ड्यूवी का
- 40. शिक्षण प्रक्रिया के तहत आश्रित चर है-**
 (a) पाठ्यक्रम (b) शिक्षक
 (c) छात्र (d) पाठ्यवस्तु
- 41. शिक्षण की पूर्व क्रियात्मक अवस्था के दौरान निम्नलिखित में से कौन-सा निर्णय लिया जाता है?**
 (a) शिक्षण विधियाँ
 (b) विषयवस्तु, अनुभवों, विषय सामग्री एवं विधियाँ
 (c) अधिगम विषय-वस्तु और शिक्षण विधियाँ
 (d) अध्यापक और विद्यार्थियों की वास्तविक क्रिया

42. "आज के वर्तमान मानव की आवश्यकता उत्तम और शानदार चरित्र है।" यह कथन दिया-
 (a) जेरोम ब्रूनर (b) सिगमण्ड फ्रायड
 (c) हरबर्ट स्पेन्सर (d) कोहलबर्ग
43. सूक्ष्म शिक्षण विधि के विकास में निम्नलिखित में से कौन शामिल नहीं था?
 (a) डी. ऐलन (b) एचीसन
 (c) डैक्राली (d) राबर्ट बुश
44. आप कक्षा में अधिक छात्रों का भाग लेना सुनिश्चित करना चाहते हैं। निम्नलिखित में कौन-से शिक्षण तरीके की आप अपनाएँगे?
 (a) प्रदर्शन (b) चर्चा
 (c) भूमिका-खेल (d) प्रवचन
45. आप प्राथमिक विद्यालय में अकेले अध्यापक है, आप कक्षाओं को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से विधि का प्रयोग करेंगे-
 (a) अभिक्रमित अनुदेशन विधि (b) प्रदर्शन विधि
 (c) निगमन विधि (d) आगमन विधि
46. कक्षा-शिक्षण की उत्तम प्रणाली वह है जिसमें-
 (a) प्रश्नोत्तर की आवश्यकता न पड़े।
 (b) अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछे।
 (c) छात्र अध्यापक से शंका समाधान करें।
 (d) अध्यापक और छात्र दोनों प्रश्न पूछे।
47. वह विधि जो देखकर सीखने के सिद्धांत पर आधारित है-
 (a) निरीक्षण विधि (b) संकेन्द्रीय विधि
 (c) क्रियात्मक विधि (d) तुलनात्मक विधि
48. सबसे अच्छी शिक्षण विधि वह होती है, जिसमें -
 (a) बहुत सहायक सामग्री हो।
 (b) बहुत क्रियाएँ हो।
 (c) बहुत प्रश्न हो।
 (d) विद्यार्थी पर आधारित क्रिया अधिक हो।
49. एक शिक्षक, शिक्षार्थी के मानसिक विकास का ज्ञान प्राप्त करके जिसकी योजना नहीं बना सकता, वह है -
 (a) पाठ्यक्रम (b) शिक्षण विधि
 (c) विषयवस्तु का चयन (d) शारीरिक विकास
50. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है -
 (a) भाषा कौशल का विकास
 (b) दण्ड
 (c) व्यक्तित्व का विकास
 (d) सामाजिक नागरिकता का विकास
51. शिक्षण प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?
 (a) एक परिस्थितिजन्य प्रक्रिया
 (b) एक कार्याभिमुखी प्रक्रिया
 (c) छात्रों एवं अध्यापक के मध्य में कक्षा में सामान्य बातचीत
 (d) एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया
52. आप शिक्षण कौशल की प्रगति के लिए सर्वोच्च महत्त्व प्रदान करेंगे-
 (a) उच्च गुणवत्ता का कक्षीय शिक्षण कार्य
 (b) अधिकाधिक ट्यूशन कार्य
 (c) उत्तम पुस्तकों का लेखन
 (d) शिक्षण कार्य में पलायन
53. जटिल तथा कठिन विषयवस्तु का शिक्षण कराना चाहिये-
 (a) छात्रों के अनुसार (b) खण्डों में
 (c) बाद में (d) बीच-बीच में
54. प्रभावी निर्णय निर्माण निर्भर करता है -
 (a) नेता पर
 (b) सदस्यों पर
 (c) नेता एवं सदस्य दोनों पर
 (d) दोनों के मध्य अन्तःक्रिया पर
55. बालक के सीखने की पहचान आप कैसे करेंगे?
 (a) उसका अक्षर ज्ञान देखकर
 (b) उसके व्यवहार में परिवर्तन देखकर
 (c) उसके प्रश्न-उत्तर सुनकर
 (d) उसको लिखित परीक्षा लेकर
56. अधिगम की सफलता का प्रमुख आधार है-
 (a) प्रशंसा
 (b) पुरस्कार
 (c) लक्ष्य प्राप्ति को उत्कृष्ट इच्छा
 (d) नेतृत्व
57. बालकों के सीखने पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है-
 (a) अभिवृद्धि का (b) प्रेरणा का
 (c) अभिव्यजंजा का (d) स्वाभाविक प्रेरक का
58. निम्नलिखित में से कौन-सा दोष डाल्टन विधि का नहीं है?
 (a) यह एक खर्चीली विधि है।
 (b) इससे छात्रों की मौखिक भाषा का विकास नहीं होता है।
 (c) इसमें अध्यापकों की अधिकाधिक आवश्यकता पड़ती है।
 (d) इसमें प्रयोगशालाओं की आवश्यकता नहीं होती है।
59. निम्नलिखित में से कौन-सी विधि से बालकों की शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक शक्तियाँ क्रियाशील होती है?
 (a) खेल विधि (b) प्रयोगशाला विधि
 (c) किण्डर गार्डन विधि (d) प्रायोजना विधि
60. निम्नलिखित में से कौन-सी दृश्य-श्रव्य सामग्री है?
 (a) रेडियो (b) ब्लैक बोर्ड
 (c) टेलीविजन (d) ओ.एच.पी.
61. शिक्षा का अति महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है-
 (a) आजीविका कमाना।
 (b) बच्चों का सर्वांगीण विकास करना।
 (c) पढ़ना एवं लिखना।
 (d) बौद्धिक विकास।
62. विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी निम्नलिखित विधि के द्वारा संभव है-
 (a) व्याख्यान विधि (b) पाठ्यपुस्तक विधि
 (c) श्रव्य-दृश्य सामग्री (d) वार्तालाप विधि

63. यदि कोई बच्चा विद्यालय में हमेशा देर से पहुँचता है, तो आप क्या करेंगे?
 (a) उसे डाँटेंगे ताकि वह यह गलती दुबारा ना दोहराए।
 (b) प्रधानाचार्य को बताएँगे।
 (c) उसके माता-पिता से सम्पर्क करेंगे।
 (d) बच्चे से बातचीत करके कारण जानने का प्रयास करेंगे।
64. कक्षा-कक्ष का वातावरण नहीं होना चाहिए-
 (a) शांत (b) शोर-गुल से भरा
 (c) अनुशासन से पूर्ण (d) मित्रतापूर्वक
65. एक प्रभावशाली अध्यापिका होने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है-
 (a) पुस्तक से उत्तरों को लिखाने पर बल देना।
 (b) समूह गतिविधि के बजाय वैयक्तिक अधिगम पर ध्यान देना।
 (c) विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछने के कारण उत्पन्न व्यवधान की अनदेखी करना।
 (d) प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना।
66. शिक्षक की सबसे मुख्य जिम्मेदारी है-
 (a) कठोर अनुशासन बनाए रखना।
 (b) विद्यार्थियों को विभिन्न अधिगम शैलियों के अनुसार सीखने के मौके उपलब्ध कराना।
 (c) पाठ-योजना तैयार करना और उसके अनुसार पढ़ाना।
 (d) यथासंभव क्रिया-कलापों का आयोजन करना।
67. एक शिक्षक, बच्चे द्वारा की गई छोटी-छोटी गलतियों पर क्रोध प्रकट करता है। यह इंगित करता है कि-
 (a) वह बच्चे का शुभचिंतक है।
 (b) उसमें ज्ञान की कमी है।
 (c) वह कुण्ठित है।
 (d) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित नहीं है।
68. बुनियादी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देना बेहतर है, क्योंकि यह-
 (a) बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करेगी।
 (b) अधिगम को सरल बनाएगी।
 (c) बौद्धिक विकास में सहायता करेगी।
 (d) प्राकृतिक वातावरण में बच्चों को सीखने में सहायता करेगी।
69. कक्षाओं में पढ़ाते समय एक शिक्षक को प्राथमिकता देनी चाहिए?
 (a) व्याख्यान विधि को (b) दत्तकार्य को
 (c) कहानी कथन को (d) समूह चर्चा को
70. एक अच्छे शिक्षक का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है-
 (a) विषय-वस्तु का पूर्ण ज्ञान
 (b) अच्छा सम्प्रेषण कौशल
 (c) विद्यार्थियों के हित का ध्यान रखना
 (d) प्रभावी नेतृत्व का गुण
71. एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए-
 (a) प्रगतिशील भूमिका में
 (b) प्रभुत्ववादी भूमिका में
 (c) प्रजातांत्रिक भूमिका में
 (d) प्रभावशाली भूमिका में

72. एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो कर सकता है-
 (a) कक्षा पर नियंत्रण करना
 (b) कम समय में अधिक सूचना देना
 (c) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना
 (d) दत्तकार्य को ध्यानपूर्वक जाँचना
73. निम्नलिखित में से कौन-सी अच्छे शिक्षण की विशेषता नहीं है?
 (a) स्वेच्छाचारी
 (b) जनतांत्रिक
 (c) सहानुभूतिपूर्ण
 (d) वांछनीय सूचनाएँ देने वाला
74. एक आदर्श अध्यापक को एकाग्रचित होना चाहिए-
 (a) शिक्षण विधि पर
 (b) सीखने वाले विषय पर
 (c) छात्र और उनके व्यवहार पर
 (d) उपर्युक्त सभी
75. जिस कक्षा-कक्ष में विविध पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते हो, वहाँ एक प्रभावी शिक्षक-
 (a) समूह में वैयक्तिक भिन्नता को बताने के लिए उनकी सांस्कृतिक जानकारी पर ध्यान देगा।
 (b) वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए कहेगा ताकि वे अपने साथियों के बराबर पहुँच सकें।
 (c) सांस्कृतिक जानकारी की अनदेखी करेगा और एक सर्वमान्य तरीके से अपने सभी विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करेगा।
 (d) समान आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का समूह बनाएगा और उन्हें एक साथ रखेगा।

ANSWER KEY

1. [c]	2. [b]	3. [c]	4. [a]	5. [d]
6. [d]	7. [d]	8. [d]	9. [c]	10. [b]
11. [a]	12. [a]	13. [a]	14. [c]	15. [b]
16. [b]	17. [d]	18. [c]	19. [d]	20. [b]
21. [a]	22. [d]	23. [d]	24. [a]	25. [a]
26. [a]	27. [d]	28. [d]	29. [b]	30. [a]
31. [c]	32. [c]	33. [d]	34. [b]	35. [c]
36. [c]	37. [d]	38. [a]	39. [d]	40. [c]
41. [b]	42. [c]	43. [c]	44. [b]	45. [a]
46. [d]	47. [a]	48. [d]	49. [b]	50. [c]
51. [d]	52. [a]	53. [b]	54. [d]	55. [b]
56. [c]	57. [b]	58. [b]	59. [a]	60. [c]
61. [b]	62. [d]	63. [d]	64. [b]	65. [d]
66. [b]	67. [d]	68. [d]	69. [c]	70. [b]
71. [c]	72. [c]	73. [a]	74. [d]	75. [c]

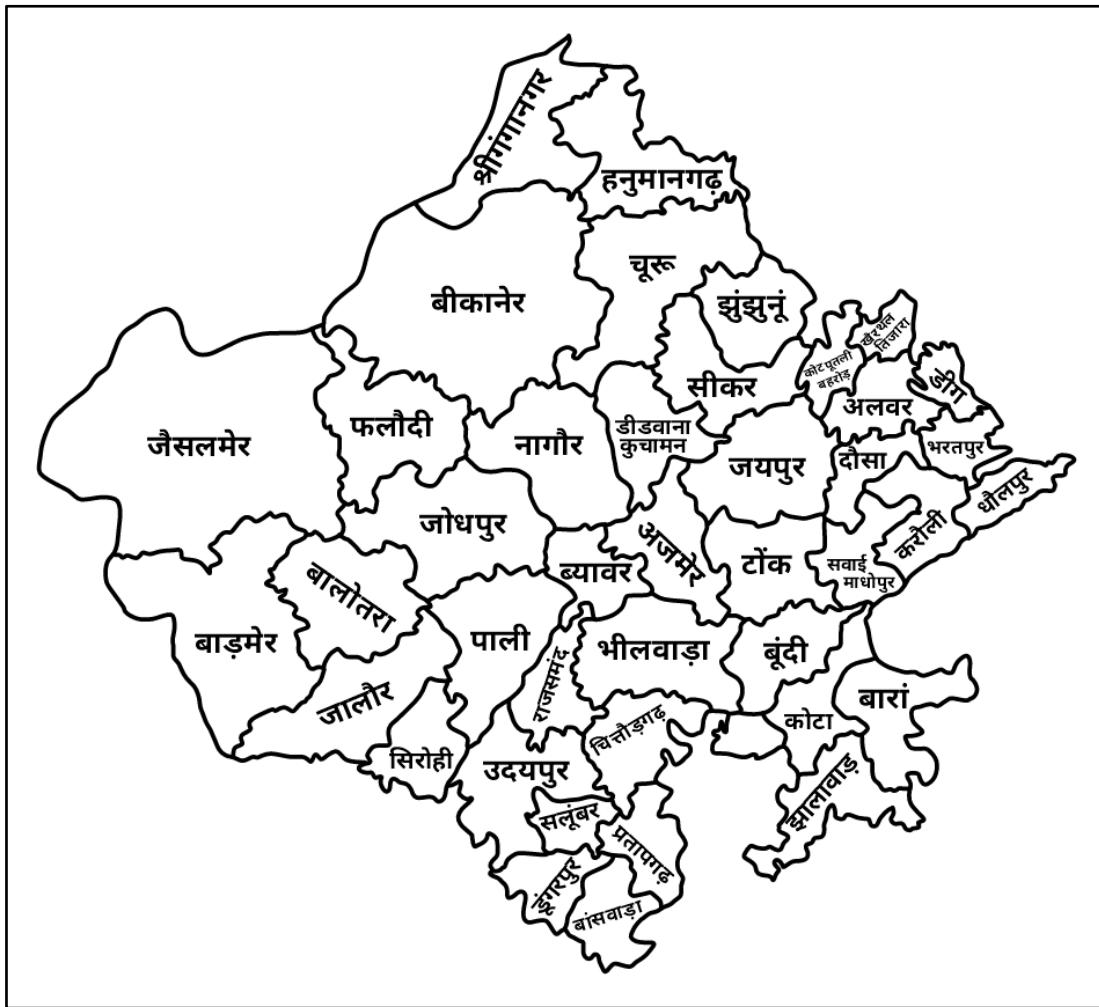
♦ ♦ ♦ ♦



राजस्थान का भूगोल



41 जिलों व 7 संभागों सहित राजस्थान का मानचित्र



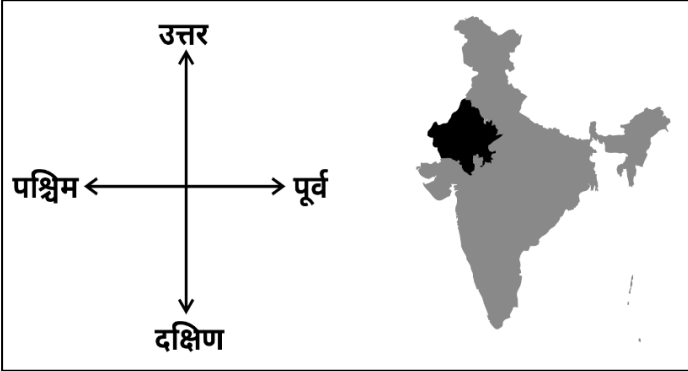
राजस्थान का नामकरण

- ❖ **राजस्थानादित्य -**
- ❖ राजस्थान के लिए यह शब्द **बसंतगढ़ शिलालेख (सिरोही)** से विक्रम संवत् **682 या 625 ई.** में प्राप्त हुआ।
- ❖ यह शिलालेख **चावड़ा वंश** के राजा **वर्मलात** के द्वारा उत्कीर्ण करवाया गया था।
- ❖ **मरूकान्तर -**
- ❖ रामायण में **महर्षि वाल्मीकि** के द्वारा राजस्थान के लिए "**मरूकान्तर**" शब्द का प्रयोग किया था।
- ❖ **ब्रह्मवर्त -**
- ❖ वैदिक काल में इसे **ब्रह्मवर्त** नाम से जाना जाता था।
- ❖ वैदिक काल में यहाँ पर **दृषद्वती या सरस्वती** नदी का प्रवाह होने का उल्लेख मिलता है।
- ❖ **राजपूताना -**
- ❖ इस शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम **जॉर्ज थॉमस (आयरलेण्ड)** ने 1800वीं सदी में किया था। प्रारंभ में यह सब मौखिक रूप से दिया गया।
- ❖ '**विलियम फ्रेंकलिन**' ने अपनी पुस्तक '**मिलिट्री मेमॉयर्स ऑफ जॉर्ज थॉमस**' (1805) में राजपूताना शब्द का लिखित प्रमाण दिया है।

- ❖ **राजस्थान, रायथान, रजवाड़ा -**
- ❖ 1829 ई. में **कर्नल जेम्स टॉड (इंग्लैंड)** द्वारा लिखित पुस्तक '**एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान**' या '**द सेण्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इण्डिया**' में सर्वप्रथम राजस्थान के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया।
- ❖ **गुरू का नाम - यतिज्ञानचंद्र**
- ❖ **कर्नल टॉड के उपनाम -**
- 1. घोड़े वाला बाबा
- 2. राजपूताने के इतिहास का पितामह
- ❖ **कर्नल टॉड** ने सर्वप्रथम सामन्तवादी व्यवस्था पर टिप्पणी की।
- ❖ वर्तमान स्वरूप में **राजस्थान** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एकीकरण के **दूसरे चरण** (25 मार्च, 1948) में किया गया।
- ❖ अंतिम रूप से 26 जनवरी, 1950 को राजस्थान को संवैधानिक / कानूनी मान्यता प्रदान की गई।
- नोट:-** **मुहणोत नैणसी व वीरभान** नामक लेखकों ने भी अपनी पुस्तकों में **राजस्थान** शब्द का प्रयोग किया था, लेकिन इन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया था कि यह शब्द किसके लिए दिया है।

राजस्थान का क्षेत्रफल

भारत में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति



- इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवाँ हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- 1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।
- राजस्थान के बाद मध्य प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य है।

राजस्थान: 3,42,239 वर्ग किमी.

मध्य प्रदेश: 3,08,245 वर्ग किमी.

महाराष्ट्र: 3,07,713 वर्ग किमी.

उत्तर प्रदेश: 2,40,928 वर्ग किमी.

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा है:-

राजस्थान का क्षेत्रफल बराबर है।	राजस्थान क्षेत्रफल में बड़ा है।
जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड, जर्मनी, नार्वे एवं वियतनाम	इजराइल से 17 गुणा बेल्जियम से 11 गुणा
	श्रीलंका से 5 गुणा चेकोस्लोवाकिया से तीन गुणा
	स्वीट्जरलैण्ड से 8 गुणा ब्रिटेन से (1.5 / 2 गुणा)

राजस्थान के क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँच सबसे बड़े जिले -

क्र.सं.	जिला	क्षेत्रफल
1.	जैसलमेर	38401 वर्ग किमी.
2.	बीकानेर	30239 वर्ग किमी.
3.	बाड़मेर	28387 वर्ग किमी.
4.	जोधपुर	22850 वर्ग किमी.
5.	नागौर	17718 वर्ग किमी.

जैसलमेर भारत का तीसरा सबसे बड़ा जिला है

- कच्छ (गुजरात) - 45,674 वर्ग किमी.
- लेह (लद्दाख) - 45,110 वर्ग किमी.
- जैसलमेर (राजस्थान) - 38,401 वर्ग किमी.

- जैसलमेर जिला राज्य के कुल क्षेत्रफल का 11.22% है जबकि धौलपुर जिले से यह 12.66 गुना बड़ा है।

- राजस्थान का सिरौही जिला क्षेत्रफल व जनसंख्या में लगभग समान प्रतिशत रखता है। (क्षेत्रफल - 1.5%, जनसंख्या - 1.51%)

राजस्थान के क्षेत्रफल की दृष्टि से पाँच सबसे छोटे जिले -

क्र.सं.	जिला	क्षेत्रफल
1.	धौलपुर	3033 वर्ग किमी
2.	दौसा	3432 वर्ग किमी
3.	डूंगरपुर	3770 वर्ग किमी
4.	प्रतापगढ़	4449 वर्ग किमी
5.	सवाई माधोपुर	4498 वर्ग किमी

- धौलपुर जिला राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 0.8% है।

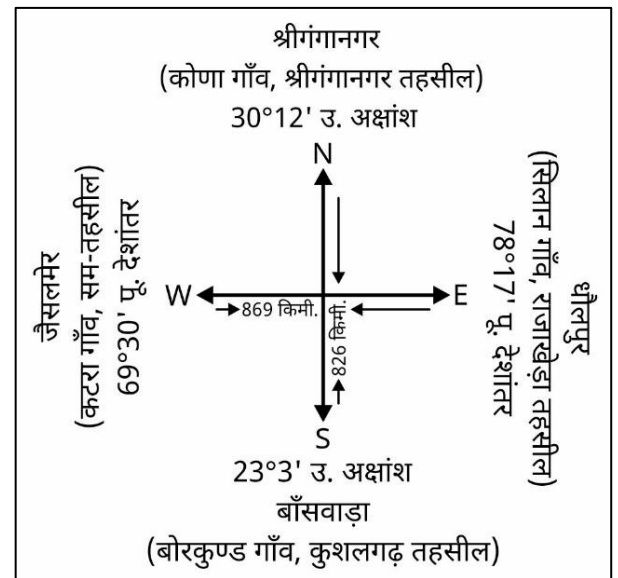
नोट:- उक्त जिलों का क्षेत्रफल जिलों के पुनर्गठन से पहले की स्थिति के अनुसार है। नवीनतम आधिकारिक आँकड़े जारी नहीं हुए हैं।

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति -

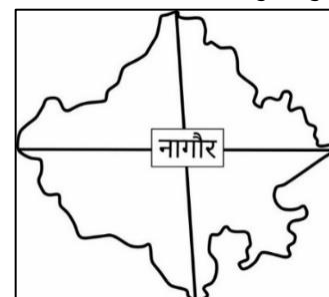
- अक्षांशीय स्थिति - अक्षांशीय दृष्टि से उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- देशांतरीय स्थिति - देशांतरीय दृष्टि से पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।
- एशिया महाद्वीप के सापेक्ष राजस्थान की स्थिति - दक्षिण-पश्चिम ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में है।
- भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम दिशा तथा वायव्य कोण पर स्थित है।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:-

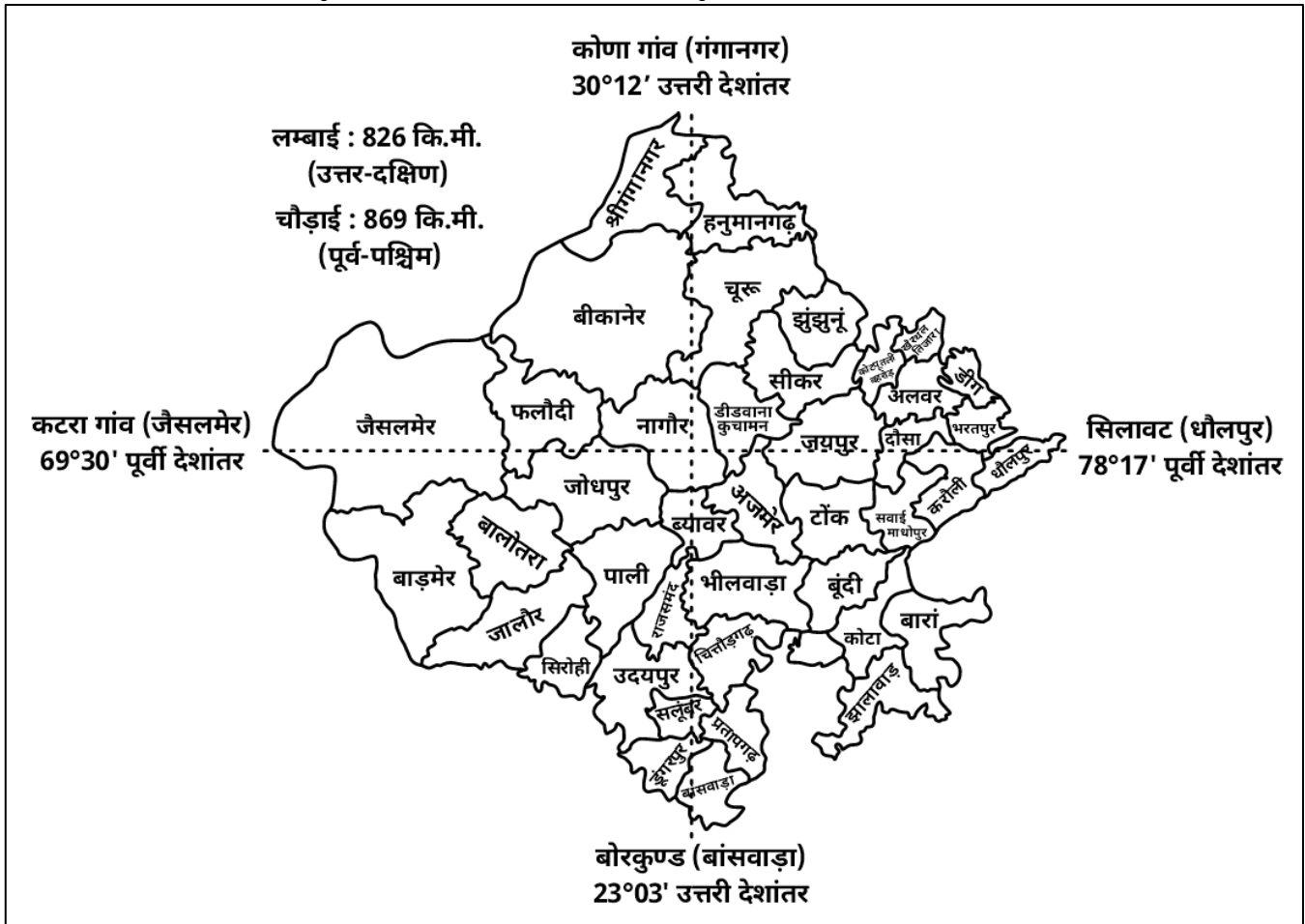


राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9' अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर/ 514 मील है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव, गंगानगर (तह.) श्रीगंगानगर है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड, कुशलगढ़ (तह.) बाँसवाड़ा है।



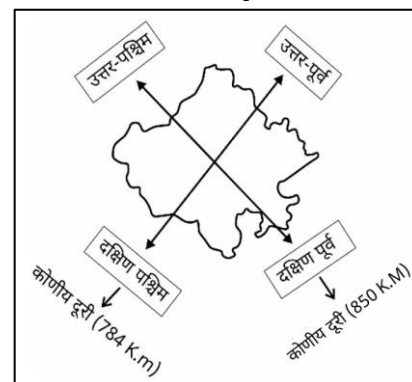
- ❖ राजस्थान का मध्य बिन्दु -
जिला - नागौर तहसील - मेडता मध्य गाँव - लाम्पोलाई (नागौर)
Note - सेटेलाइट सर्वे के अनुसार गगराना नागौर
❖ राजस्थान की उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम मध्य रेखाएँ नागौर जिले में एक-दूसरे को क्रॉस करती हैं।



राजस्थान का देशांतरीय विस्तार

- ◆ राजस्थान का देशान्तीय विस्तार **69°30'** पूर्वी देशांतर से **78°17'** पूर्वी देशांतर तक है।
 - ◆ राजस्थान का देशांतरीय विस्तार **8°47'** देशांतरों के मध्य है।
- ✦ **1° देशांतर** को पार करने में सूर्य का प्रकाश **4 मिनट** का समय लेता है।
 - ✦ **1° देशान्तर** - 4 मिनट x देशान्तीय अंतर
 - ✦ $4 \times 8^\circ 47 \text{ मिनट या } 4 \times 9^\circ = \mathbf{36 \text{ मिनट}}$
 - ✦ अतः राजस्थान का समयान्तर **36 मिनट या 35 मिनट 8 सैकण्ड** है।
- ◆ राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई **869 किलोमीटर / 539 मील** है।
 - ◆ राजस्थान का पूर्वी बिन्दु **सिलाना गाँव, राजाखेड़ा (तह.) धौलपुर** है।
 - ◆ राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु **कटरा गाँव, सम (तह.) जैसलमेर** है।
 - ◆ राजस्थान में में सबसे पहले सूर्योदय व सूर्यास्त वाला जिला **धौलपुर** है। सबसे बाद में **जैसलमेर** है।
- नोट:-** राजस्थान की आकृति विषम **चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार, पतंगाकार व रोहम्बस** के समान है।
- ◆ इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम **‘टी.एच. हेंडले’** ने बताया।

♦ **राजस्थान की कोणीय दूरी -**



राजस्थान की सीमाएँ



स्थलीय सीमा

❖ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा [रेडक्लिफ रेखा]



- ❖ राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है।
- ❖ यह रेखा **भारत और पाकिस्तान** के बीच निर्धारित की गई है।
- ❖ रेडक्लिफ का निर्धारण **17 अगस्त, 1947** को **सर सिरिल रेडक्लिफ** ने किया इस कारण इसका नाम '**रेडक्लिफ रेखा**' है।
- ❖ रेडक्लिफ रेखा एक **कृत्रिम रेखा** है।
- ❖ रेडक्लिफ रेखा पर भारत के **3 राज्य और 2 केन्द्र** शासित प्रदेश स्थित हैं- **तीन राज्य-** पंजाब, राजस्थान एवं गुजरात

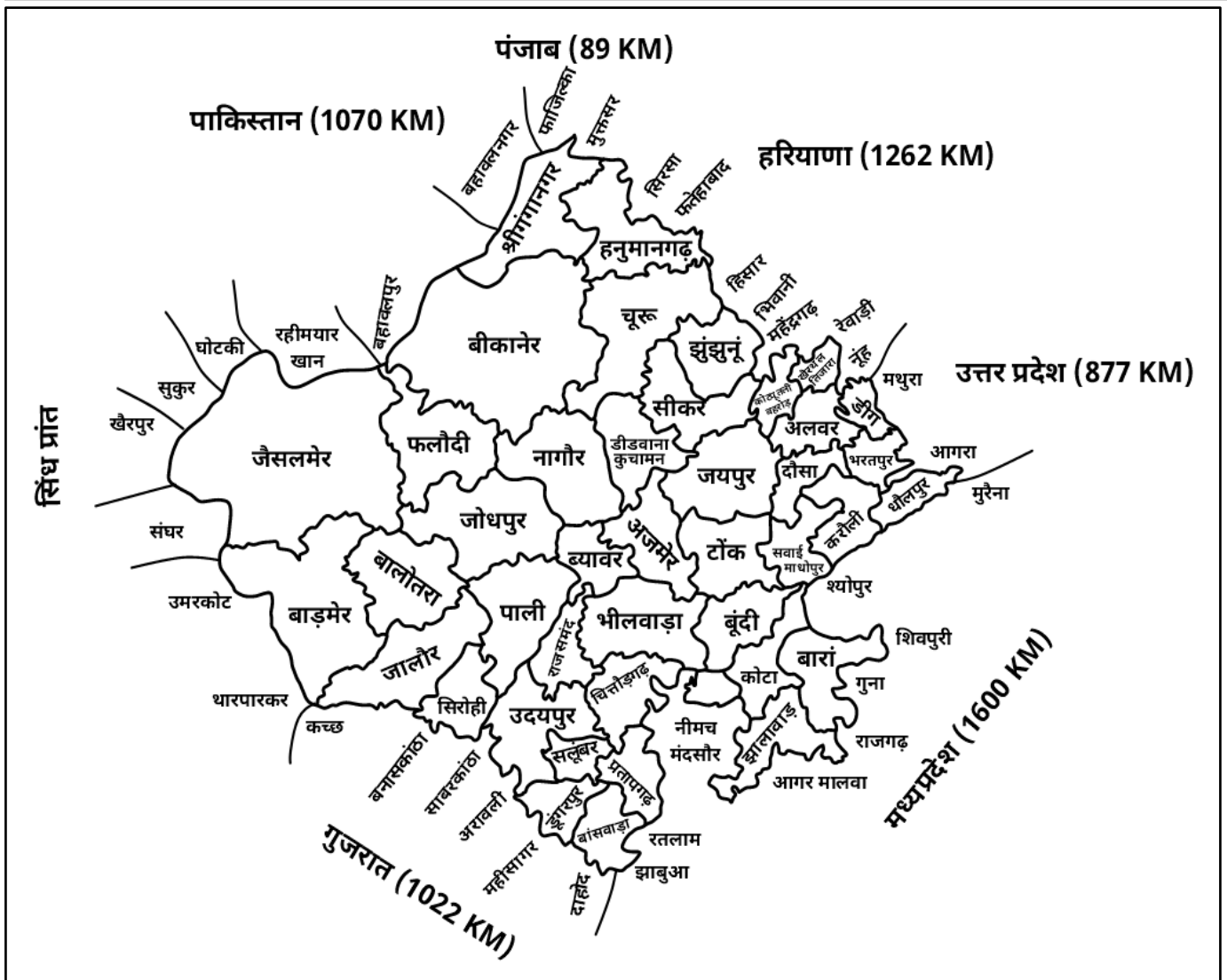
दो केन्द्र शासित प्रदेश- जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख

- ❖ रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई **3,323 किलोमीटर** है, जिसमें से राजस्थान के साथ **1,070 किलोमीटर** की सीमा लगती है।
- ❖ राजस्थान में यह रेखा **हिन्दूमलकोट (श्रीगंगानगर)** जिले से **बाखासर (बाड़मेर)** तक है।
- ❖ रेडक्लिफ रेखा राज्य की कुल सीमा का लगभग **18 प्रतिशत** है जबकि इस रेखा की कुल लम्बाई का राजस्थान में **32.2 प्रतिशत** है।

क्र.	जिला	लम्बाई
1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5.	फलोदी	30 किलोमीटर (अनुमानित)

- ❖ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त **सबसे नजदीक जिला-मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर** है।
- ❖ रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं-
पंजाब प्रान्त (3 जिले) - बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खान
सिंध प्रान्त (6 जिले) - घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट थारपारकर

राजस्थान की अन्तर्राज्यीय सीमा



क्र.सं.	दिशा	पड़ोसी राज्य	सीमा की लम्बाई	विभिन्न राज्यों की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले	राजस्थान की सीमा से लगने वाले अन्य राज्यों के जिले
1.	उत्तर	पंजाब	89 कि.मी. (न्यूनतम सीमा)	1. श्रीगंगानगर (सर्वाधिक) 2. हनुमानगढ़ (न्यूनतम)	पंजाब के 2 जिले - फाजिल्का (सर्वाधिक सीमा), मुक्तसर (न्यूनतम सीमा)
2.	उत्तर-पूर्व	हरियाणा	1262 कि.मी.	1. हनुमानगढ़ (सर्वाधिक), 2. चूरू, 3. झुंझुनूं, 4. सीकर, 5. कोटपूतली-बहरोड़, 6. खैरथल तिजारा (भर्तृहरि नगर), 7. अलवर (न्यूनतम), 8. डीग	हरियाणा के 7 जिले - सिरसा, फतेहबाद (न्यूनतम सीमा), हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़ (सर्वाधिक सीमा), रेवाड़ी, नुंह (मेवात)
3.	पूर्व	उत्तरप्रदेश	877 कि.मी.	1. डीग (न्यूनतम), 2. भरतपुर (सर्वाधिक), 3. धौलपुर	उत्तरप्रदेश के 2 जिले - मथुरा (न्यूनतम सीमा), आगरा (सर्वाधिक सीमा)
4.	दक्षिण-पूर्व	मध्यप्रदेश	1600 कि.मी. (सर्वाधिक सीमा)	1. धौलपुर, 2. करौली, 3. सवाईमाधोपुर, 4. कोटा, 5. बारां, 6. झालावाड़ (सर्वाधिक सीमा) 7. भीलवाड़ा (न्यूनतम), 8. चित्तौड़गढ़, 9. प्रतापगढ़, 10. बांसवाड़ा	मध्यप्रदेश के 10 जिले - मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, राजगढ़, आगरमालवा, नीमच, (सर्वाधिक सीमा), मन्दसौर, रतलाम, झाबुआ (न्यूनतम सीमा)
5.	दक्षिण-पश्चिम	गुजरात	1022 कि.मी.	1. बाँसवाड़ा, 2. डूंगरपुर, 3. उदयपुर (सर्वाधिक), 4. सिरोही, 5. जालौर, 6. बाड़मेर (न्यूनतम सीमा)	गुजरात के 6 जिले - दाहोद, महीसागर, अरावली, साबरकांठा, बनावसकांठा (सर्वाधिक सीमा), कच्छ (न्यूनतम सीमा)
		कुल राज्य -5	कुल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा 4850 किमी.	कुल जिले - 25	कुल जिले - 27

यह भी जानें

- ★ राजस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिलों में सर्वाधिक सीमा बनाने वाला जिला - झालावाड़ (520 कि.मी.)
- ♦ राजस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिलों में न्यूनतम सीमा बनाने वाला जिला - बाड़मेर (14 कि.मी.)
- ♦ राजस्थान के सीमावर्ती जिले - 28 जिले
- ♦ राजस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले जिले - 25 जिले
- ♦ राजस्थान के केवल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले जिले - 23 जिले
- ♦ राजस्थान के अन्तर्वर्ती / अन्तःस्थ जिले - 13 जिले
- ♦ नोट:- जिलों से पुनर्गठन से पहले आंतरिक जिलों की संख्या 8 थी जबकि सीमावर्ती जिलों की संख्या 25 थी।
- ♦ कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले हैं जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते हैं।
- ♦ राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
- ♦ दो-दो राज्यों के साथ सीमा बनाने वाले जिले:-
 1. हनुमानगढ़ - पंजाब व हरियाणा।
 2. डीग - हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
 3. धौलपुर - उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
 4. बाँसवाड़ा - मध्य प्रदेश व गुजरात।
- ♦ राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं-
 1. श्रीगंगानगर - पाकिस्तान व पंजाब।
 2. बाड़मेर - पाकिस्तान व गुजरात।
- ♦ 7 अगस्त 2023 से पूर्व सर्वाधिक जिले 8 के साथ सीमा बनाने वाला जिला पाली था
- ♦ 7 अगस्त 2023 के बाद राजस्थान का जयपुर, पाली, नागौर जिला सर्वाधिक 7-7 जिलों के साथ सीमा बनाते हैं।
- ♦ राजस्थान में सूर्य की सबसे सीधी किरणें प्राप्त करने वाला जिला बाँसवाड़ा है जबकि सबसे तिरछी किरणें प्राप्त करने वाला जिला गंगानगर है।

कर्क रेखा

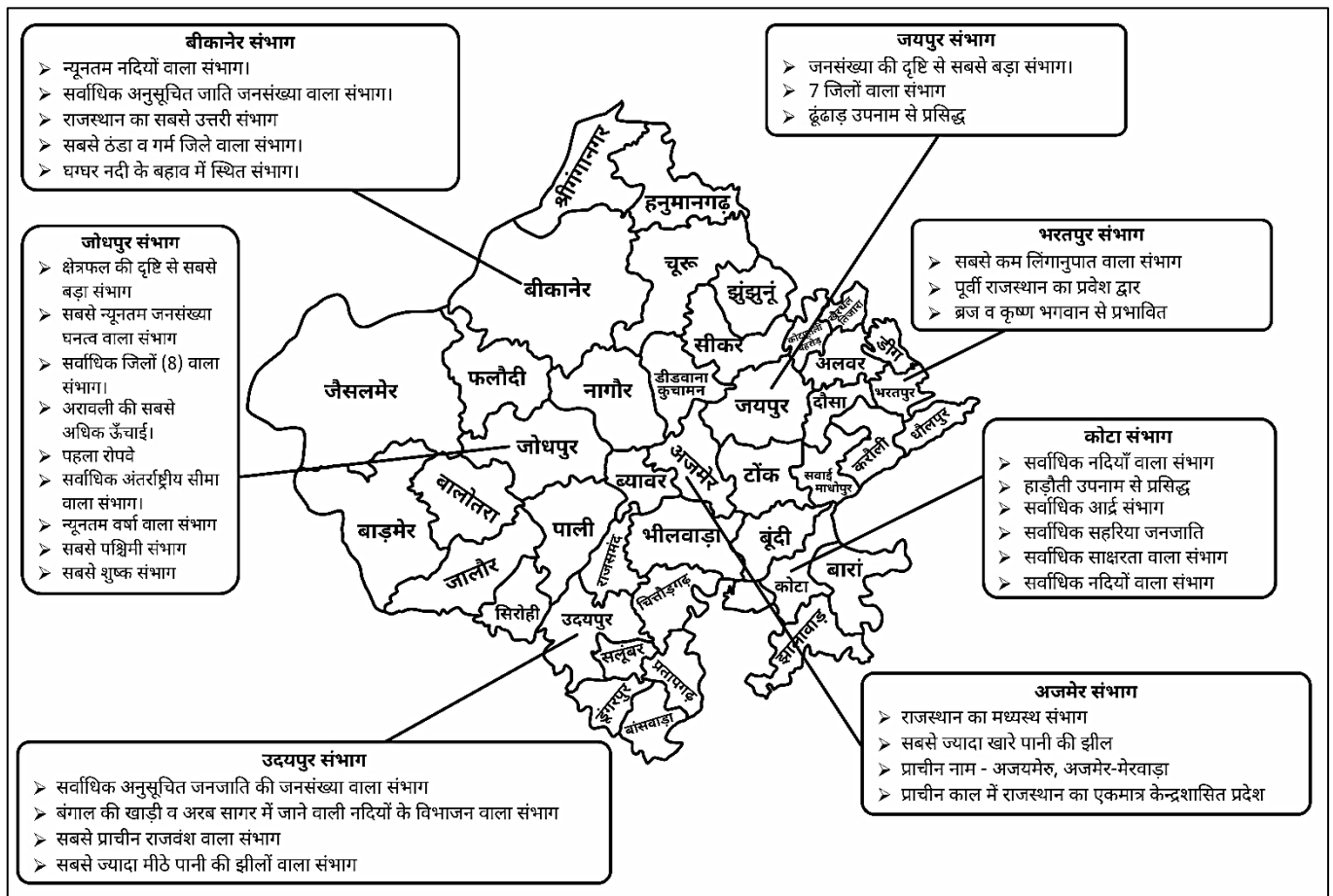
- ♦ 23¹/₂ उत्तरी अक्षांश, जिसे कर्क रेखा भी कहते हैं, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।

- ♦ यह रेखा चिखली गॉव (डूंगरपुर) को स्पर्श करती हुई बांसवाड़ा जिले से गुजरती है।
- ♦ राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है।
- ♦ कर्क रेखा की राजस्थान में लम्बाई लगभग 26 किमी है।
- ♦ कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पं. बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम) से गुजरती है।
- ♦ कर्क रेखा के सर्वाधिक नजदीक शहर - कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)
- ♦ कर्क रेखा के सर्वाधिक निकट जिला मुख्यालय - बाँसवाड़ा
- ♦ कर्क रेखा से सर्वाधिक दूर शहर/जिला मुख्यालय - गंगानगर
- ♦ सूर्य की किरणों का सर्वाधिक सीधापन - बाँसवाड़ा
- ♦ सूर्य की किरणों का सर्वाधिक तिरछापन - गंगानगर
- ♦ 21 जून (कर्क संक्रांति) - इस दिन उत्तरी गोलार्द्ध (राजस्थान) का सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात होती है।
- ♦ कर्क रेखा पर स्थित क्षेत्रों में 21 जून को दोपहर में परछाई नहीं बनती है, इसलिए इसे 'नो शैडो जॉन' कहते हैं।
- ♦ 21 जून- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (2015 से प्रारम्भ)
- ♦ 22 दिसम्बर (मकर संक्रांति) - इस दिन दक्षिणी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा दिन व सबसे छोटी रात होती है।
- नोट: इस दिन राजस्थान का सबसे छोटा दिन व सबसे बड़ी रात होती है।
- ♦ 21 मार्च (बसन्त विषुव) व 23 सितम्बर को (शरद विषुव) की घटना होती है। इस दिन सम्पूर्ण पृथ्वी पर दिन और रात की अवधि समान होती है।
- ♦ माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- ♦ कांगो नदी को विषवत रेखा को दो बार काटती है।
- ♦ लिम्पोपो नदी को 'घड़ियाल नदी' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। यह नदी मकर रेखा को दो बार काटती है।
- नोट:- भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है व तापमान कम होता जाता है।
- ♦ राजस्थान के कुछ जिले ऐसे हैं जिन्हें हम "अन्तर्वर्ती जिले" (Interior Districts) कहते हैं। ये जिले न तो किसी अन्य राज्य की सीमा से लगते हैं और न ही किसी देश की अंतरराष्ट्रीय सीमा से। (पाली, टोंक, बूंदी, राजसमंद, नागौर, डीडवाना-कुचामन, जयपुर, सलूम्बर, दौसा, बालोतरा, अजमेर, ब्यावर और जोधपुर)

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था

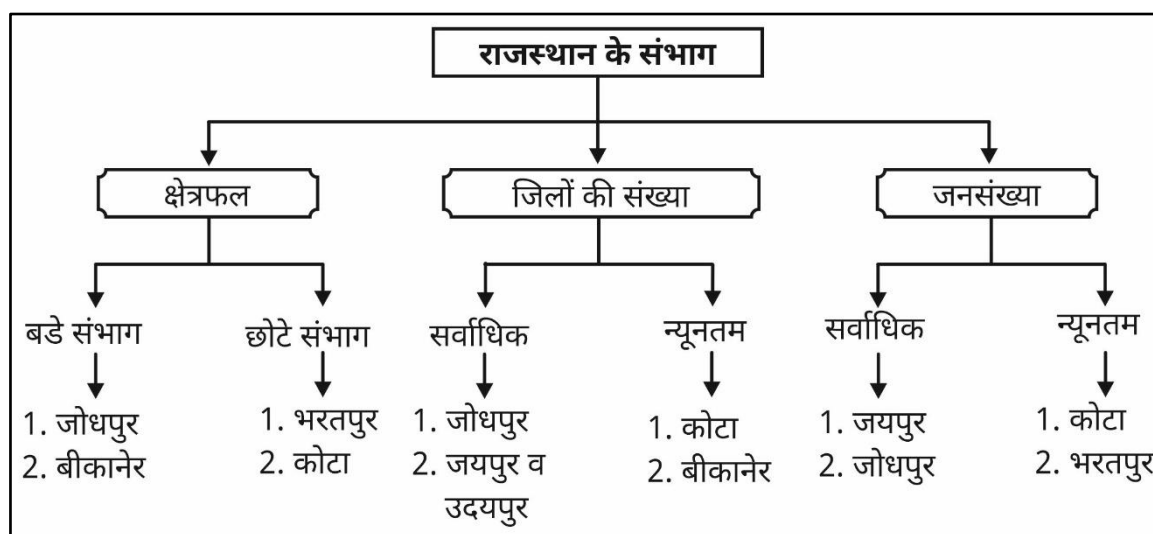
- संभागीय व्यवस्था की शुरुआत मनोनीत **मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री जी ने 1949** में की।
- अप्रैल, 1962 में **मोहनलाल सुखाडिया** सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
- 26 जनवरी, 1987 को **हरिदेव जोशी** सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था की शुरुआत दुबारा की गई तथा 1987 में जयपुर संभाग से अलग होकर नया संभाग **राजस्थान का छठा संभाग अजमेर** को बनाया गया।
- 4 जून, 2005 को **वसुंधरा सरकार** द्वारा **राजस्थान का 7वाँ संभाग भरतपुर** को बनाया गया।
- गहलोत सरकार का कदम (2022-2023):**
 - नये जिलों की घोषणा** - 17 मार्च, 2023
 - समिति - रामलुभाया समिति**
 - जिलों की संख्या:** राज्य में जिलों की संख्या **33 से बढ़ाकर 50** की गई।
 - संभागों की संख्या:** राज्य में संभागों की संख्या **7 से बढ़ाकर 10** कर दी गई।
 - अधिसूचना जारी: इस निर्णय की अधिसूचना 4 अगस्त, 2023 को जारी की गई और यह 7 अगस्त, 2023 से प्रभावी हो गया।
 - इस बदलाव से राजस्थान के प्रशासनिक ढांचे में बड़ा बदलाव आया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासनिक सुविधाओं का विस्तार हुआ।
- भजनलाल सरकार का कदम (2024):**
 - नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा:** 28 जून, 2024 को भजनलाल सरकार ने नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा के लिए जिला रिव्यू कमेटी का गठन किया।

- कमेटी का गठन:** इस कमेटी की अध्यक्षता **ललित के. पंवार** द्वारा की गई और इसमें वित्त सचिव, ग्रामीण विकास पंचायतीराज, गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव और राजस्व सचिव शामिल थे।
- मंत्रिमण्डलीय उपसमिति का गठन (2024):**
 - अध्यक्ष:** उपमुख्यमंत्री **प्रेमचंद बैरवा** को उपसमिति का अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन, बाद में वे संयोजक पद से इस्तीफा दे गए।
 - संयोजक:** शिक्षा मंत्री **मदन दिलावर** को **18 सितंबर, 2024** को उपसमिति का संयोजक नियुक्त किया गया।
 - अन्य सदस्य:** **कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, कन्हैयालाल चौधरी, हेमन्त मीणा और सुरेश सिंह रावत** को उपसमिति का सदस्य बनाया गया।
- कैबिनेट की नई घोषणा (2024):**
 - नवगठित संभागों को निरस्त किया:** 28 दिसंबर, 2024 को राजस्थान सरकार की कैबिनेट ने बाँसवाड़ा, सीकर और पाली संभागों को निरस्त कर दिया।
 - नए जिलों को निरस्त किया:** कैबिनेट ने **9 जिलों** को भी निरस्त करने का निर्णय लिया, जिनमें अनूपगढ़, दूदू, गंगापुरसिटी, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर ग्रामीण, केकड़ी, नीम का थाना, सांचौर और शाहपुरा शामिल थे।
 - अधिसूचना जारी:** इस निर्णय की अधिसूचना **29 दिसंबर, 2024** को जारी की गई, जिसमें राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 के तहत आवश्यक प्रक्रिया पूरी की गई।
 - नवीन प्रशासनिक ढांचा:** अब वर्तमान में राज्य में **7 संभाग और 41 जिले** हैं।



संभागों का पुनर्गठन (29 दिसंबर 2024 को जारी अधिसूचना)

क्र. सं.	संभाग का नाम	जिले संख्या	पुनर्गठन के पश्चात् संभागवार जिलों के नाम	रोचक तथ्य
1	जयपुर	7 जिले	1. जयपुर, 2. सीकर, 3. कोटपूतली-बहरोड़, 4. दौसा, 5. खैरथल-तिजारा, (भर्तृहरी नगर) 6. अलवर, 7. झुंझुनूं	सर्वाधिक जनसंख्या व जन-घनत्व वाला संभाग है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाला संभाग है।
2	बीकानेर	4 जिले	1. बीकानेर, 2. श्रीगंगानगर, 3. हनुमानगढ़, 4. चूरू	न्यूनतम नदियों वाला संभाग है। राज्य का उत्तरी संभाग है। अनुसूचित जनजाति की न्यूनतम जनसंख्या वाला संभाग है।
3	अजमेर	6 जिले	1. अजमेर, 2. ब्यावर, 3. भीलवाड़ा, 4. टोंक, 5. नागौर, 6. डीडवाना-कुचामन	मध्यवर्ती संभाग है। अधिकतम संभागों के साथ सीमा बनाने वाला संभाग है।
4	भरतपुर	5 जिले	1. भरतपुर, 2. धौलपुर, 3. करौली, 4. डीग, 5. सवाई माधोपुर	राज्य का सबसे छोटा संभाग है। राज्य का सबसे नवीनतम संभाग है। हरियाणा, उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के साथ सीमा बनाने वाला संभाग है।
5	कोटा	4 जिले	1. कोटा, 2. बूंदी, 3. बारां, 4. झालावाड़	दक्षिणी पूर्वी संभाग है। सर्वाधिक वर्षा व आद्रता वाला संभाग है। सर्वाधिक नदियों वाला संभाग है। सर्वाधिक साक्षरता वाला संभाग है।
6	जोधपुर	8 जिले	1. जोधपुर, 2. फलौदी, 3. जैसलमेर, 4. बाड़मेर, 5. पाली, 6. सिरोही, 7. बालोतरा, 8. जालोर	क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग है। सबसे शुष्कतम संभाग है। न्यूनतम वर्षा व उच्च तापमान वाला संभाग है।
7	उदयपुर	7 जिले	1. उदयपुर, 2. चित्तौड़गढ़, 3. प्रतापगढ़, 4. राजसमंद, 5. बांसवाड़ा, 6. डूंगरपुर, 7. सलूम्बर	दक्षिणी संभाग है। सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाला संभाग है। दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग है।



❖ राजस्थान के जिले -

- ❖ वर्तमान में राजस्थान में **41 जिले** हैं।
- ❖ राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री **भजनलाल शर्मा** ने नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या 41 हो गयी है।
- ❖ एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला **अजमेर** था, जिसे **26वें** जिले के रूप में मान्यता मिली।

क्रम	जिला	दिनांक	जिससे अलग हुआ
27वाँ	धौलपुर	15 अप्रैल, 1982	भरतपुर
28वाँ	बारौ	10 अप्रैल, 1991	कोटा
29वाँ	दौसा	10 अप्रैल, 1991	जयपुर
30वाँ	राजसमन्द	10 अप्रैल, 1991	उदयपुर
31वाँ	हनुमानगढ़	12 जुलाई, 1994	गंगानगर
32वाँ	करौली	19 जुलाई, 1997	सवाई माधोपुर
33वाँ	प्रतापगढ़	26 जनवरी, 2008	बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर
34वाँ	बालोतरा	07 अगस्त 2023	बाड़मेर
35वाँ	ब्यावर	07 अगस्त 2023	अजमेर, पाली, राजसमन्द, भीलवाड़ा
36वाँ	डीग	07 अगस्त 2023	भरतपुर
37वाँ	डीडवाना, कुचामन	07 अगस्त 2023	नागौर
38वाँ	खैरथल तिजारा	07 अगस्त 2023	अलवर
39वाँ	कोटपूतली-बहरोड	07 अगस्त 2023	जयपुर, अलवर
40वाँ	फलौदी	07 अगस्त 2023	जोधपुर, जैसलमेर
41वाँ	सलूमर	07 अगस्त 2023	उदयपुर

राजस्थान के जिलों की आकृतियाँ

क्र.सं.	जिले	आकृति
1.	चित्तौड़	घोड़े की नाल के समान
2.	भीलवाड़ा	लगभग आयताकार
3.	सीकर	प्यालाकार/अर्द्धचंद्राकार
4.	जैसलमेर	अनियमित बहुभुज
5.	बाड़मेर	लगभग भारत जैसा
6.	दौसा	धनुषाकार
7.	टोंक	पतंगाकार/चतुर्भुजाकार
8.	करौली	बतखाकार
9.	राजसमंद	तिलक के समान
10.	सिरोही	बैठे हुए मेंढक के समान

राजस्थान के जिलों के भौगोलिक नाम

भौगोलिक नाम	जिले / भौगोलिक क्षेत्र
कांठल	प्रतापगढ़ के आसपास का क्षेत्र माही नदी के किनारे होने के कारण इसका नाम कांठल पड़ा।
गिरवा	उदयपुर, के आसपास पहाड़ियों से घिरे भाग को गिरवा कहते हैं जिसका सामान्य अर्थ पहाड़ियों की मेखला है।
भौमट	डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही व उदयपुर जिलों का आदिवासी क्षेत्र।
शेखावाटी	झुंझुनूँ, चूरू, सीकर, जिलों को शेखावाटी के नाम से जाना जाता है।
डूँडाड़	आधुनिक जयपुर के पास बहने वाली डूँढ नदी के समीपवर्ती भाग को डूँडाड़ कहते थे।
गुर्जर प्रदेश	जोधपुर और पाली का क्षेत्र।
वल्ल / मांड	जैसलमेर का क्षेत्र।
स्वर्णगिरी	जालोर का क्षेत्र।
ऊपरमाल का पठार	मुख्य रूप से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) एवं बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य पठारी भू-भाग।
देशहरो	जरगा और रागा के बीच पहाड़ी भाग जो वर्ष भर हरा-भरा रहता है, इसलिए इस प्रदेश को देशहरो कहा जाता था।
थली	चूरू, सरदारशहर का क्षेत्र।
छप्पन का मैदान	प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा के मध्य भू-भाग को छप्पन का मैदान कहा जाता है क्योंकि इस भू-भाग में छप्पन गाँवों अथवा नदी-नालों का समूह है।
मेवल व देवलिया	बाँसवाड़ा और डूंगरपुर के मध्य का भू-भाग है। मेव (डूंगर पहाड़ी) स्थित होने के कारण।
मत्स्य प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिले का पूर्वी भाग।
यौद्धेय	श्रीगंगानगर के निकट का प्रदेश।
शौरसेन	भरतपुर, करौली, धौलपुर का क्षेत्र।
शिवी	उदयपुर, चित्तौड़गढ़ का क्षेत्र।
वागड़	डूंगरपुर, बाँसवाड़ा का क्षेत्र।
अहिच्छत्रपुर	नागौर के चारों ओर का क्षेत्र।

यह भी जानें

जिलें	विशेष तथ्य
गंगानगर	राजस्थान का अन्नागार / धान का कटौरा
झुंझनू	तांबा नगरी
बांसवाड़ा	सौ द्वीपों का शहर, आदिवासियों का शहर
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैण्ड
जैसलमेर	राजस्थान का अण्डमान, रेगिस्तान का गुलाब
लूणकरणसर	राजस्थान का राजकोट
झालावाड़	राजस्थान का नागपुर
बीकानेर	ऊन का घर
बूँदी	राजस्थान की काशी, बावडियों का शहर
माउण्ट आबू	बर्खोयान्सक, राजस्थान का शिमला
मचकुण्ड (धौलपुर)	तीर्थों का भांजा
पुष्कर	तीर्थों का मामा
देवयानी	तीर्थों की नानी
भंडदेवरा (बारां)	राज्य का मिनी खजुराहो
मातृकुंडिया (चित्तौड़गढ़)	राजस्थान का हरिद्वार
तारागढ़ (अजमेर)	राजस्थान का जिब्राल्टर
बाटाड़ का कुआँ (बालोतरा)	रेगिस्तान का जलमहल
झालरापाटन	घंटियों का शहर
सांचौर (जालौर)	राजस्थान का पंजाब
भिवाड़ी	राजस्थान का नवीन मेनचेस्टर
उदयपुर	झीलों की नगरी, राजस्थान का कश्मीर
अजमेर	राजपूताना की कुंजी, राजस्थान का हृदय, ख्वाजा की नगरी
भीलवाड़ा	वस्त्र नगरी / राजस्थान का मेनचेस्टर
डीग	जलमहलों की नगरी

अभ्यास प्रश्न

- भारत में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति है-
(a) उत्तर-पश्चिमी भाग (b) दक्षिण-पश्चिमी भाग
(c) उत्तर-पूर्वी भाग (d) दक्षिण-पूर्वी भाग [a]
- राजस्थान राज्य का कुल क्षेत्रफल है, लगभग -
(a) 2 लाख 24 हजार वर्ग किमी.
(b) 3 लाख 42 हजार वर्ग किमी.
(c) 4 लाख 24 हजार वर्ग किमी.
(d) 5 लाख 42 हजार वर्ग किमी. [b]
- सूची-I को सूची II से सुमेलित करें:-

सूची-I (देश-राज्य)	सूची II (राजस्थान की सीमा)
(A) पाकिस्तान	(i) दक्षिण
(B) मध्य प्रदेश	(ii) पूर्व
(C) पंजाब	(iii) उत्तर
(D) गुजरात	(iv) उत्तर-पश्चिम

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a-iv, b-iii, c-ii, d-i
(b) a-iv, b-ii, c-iii, d-i
(c) a-iv, b-i, c-ii, d-iii
(d) a-i, b-ii, c-iii, d-iv [b]
- राजस्थान का क्षेत्रफल भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का है-
(a) 10.41% (b) 11.11%
(c) 5.6% (d) 10% [a]

- 23° उत्तरी अक्षांश तथा 70° पूर्वी देशान्तर रेखाएँ राजस्थान के निम्नलिखित में से क्रमशः किन जिलों से होकर गुजरती हैं?
(a) बाँसवाड़ा व जैसलमेर (b) झुंजरपुर व नागौर
(c) बाँसवाड़ा व झुंजरपुर (d) झुंजरपुर व धौलपुर [a]
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई दर्शाने वाली दोनों रेखाएँ किस जिले में एक दूसरे को काटती हैं?
(a) जयपुर (b) नागौर
(c) अजमेर (d) पाली [b]
- राजस्थान के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?
(a) इसका आधार विषमकोण चतुर्भुज के समान है।
(b) इसका उत्तर से दक्षिण विस्तार 869 किमी. है।
(c) इसकी स्थलीय सीमा 6920 किमी. है।
(d) इसका क्षेत्रफल 3,42,329 वर्ग किमी. है। [a]
- निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:-

सूची-I (राज्य/विशेषता)	सूची-II (क्षेत्रफल / तथ्य)
(A) राजस्थान का कुल क्षेत्रफल	(1) 3,08,245 वर्ग किमी.
(B) मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल	(2) विषमकोण चतुर्भुज
(C) उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल	(3) 3,42,239 वर्ग किमी.
(D) राजस्थान की आकृति	(4) 2,40,928 वर्ग किमी.

(a) A-3, B-1, C-4, D-2 (b) A-1, B-3, C-2, D-4
(c) A-3, B-4, C-1, D-2 (d) A-4, B-1, C-3, D-2 [a]

9. राजस्थान का क्षेत्रफल निम्नलिखित यूरोपीय देशों में से किनके क्षेत्रफल के लगभग बराबर है?

1. नार्वे	2. बेल्जियम
3. स्विट्जरलैण्ड	4. पोलैण्ड

कुट:-

(a) 1, 2, 4	(b) 1, 3
(c) 2, 4	(d) 1, 4 [d]

10. राजस्थान के जिलों को उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम में व्यवस्थित करें-

(i) श्रीगंगानगर	(ii) जालौर
(iii) जोधपुर	(iv) बीकानेर

कूट:-

(a) (ii), (i), (iii), (iv)	(b) (i), (ii), (iii), (iv)
(c) (i), (iv), (iii), (ii)	(d) (ii), (iv), (iii), (i) [c]

11. राजस्थान के नक्शे पर निम्न में से कौन-सा सुदूर दक्षिण में स्थित है?

(a) मेड़ता सिटी	(b) सोजत
(c) मारवाड़ जंक्शन	(d) राजसमन्द [d]

12. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को दक्षिण से उत्तर के क्रम में बढ़ते हुए अक्षांश के अनुसार व्यवस्थित करें।

(a) झालावाड़	(b) झुंझुनूं
(c) जोधपुर	(d) सवाई माधोपुर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(a) (a), (c), (b), (d)	
(b) (a), (b), (d), (c)	
(c) (d), (c), (b), (a)	
(d) (a), (d), (c), (b)	[d]

13. राजस्थान के निम्नलिखित शहरों को पश्चिम से पूर्व दिशा में व्यवस्थित करें।

a. बाड़मेर	b. बून्दी
c. पाली	d. राजसमंद

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(a) a, c, d, b	(b) c, a, b, d
(c) b, d, a, c	(d) d, b, a, c [a]

14. निम्नलिखित में अधिकतम भौगोलिक दूरी वाला समूह कौन-सा है?

(a) जयपुर-जोधपुर	(b) जयपुर-कोटा
(c) जयपुर-बीकानेर	(d) जयपुर-उदयपुर [d]

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है:

कथन (A): राजस्थान के श्रीगंगानगर और बाड़मेर जिलों को 'अन्तर्राष्ट्रीय-अन्तर्राज्यीय' जिलों की श्रेणी में रखा जाता है।
कारण (R): ये दोनों जिले पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने के साथ-साथ पड़ोसी भारतीय राज्यों के साथ भी सीमा साझा करते हैं।

कूट:-

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
 (b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
 (c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
 (d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। [a]

16. राज्य की कुल स्थलीय सीमा की लम्बाई है?
 (a) 5091 किमी. (b) 5920 किमी.
 (c) 5290 किमी. (d) 5090 किमी [b]

17. निम्नलिखित में से कौन-सी रेडक्लिफ रेखा के रूप में जानी जाती है?
 (a) भारत-नेपाल सीमा
 (b) भारत-पाकिस्तान सीमा
 (c) भारत-अफगानिस्तान सीमा
 (d) भारत-म्यांमार सीमा [b]

18. राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर चार जिले (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर व गंगानगर) स्थित हैं, इनमें से सर्वाधिक लम्बी सीमा किस जिले की है?
 (a) बाड़मेर (b) जैसलमेर
 (c) बीकानेर (d) गंगानगर [b]

19. राजस्थान व की सीमा पर 'भवानीमण्डी' रेल्वे स्टेशन स्थित है।
 (a) पंजाब (b) मध्यप्रदेश
 (c) हरियाणा (d) उत्तरप्रदेश [b]

20. जिस राज्य के साथ राजस्थान की सबसे छोटी अंतर्राज्यीय सीमा है, वह है-
 (a) गुजरात (b) मध्यप्रदेश
 (c) हरियाणा (d) पंजाब [d]

21. कौन-सा जिला मुख्यालय शहर 70° पूर्व देशान्तर एवं 74° पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित नहीं है?
 (a) डूंगरपुर (b) उदयपुर
 (c) जालौर (d) हनुमानगढ़ [d]

22. राजस्थान का देशान्तर विस्तार है-
 (a) 69°30' पूर्वी से 78°17' पूर्वी
 (b) 69°30' पूर्वी से 78°17' पश्चिमी
 (c) 69°30' पश्चिमी से 78°17' पूर्वी
 (d) 69°30' पश्चिमी से 78°17' पश्चिमी [a]

23. राजस्थान राज्य का अक्षांशीय विस्तार है?
 (a) 23°3' दक्षिण से 30° 12' दक्षिण
 (b) 23° 3' उत्तर से 30°12' उत्तर
 (c) 23°3' उत्तर से 30° 12' दक्षिण
 (d) 30°12' उत्तर से 2.3" 3' दक्षिण [b]



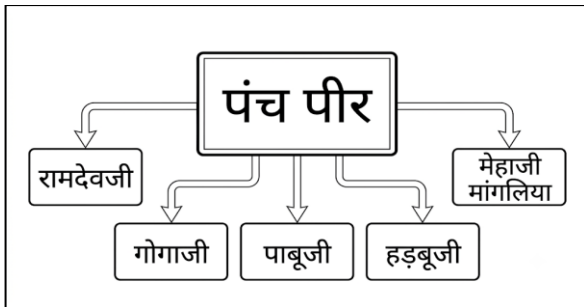


राजस्थान की कला एवं संस्कृति



- ◆ **पीर** - वह लोकदेवता जिनको हिन्दू व मुस्लिम दोनों पूजते हो, **पीर** कहलाते हैं।
- ◆ मारवाड़ (राजस्थान) में रामदेवजी, गोगाजी, पाबूजी, हड़बूजी और मेहाजी मांगलिया को '**पंच पीर**' के रूप में पूजा जाता है।
- ◆ राजस्थान के पंच पीर जिन्हें हिंदू और मुसलमान दोनों समान श्रद्धा से पूजते हैं। इनके लिए एक प्रसिद्ध दोहा प्रचलित है:-
"पाबू, हरभू, रामदे, मांगलिया, मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो, गोगाजी जेहा।।"

पंच पीर



रामदेवजी

- ◆ **जन्म** - भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को उंडूकाशमीर/उंडूकासमेर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में।
- ◆ **अवतार** - श्रीकृष्ण का
- ◆ **पिता का नाम** - अजमलजी तंवर और **माता** - मैणादे
- ◆ **पत्नी** - नेतलदे और
- ◆ **सगी बहनें** - लाछा बाई, सुगना बाई
- ◆ **मुँह बोली बहन** - डाली बाई
- ◆ **गुरु** - बालीनाथ (बालीनाथजी का मन्दिर - मसूरिया, जोधपुर में)

उपनाम व अवतार:-

1.	कृष्ण का अवतार
2.	रुणिचा रो धणी
3.	रामसा पीर
4.	पीरों का पीर
5.	साम्प्रदायिक सद्भाव के लोक देवता
6.	अर्जुन का वंशज
7.	मांड प्रदेश रा राजा
8.	अछूतोहदारक
9.	कुष्ठ रोग निवारक
10.	अजमाल जी रा कंवरा
12.	मैणा दे रा लाल
13.	रुणीचे राधणी

- ◆ **शिष्य** - हरजी भाटी और **शिष्या** - आई माता
- ◆ **सवारी** - लीला घोड़ा (रेवंत) और **प्रतीक चिह्न** - पगल्यां
- ◆ **समाधि** - रूपेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ल एकादशी को ली।
- ◆ रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहन डाली बाई ने उनसे पहले समाधि ली। (भाद्रपद शुक्ल दशमी)
- ◆ **प्रमुख पूजा स्थल** - रामदेवरा (रूपेचा, जैसलमेर)
- ◆ **अन्य पूजा स्थल** - मसूरिया (जोधपुर), बिराठिया (पाली), बिठूजा (बालोतरा), सूरताखेड़ा (चित्तौड़गढ़), छोटा रामदेवरा (जूनागढ़, गुजरात)।

- ◆ इस मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने करवाया था।
- ◆ **मेला** - प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक।
- ◆ **नेजा** - रामदेवजी की पचरंगी व सफेद ध्वजा।
- ◆ **रिखियां** - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- ◆ **ब्यावले** - भक्तों द्वारा गाये जाने वाले भजन।
- ◆ **जम्मा** - रामदेवजी के नाम पर भाद्रपद शुक्ल द्वितीया व एकादशी को रात्री जागरण दिलाया जाता है, उसे जम्मा कहते हैं। (अर्द्ध रात्रि जागरण)
- ◆ **परचा** - रामदेवजी के चमत्कारों को परचा कहते हैं।
- ◆ **आण** - रामदेवजी के अनुयायी रामदेवजी की सौगंध को आण कहते हैं। **पूजारी** - तँवर राजपूत होते हैं।
- ◆ **तेहरताली नृत्य** - रामदेवजी के मेले में कामड़िया जाति की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- ◆ **फड़** - रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- ◆ **कामड़िया पंथ** - राजस्थान में कामड़िया पंथ के प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली), पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना आदि हैं।
- ◆ **प्रसिद्ध रचना** - चौबीस बाणियाँ।

रामदेवजी पर लिखे गए महत्वपूर्ण ग्रंथ

क्र. सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक / रचनाकार
1.	रामदेवजी का ब्यावला	पूनमचंद
2.	श्री रामदेव जी चरित	ठा. रूद्रसिंह तोमर
3.	श्री रामदेव प्रकाश	पुरोहित रामसिंह
4.	रामसापीर अवतार लीला	ब्राह्मण गौरीदासात्मक
5.	श्री रामदेव जी वेलि	हरजी भाटी
6.	रामदेव लीलामृत	लक्ष्मीदत्त बारहठ
7.	श्री रामदेव जीवन रत्नावली	वैद्य पुष्पापुरी गोस्वामी

रामदेवजी से संबंधित प्रमुख शब्दावलियाँ

शब्दावली	अर्थ / विवरण
पगल्या	रामदेवजी का प्रतीक चिह्न (चबूतरे पर निर्मित)
थान	पगल्ये स्थापना का स्थान
कामड़िया पंथ	रामदेवजी द्वारा स्थापित पंथ
तेरहताली नृत्य	रामदेवजी के मेले में कामड़ जाति की स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
रिखिया	रामदेवजी के मेघवाल भक्त
परचा	रामदेव जी के चमत्कार
ब्यावले	रामदेवजी के भक्तों द्वारा गाये जाने वाले भजन
जम्मा	रामदेवजी के नाम अर्द्धरात्री जागरण (भाद्रपद द्वितीया व एकादशी को)
नेजा	रामदेवजी के मंदिरों पर फहराई जाने वाली पाँच रंगों की ध्वजा (ध्वजा पर लाल रंग से रामदेव के पगल्ये बने होते हैं)
लीलो (रेवंत)	रामदेवजी का घोड़ा
बाबे री बीज	भाद्रपद शुक्ल द्वितीया
देवरा	रामदेवजी का मंदिर
फूल	गले में पहनी जाने वाली सोने या चाँदी की पातड़ी जिस पर रामदेव जी की मूर्ति अंकित होती है।

पाबूजी राठौड़

- ♦ **जन्म व वंश:-** इनका जन्म चैत्र अमावस्या (1239ई.) में फलौदी के कोलूमण्ड में राठौड़ वंश (राठौड़ों के मूल पुरुष राव सीहा के वंशज) में हुआ था।
- ♦ **परिवार:-** पिता धांधल जी राठौड़ (राव धूहड़ के भाई), माता कमलादे,
- ♦ **पत्नी:-** फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट के सूरजमल सोढ़ा की पुत्री)।
- ♦ **घोड़ी:-** इनकी प्रसिद्ध घोड़ी का नाम 'केसर कालमी' (देवल चारणी नामक महिला की) था।
- ♦ भाई - बूढोजी
- ♦ बहिन- पेमल/ पेम कंवर
- ♦ बहनोई- जीन्दराव खीची (जायल, नागौर के शासक)
- ♦ गुरु - समरथ भारती

उपनाम

1.	लक्ष्मण का अवतार
2.	ऊँट रक्षक देवता (ऊँटों के देवता)
3.	सर्रा रोग निवारक देवता
4.	गौरक्षक देवता
5.	प्लेग रक्षक देवता
6.	हाड़-फाड़ के देवता
7.	राइका/ रेबारी/ देवासी जाति के आराध्य देवता
8.	अछूतोद्धारक
9.	मेंहरपीर
10.	प्रतिज्ञापालक
11.	शरणागतवत्सल देवता

- ♦ **पाँच प्रमुख साथी:-** इनके मुख्य सहयोगियों में चांदोजी, सावंतजी, डेमाजी (चांदा-डामा), हरमल राइका जी और सलजी सोलंकी शामिल थे।
- ♦ **विवाह प्रसंग व वीरगति:-** विवाह के फेरों के मध्य इनके बहनोई जींदराव खीची (जायल नरेश) ने पूर्व शत्रुता के कारण 'देवल चारणी' की गायों को घेर लिया। देवल की पुकार पर पाबूजी चौथे फेरे से उठकर केसर कालमी पर सवार होकर गए और 1276 ई. में 'देचू' गाँव में गायों की रक्षार्थ वीरगति को प्राप्त हुए। (इसी कारण राजस्थान में चौथे फेरे के बाद ही विवाह संपन्न मान लिया जाता है)।
- ♦ **तीर्थ स्थल व मेला:-** पाबूजी का मुख्य तीर्थ स्थल 'कोलूमण्ड' (फलौदी) में स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को इनकी पावन स्मृति में एक विशाल मेला लगता है।
- ♦ **अन्य मंदिर:-** 1. देचू (फलौदी) 2. आहड़ (उदयपुर)
- ♦ **प्रतीक व वेशभूषा:-** इनका प्रतीक चिह्न 'भाला लिए अश्वारोही' है और बोध चिह्न 'भाला' है। ये अपनी बायीं तरफ झुकी हुई पाग और प्रसिद्ध 'केसर कालमी' घोड़ी के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं।
- ♦ **ऊँटों के देवता:-** मारवाड़ में ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को ही है, इसलिए इन्हें 'ऊँटों का देवता' कहते हैं।
- ♦ ऊँट बीमार होने पर इनकी पूजा होती है और ऊँट पालक 'राइका/ रेबारी/ देवासी' जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती है। (ये मेहर मुसलमान और भील जाति में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं)।
- ♦ **धार्मिक समन्वय:-** मेहर जाति के मुसलमान पाबूजी को 'पीर' मानकर पूजते हैं।
- ♦ 'नैणसी री ख्यात' के अनुसार थोरी जाति के लोग इनके प्रमुख अनुयायी हैं, जो 'सारंगी' वाद्ययंत्र के साथ पाबूजी की यश गाथा गाते हैं, जिसे 'पाबूधणी री वाचना' कहा जाता है।

- ♦ **पवाड़े:-** किसी बहादुर पुरुष के विशेष कार्यों का वर्णन करने वाली लोक गाथा पवाड़ा कहलाती है।
- ♦ **'पाबूजी के पवाड़े'** थोरी जाति के लोगों द्वारा 'माठ' वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- ♦ लंबा कथानक होने पर इसे 'झीड़ा' कहा जाता है।
- ♦ हीरानन्द सूरि के ग्रंथ **विद्याविलास** 'में सर्वप्रथम पवाड़ा शब्द उल्लेख हुआ है।
- ♦ राजस्थान में पाबूजी के पवाड़े सर्वाधिक प्रसिद्ध है।
- ♦ **पाबू धणी री वाचना-** थोरी जाति के लोग सारंगी के साथ पाबूजी के यशगान

पाबूजी के शिष्य

- ♦ मुख्यतः रेबारी / राइका/ देवासी जाति के लोग
- ♦ ऊँटों के बीमार होने पर पाबूजी की भक्ति करते हैं व उनके ठीक होने की मन्नत (मनौती) मांगते हैं।

देचू का युद्ध (फलौदी)- 1276 ई.

- ♦ जीन्दराव खीची और पाबूजी राठौड़ \$ बुढोजी के मध्य
- ♦ जीन्दराव खीची देवल चारणी की गायों को चुरा लिया था।
- ♦ देवल चारणी गायों की रक्षा के लिए पाबूजी वीरगति को प्राप्त हुए।
- ♦ फूलम दे पाबूजी के साथ में सती हुई थी।
- ♦ वीरता, प्रतिज्ञापालन, त्याग, शरणागत, वत्सलता एवं गौ-रक्षा हेतु बलिदान होने के कारण जनमानस इन्हें लोकदेवता के रूप में पूजता है।
- ♦ पाबूजी ने आना बघेला के विरुद्ध गुजरात के सात थोरी भाइयों को शरण प्रदान कर शरणागत वत्सलता का परिचय दिया था।

पाबूजी पर लिखित महत्वपूर्ण रचनाएँ

रचना	रचनाकार
पाबू प्रकाश	आशिया मोडजी
पाबूजी रा सोरठा	रामनाथ कविया
पाबूजी रा छन्द	बीठू मेहा / मेहा चारण
पाबूजी रा रूपक	मोतीसर बख्तावर
पाबूजी रा दुहा	लघराज
पाबूजी के गीत	बांकीदास
पाबूजी री बात	लक्ष्मी कुमारी चूडात
दूहा पाबू धांधलोत रा	देवा आशिया
पाबूजी री फड़	डॉ. महेंद्र भानावत
प्रणवीर पाबूजी	निर्मोही व्यास

पाबूजी की फड़

- ♦ यह राजस्थान की सभी फड़ों में से सर्वाधिक लोकप्रिय फड़ मानी जाती है।
- ♦ नायक या भील जाति के भोपे-भोपियों द्वारा इस फड़ का वाचन रात के समय किया जाता है।
- ♦ फड़ वाचन के दौरान मुख्य रूप से 'रावणहत्था' नामक तत् वाद्ययंत्र बजाया जाता है।
- ♦ मुख्य रूप से ऊँटों के बीमार होने व उनके स्वस्थ होने की मन्नत पूरी होने पर इस फड़ को बाँचा जाता है।

गोगाजी चौहान

- ♦ **जन्म** - वि. सं. 1003 1003 विक्रम संवत् (भाद्रपद कृष्ण नवमी) को ददरेवा (चूरू) में।
- ♦ **पिता** - जेवरजी चौहान
- ♦ **माता** - बाछल दे
- ♦ **पत्नी** - केलमदे व सूरियल राजकुमारी

❖ सवारी - नीली घोड़ी (गोगा बप्पा)।

उपनाम:-

1.	सर्पक्षक देवता
2.	गौरक्षक देवता
3.	नागराज (हिन्दू)
4.	गोगापीर (मुस्लिम)
5.	राजा मंडलीक
6.	बांगड का राजा
7.	हरिजन जाति के आराध्य देवता (वाल्मीकि समाज)
8.	सर्पों के देवता
9.	जाहर पीर
10.	गोगा बप्पा

- ❖ **सांकल नृत्य** - गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु नृत्य करते हैं। इस नृत्य में भक्त लोहे की साँकलों के गुच्छे अपनी पीठ पर उठा-उठाकर मारते हैं, जिसे छाया चढ़ाना कहते हैं।
- ❖ **गोगा राखड़ी** - किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- ❖ गोगाजी का अपने मौसरे भाइयों अर्जन और सुर्जन के साथ जमीन-जायदाद को लेकर विवाद था। अर्जन और सुर्जन ने मुस्लिम आक्रांता महमूद गजनवी की सहायता से गोगाजी पर आक्रमण किया। गोगाजी ने वीरतापूर्वक संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त की।
- ❖ युद्ध के दौरान गोगाजी को सिरविहीन देख महमूद गजनवी ने उन्हें "जाहिर पीर" (साक्षात पीर) कहा।
- ❖ युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा, जिस कारण इस स्थान को "शीर्षमेड़ी" या "शीषमेड़ी" कहा जाता है।
- ❖ उनका धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा, जिसके कारण इस स्थान को "धड़मेड़ी," "धुरमेड़ी," या "गोगामेड़ी" के नाम से जाना जाता है।

❖ मुख्य मंदिर

1. धुरमेड़ी या गोगामेड़ी (नोहर, हनुमानगढ़)

- ❖ युद्ध करते समय गोगाजी का धड़ यहाँ गिरा, इसलिए इसे धड़मेड़ी/धुरमेड़ी या गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- ❖ निर्माण - फिरोजशाह तुगलक ने
- ❖ गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर 'बिस्मिल्लाह' लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है।
- ❖ वर्तमान स्वरूप - बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है।

2. शीर्षमेड़ी (ददरेवा)

- ❖ युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेड़ी (शीषमेड़ी) कहते हैं।

3. गोगाजी की ओल्डी

- ❖ खिलेरियों की ढाणी, सांचौर (जालौर)
- ❖ **मेला**- प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्ण नवमी) को गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में।

क्र. स.	ग्रंथ	लेखक
1.	गोगाजी रा रसावला	बीठू मेहा
2.	कायम खां रासो (क्याम खां रासो)	न्यामत खां (जानकवि)
3.	गोगाजी री पेड़ी	आसा चारण
4.	गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा	चन्द्रदान चारण

गोगाजी से संबंधित प्रमुख शब्दावलि

बनी / ओरण	गोगा मेड़ी के चारों ओर फैला जंगल
गोगाजी का थान	गोगाजी के थान खेजड़ी वृक्ष के नीचे होते हैं, जहाँ मूर्ति स्वरूप एक पत्थर पर सर्प की आकृति अंकित रहती है।
प्रसिद्ध कहावत	"गाँव-गाँव खेजड़ी ने, गाँव-गाँव गोगो।"
गोगा राखड़ी	नौ गाँठ वाली गोगाजी के नाम की राखी (राजस्थान का किसान वर्षा के बाद हल जोतने से पहले गोगाजी के नाम हल व हाली को गोगा राखड़ी बांधता है।)
नीली घोड़ी	गोगाजी की सवारी।
जवाड़िया	गोगाजी के घोड़े का नाम (जेम्स टॉड के अनुसार)
गीत	छावली
ध्वजा	निसाण
सहयोगी	जवाहर पांड्या, भज्जू कोतवाल, कनरा वाल्मीकि

हड़बूजी

- ❖ **जन्म व परिवार:-** इनका जन्म भुंडेल (नागौर) में मेहाजी सांखला व सौभाग्य देवी के घर 14 वीं शताब्दी में हुआ।
- ❖ इनकी पत्नी सुगन कंवर थीं।
- ❖ यह बाबा रामदेवजी के मौसरे भाई थे।
- ❖ गुरु- बाली नाथ जी (मसूरिया पहाड़ी, जोधपुर)
- ❖ वाहन - सिया/सियार

उपनाम

1.	शकुन शास्त्री/ शकुन शास्त्र के ज्ञाता
2.	वचनसिद्ध
3.	चमत्कारी (करामाती) महापुरुष

- ❖ **दीक्षा व वैराग्य:-** पिता की मृत्यु के बाद भुंडेल छोड़कर हरभमजाल (फलोदी में आकर) में रहने लगे, जहाँ रामदेवजी की प्रेरणा से अस्त्र-शस्त्र त्यागकर गुरु बालीनाथ जी से दीक्षा ली।
- ❖ **राव जोधा से संबंध:-** ये जोधपुर के राव जोधा के समकालीन थे।
- ❖ हड़बूजी ने राव जोधा को कटार (खंजर) भेंट की व मंडोर जीतने का आशीर्वाद प्रदान किया।
- ❖ राव जोधा ने हड़बूजी को बेंगटी गाँव (फलोदी) में 52 हजार बीघा भूमि प्रदान की उदयपुर जिसे 'बावन जागरी' कहा जाता है।
- ❖ हड़बूजी यहाँ पर बुढ़ी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे।
- ❖ जोधपुर के महाराजा महाराजा अजीत अजीत सिंह ने 1721 ई. में बेंगटी में हड़बूजी के मंदिर (खर्च - 7000 ₹) का निर्माण करवाया।
- ❖ इस मंदिर में **हड़बूजी की बैलगाड़ी की पूजा** की जाती है।
- ❖ **मंदिर व गाड़ी पूजा:-** बेंगटी में इनका मुख्य मंदिर स्थित है, जहाँ श्रद्धालु इनकी लकड़ी की गाड़ी (छकड़ा गाड़ी) की पूजा करते हैं, जिससे वे अपंग गायों के लिए चारा लाते थे। ये राजस्थान के एकमात्र ऐसे लोकदेवता हैं जिनकी गाड़ी की पूजा होती है।
- ❖ **विशेषताएं व पुजारी:-** इन्हें शगुनशास्त्री, वचनसिद्ध और चमत्कारी पुरुष माना जाता है।
- ❖ इनके पुजारी 'सांखला राजपूत' होते हैं तथा इनके जीवन पर 'सांखला हरभू का हाल' नामक प्रमुख ग्रंथ लिखा गया है।

मेहाजी

- ♦ **जन्म** - भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, 13वीं शताब्दी में मेवाड़ के गुहिल राजवंश की मांगलिया शाखा में (टोंड के अनुसार)
- ♦ **जन्म स्थान** - तापू (जोधपुर)
- ♦ **पिता**- केलु जी
- ♦ **माता** - मायड़ दे
- ♦ **पत्नी** - हीरा दे
- ♦ **घोड़ा** - किरड़ काबरा
- ♦ **समकालीन** :- ये मारवाड़ के राव चूण्डा (मारवाड़) के समकालीन थे।
- ♦ **उपनाम**:- इन्हें गौरक्षक, उज्जवल क्षत्रिय, निर्बलों के सहायक और शकुन शास्त्र का अच्छा ज्ञाता (शकुन शास्त्री) माना जाता है।
- ♦ **मुख्य मंदिर व घोड़ा**:- इनका मुख्य मंदिर बापणी (जोधपुर) में स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी के दिन) को विशाल मेला भरता है।
- ♦ इनके प्रिय घोड़े का नाम 'किरड़ काबरा' था।
- ♦ धर्म बहिन पाना गूर्जरी / हेकूकी गूर्जरी
- ♦ **वीरगति**:- अपनी धर्म बहिन की गायों की रक्षा के लिए जैसलमेर के रणगदेव भाटी के विरुद्ध लड़ते हुए रातड़िया मंगरा (बीकानेर) नामक स्थान पर वीरगति को प्राप्त हुए।
- ♦ **विशेष मान्यता**:- लोक मान्यता के अनुसार इनकी पूजा करने वाले भोपों की वंश वृद्धि नहीं होती है, वे गोद लेकर अपनी पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं।
- ♦ इन पर रचित प्रमुख ग्रंथ "वीर मेहा प्रकाश" है, जिसके लेखक जसदान बिठू हैं।
- ♦ मंडोर (जोधपुर) के प्रतिहारों में इनका ननिहाल था।
- ♦ **मेहाजी से संबंधित पुस्तकें**:-
 1. वीर मेहा प्रकाश - जसदान बिठू
 2. मांगलिया महाकाव्य - महेन्द्रसिंह छायाण

तेजाजी

- ♦ **जन्म व वंश**:- माघ शुक्ल चतुर्दशी (1073 ई.) को खड़नाल (नागौर) में। ये धौलिया गोत्र के जाट थे।
- ♦ **माता-पिता व पत्नी**:- पिता ताहड़ जी, माता रामकुंवरी
- ♦ पत्नी पेमलदे (पनेर के रामचंद्र की पुत्री) थीं। पेमलदे इनके साथ सती हुई थीं।
- ♦ ससुराल- पनेर (अजमेर)
- ♦ बहिन- राजल, भोगरी/बूंगरी माता

उपनाम

1.	काला व बाला के देवता
2.	कृषि कार्यों के उपकारक देवता
3.	गौरक्षक देवता/ गायों के मुक्तिदाता
4.	सर्प रक्षक देवता/ नागों के देवता
5.	धौलिया वीर (धौलिया गोत्र में जन्म होने के कारण)
6.	शिव के अवतार
7.	साँपों के देवता
8.	जाट जाति के प्रमुख आराध्य देवता
9.	सहरिया जनजाति के आराध्य देवता

तेजाजी से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

बिंदु/ श्रेणी	विवरण
प्रमुख मंदिर	परबतसर (डीडवाना-कुचामन) - इसका निर्माण जोधपुर महाराजा अभयसिंह द्वारा करवाया गया था।
मेला	तेजादशमी (भाद्रपद शुक्ल दशमी) के अवसर पर पंचमी से पूर्णिमा तक परबतसर में विशाल पशु मेला लगता है।
प्रतीक	तलवार धारी अश्वरोही और जीह्वा पर सर्पदंश करते हुए मूर्ति
घोड़ी	लीलण / सिणगारी
थान	तेजाजी का चबूतरा
घोड़ला	तेजाजी का पुजारी

- ♦ **डाक टिकट** - सन् 2011 में इन पर 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।
- ♦ **सर्पदंश मान्यता**:- ग्रामीण क्षेत्रों में मान्यता है कि सर्पदंश पीड़ित व्यक्ति के दाएँ पैर में 'तेजाजी की तांत (डोरी)' बाँधने पर विष नहीं चढ़ता। देश में कहीं भी तेजाजी का नया मंदिर बनने पर 'जागती जोत' सुरसुरा (अजमेर) से ही ले जाई जाती है।
- ♦ **कृषि व लोक संस्कृति**:- इन्हें कृषि कार्यों के उपासक देवता के रूप में पूजा जाता है। किसान खेत जोतते समय सर्वप्रथम इनके जीवनी गीत गाते हैं, जिसे 'तेजा टेर' कहते हैं। होलिका दहन के बाद भी इनकी जीवनी गाने की परंपरा है।
- ♦ **ऐतिहासिक प्रसंग**:- जब तेजाजी अपनी पत्नी पेमल को लेने ससुराल पनेर गए हुए थे, ठीक उसी दिन मेर के मीणा लाछा गूजरी की गायें चुराकर ले गए थे (जिसके बाद तेजाजी ने गायों की रक्षा हेतु संघर्ष किया)।
- ♦ **धर्म बहिन** - लाछा गुर्जरी
- ♦ इनकी गायों की रक्षा के लिए तेजाजी ने मंडावरिया नामक स्थान पर मेर के मीणाओं से युद्ध किया था।
- ♦ **वीरगति का प्रसंग**: लाछा गुर्जरी की प्रार्थना पर गायें छुड़ाने जाते समय सुरसुरा में उन्हें एक सर्प मिला। भीषण युद्ध में अत्यधिक घायल होने के बावजूद तेजाजी वचनानुसार वापस लौटे और पूरा शरीर लहलुहान होने के कारण सर्पदंश के लिए अपनी जिह्वा (जीभ) आगे कर दी। इसी कारण भाद्रपद शुक्ल दशमी को उन्होंने प्राण त्यागे।
- ♦ **महाप्रयाण**:- भाद्रपद शुक्ल दशमी (1103 ई.) को सुरसुरा (किशनगढ़, अजमेर) नामक स्थान पर इनका देहावसान हुआ।
- ♦ **ससुराल** :- इनके ससुराल पनेर (अजमेर) में एक सामान्य मंदिर है जिसमें तीन मूर्तियाँ स्थापित हैं।
- ♦ **कर्मस्थली** - **बासी दुगारी गाँव (बूँदी)** तेजाजी की मुख्य कर्मस्थली रहा है।

तेजाजी के मंदिर

1. सुरसुरा - तेजाजी का समाधि स्थल (अजमेर)

- ♦ यहाँ पर सर्पदंश के कारण भाद्रपद शुक्ल दशमी को तेजाजी का देवलोकगमन हुआ था। (1103 ई. में 30 वर्ष की आयु में)

- भारत में किसी स्थान पर तेजाजी के नए मंदिर के निर्माण के लिए उम्र 'यहाँ 'जागती जीत' ले जाई जाती है।

2. परबतसर

- तेजाजी का मुख्य मंदिर (डीडवाना कुचामन)
- निर्माण महाराजा अभयसिंह द्वारा भण्डारी विजयराज की देखरेख में (1734 ई.)

- मेला भाद्रपद शुक्ल दशमी (तेजा दशमी)
- नागौरी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय

3. खरनाल - नागौर

- तेजाजी का जन्म स्थल
- यहाँ पर भी तेजाजी का मंदिर बना हुआ है।

4. तेजा चौक - ब्यावर

5. सैंदरिया - ब्यावर

- भावता - अजमेर
- केलवाड़ा - शाहबाद (बारां)

- मूर्ति स्थापना:-** जोधपुर महाराजा अभय सिंह के शासनकाल में परबतसर के हाकिम द्वारा तेजाजी की मुख्य मूर्ति को सुरसुरा से लाकर परबतसर में स्थापित किया गया था।

तेजाजी से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

बिंदु / श्रेणी	विवरण
प्रमुख मंदिर	परबतसर (डीडवाना-कुचामन) - इसका निर्माण जोधपुर महाराजा अभयसिंह द्वारा करवाया गया था।
मेला	तेजादशमी (भाद्रपद शुक्ल दशमी) के अवसर पर पंचमी से पूर्णिमा तक परबतसर में विशाल पशु मेला लगता है।
घोड़ी	लीलण / सिणगारी
थान	तेजाजी का चबूतरा
घोड़ला	तेजाजी का पुजारी

तेजाजी से संबंधित महत्त्वपूर्ण रचनाएँ

रचना का नाम	लेखक / रचयिता
तेजाजी का ब्यावला	बंशीधर शर्मा
तेजाजी का शिलोका	पूनम चंद सिखवाल
वीरवर जाट तेजाजी	कवि अम्बालाल
तेजा लीला	रामगोपाल शिवराम राव
जूँझार तेजा	महत्ता लज्जाराम शर्मा
वीर तेजा	व्यास सूर्य राज शर्मा
लोक देवता तेजाजी भारत	डॉ. महेन्द्र भानावत

वीर कल्लाजी राठौड़

- जन्म:-** आश्विन शुक्ल अष्टमी -1544 ई. को सामियाना गाँव, मेड़ता (नागौर) में
- पिता - अचलसिंह जी
- माता - श्वेत कंवर
- चाचा - जयमल मेड़तिया

- बचपन का नाम- केसर सिंह
- बुआ - मीरां बाई
- कुलदेवी - नागणेची माता
- गुरु - योगी भैरवनाथ

उपनाम

1.	शेषनाग का का अवतार
2.	चार हाथ वाले लोकदेवता
3.	भाथी खत्री (गुजरात)
4.	वीर नायक (मालवा)
5.	भूत-प्रेत भगाने वाले लोकदेवता
6.	अफीम व केसर वाले लोकदेवता
7.	केहर
8.	कल्याण
9.	कमधज
10.	कमधण
11.	योगी
12.	संन्यासी
13.	दो सिर वाले देवता
14.	बाल ब्रह्मचारी

- मुख्य पीठ/आदि स्थान- रनेला/ रुण्डेला (सलूमबर)
- मंदिर - सामलिया (डूंगरपुर) - वनवासियों का तीर्थस्थल
- समकालीन शासक - 1. महाराणा उदय सिंह (मेवाड़) 2. अकबर
- कल्ला जी की मंगेतर** - कृष्णा कंवर (शिवगढ़)
- ऐतिहासिक प्रसंग:-** अकबर के चित्तौड़ आक्रमण (1568 ई.) के समय मेवाड़ शासक उदयसिंह के काल में इन्होंने घायल जयमल मेड़तिया को अपने कंधों पर बिठाकर युद्ध किया। दोनों ने दो-दो हाथों में तलवारें ली थीं, जिससे इन्हें 'चार हाथों वाले देवता' की ख्याति मिली।

- चित्तौड़ का तीसरा साका** - अकबर के समय (24 फरवरी, 1568)
- केसरिया - जयमल -फ़ता और कल्ला राठौड़
- जौहर - फूलकंवर

- मान्यता व पूजा:-** इनकी पूजा नाग रूप में भी की जाती है। ग्रामीण अंचलों में आज भी लोग कल्लाजी का आह्वान करके सर्पदंश का उपचार करते हैं।
- मुख्य पीठ व श्रृंगार:-** डूंगरपुर जिले के सामलिया गाँव में कल्लाजी की हाथ में तलवार लिए, घोड़े पर सवार काले पत्थर की मूर्ति है, जहाँ प्रतिदिन **केसर व अफीम** चढ़ाई जाती है। इनकी मुख्य पीठ गाँव **रूण्डेला/रनेला (सलूमबर)** में स्थित है।
- विशिष्टता:-** ये इतिहास में **दूल्हे के वेश में वीरगति** पाने वाले एकमात्र लोकदेवता माने जाते हैं। चित्तौड़गढ़ दुर्ग के भैरव पोल पर इनकी **4 खम्भों की छतरी** बनी हुई है।
- पुजारी व उपचार:-** इनके मंदिर का मुख्य सेवक '**किरणधारी**' कहलाता है। मान्यता है कि रविवार को कल्लाजी की आत्मा पुजारी के शरीर में प्रवेश करती है, जो तलवार की सहायता से लोगों के कष्टों व रोगों का उपचार करते हैं।
- प्रसिद्धि व भौगोलिक नाम:-** म.प्र., मारवाड़, मेवाड़ और वागड़ में इनके करीब 500 मंदिर हैं, जहाँ पुजारी सर्पदंश का भी इलाज करते हैं। इन्हें **गुजरात में 'भाथी खत्री'** और **मालवा में 'वीरनायक'** के रूप में पूजा जाता है।

रूपनाथ जी/झरड़ा जी

- ❖ **वंश व परिचय:-** ये लोक देवता पाबूजी राठौड़ के बड़े भाई बूढ़ो जी के पुत्र (यानी पाबूजी के भतीजे) थे।
- ❖ माता - केसर कंवर
- ❖ उपनाम - 1. रूपनाथ जी, 2. बालकनाथ जी (हिमाचल प्रदेश)
- ❖ **ऐतिहासिक बदला:-** इन्होंने मात्र 12 वर्ष की उम्र में जायल (नागौर) के शासक **जींदराव खींची का वध कर** अपने पिता (बूढ़ो जी) और चाचा (पाबूजी) की मृत्यु का बदला लिया था। इन्हें हिमाचल प्रदेश में 'बालकनाथ' के रूप में पूजा जाता है।
- ❖ **मान्यता व थान:-** इन्हें हिमाचल प्रदेश में 'बालकनाथ' के रूप में बड़ी श्रद्धा से पूजा जाता है।
- ❖ **मुख्य मंदिर:-** इनका मुख्य मंदिर व जन्मस्थान **कोलूमण्ड (फलोदी)** है।
- ❖ इसके अतिरिक्त इनका एक अन्य प्रसिद्ध मंदिर **सिंभूदड़ा (नोखा मंडी, बीकानेर)** में भी स्थित है।

बाबा झुंझारजी

- ❖ **जन्म व वीरगति:-** इनका जन्म **इमलोहा गाँव (सीकर)** के एक राजपूत परिवार में हुआ था।
- ❖ ये मुस्लिम लुटेरों से गायों की रक्षार्थ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।
- ❖ **उपनाम** - गौरक्षक देवता
- ❖ **मुख्य थान व मेला:-** इनका थान अमूमन **खेजड़ी वृक्ष के नीचे** होता है।
- ❖ इनका मुख्य मंदिर **स्यालोदड़ा (सीकर) [दूल्हा-दूल्हन व तीन भाइयों की मूर्तियाँ]** में स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष **रामनवमी** के अवसर पर भव्य मेला भरता है।

वीर बिगाजी

- ❖ **जन्म व वंश:-** बीकानेर के **रीड़ी गाँव** में राव महन और सुल्तानी देवी के घर जन्म।
- ❖ वाहन - शायर
- ❖ यह **जाखड़ गोत्र (जाट)** के कुलदेवता माने जाते हैं।
- ❖ **उपनाम** - **जाखड़ गोत्र (जाट)** समाज के कुलदेवता, गौरक्षक देवता
- ❖ **गौरक्षा व वीरगति:-** इन्हें गायों से विशेष लगाव था। ये राँठ (राठ) मुस्लिम लुटेरों से गायों को छुड़ाते हुए भीषण संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुए थे।
- ❖ मेला- प्रतिवर्ष 14 अक्टूबर को
- ❖ **प्रमुख मंदिर (देवली):-** इनका मुख्य मंदिर रीड़ी (बीकानेर) में है, जिसे '**शीश देवली**' कहते हैं (यहाँ आश्विन शुक्ल त्रयोदशी को मेला भरता है)।
- ❖ इनका दूसरा प्रमुख मंदिर बिगा गाँव में है, जो '**धड़ देवली**' कहलाता है।

भूरिया बाबा (बाबा गौतमेश्वर)

- ❖ **आस्था व मान्यता:-** ये मीणा जनजाति के परम इष्ट देवता हैं।
- ❖ गोडवाड़ क्षेत्र के मीणाओं के आराध्य देवता
- ❖ मीणा जनजाति के लोग इनकी कसम लेने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- ❖ भूरिया बाबा (गौतमेश्वर) मेला- सिरौही
- ❖ **प्रमुख थान/मंदिर:-** इनका मुख्य स्थान गोडवाड़ अंचल में **चोटिला गाँव (सिरौही)** की पहाड़ियों में स्थित है।
- ❖ इनका दूसरा लोकप्रिय मंदिर **अरनोद (प्रतापगढ़)** में है, जहाँ वैशाख शुक्ल एकादशी से ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया तक भव्य लक्खी मेला भरता है।
- ❖ **अस्थि विसर्जन परंपरा:-** सूकड़ी नदी के दाएँ तट पर स्थित इनके मंदिर/मेले के अवसर पर मीणा समुदाय के लोग अपने **पूर्वजों की अस्थियाँ नदी में प्रवाहित** करते हैं और इसे गंगा के समान पवित्र मानते हैं।

केसरिया कुंवरजी

- ❖ जन्म - ददरेवा (चुरू)
- ❖ **वंश व परिचय:-** ये लोक देवता **गोगाजी चौहान के पुत्र** थे और अपने पिता की तरह ही चमत्कारी लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- ❖ **उपनाम** - सर्प रक्षक देवता
- ❖ **मंदिर** - 1. ददरेवा (चुरू) 2. ब्रह्मसर (हनुमानगढ़)
- ❖ **उपचार शैली:-** इनके थान पर सर्पदंश का उपचार किया जाता है। इनके भोपे पीड़ित व्यक्ति के शरीर से सर्प का जहर अपने **मुँह से चूसकर** बाहर निकालते हैं।
- ❖ **प्रतीक:-** केसरिया कुँवर जी के थान/मंदिर पर हमेशा **सफेद रंग की ध्वजा (झंडा)** फहराई जाती है।

भोमियाजी

- ❖ गाँव-गाँव में भूमि रक्षक देवता के रूप में प्रसिद्ध।

प्रमुख भौमिया जी

- ❖ झुंझार दादोसा भौमिया - चुरू
- ❖ सूरजमल भौमिया - दौसा
- ❖ हरदीन भौमिया - नागौर
- ❖ नाहरसिंह भौमिया - जयपुर
- ❖ लक्कडहारा भौमिया - जैसलमेर

खेतलाजी

- ❖ प्रमुख मंदिर - सोनाणा गाँव, पाली
- ❖ मेला - प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल एकम्
- ❖ यहाँ पर तोतले व हकलाने वाले बच्चों का इलाज किया जाता है।

आलमजी

- प्रमुख मंदिर - धोरीमन्ना, बाड़मेर
- मूल नाम - जैतमलोत राठौड़
- यहाँ भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को मेला भी भरता है।
- यहाँ पर घोड़ों की जात लगती है।
- मालाणी, बाड़मेर में लूणी नदी के किनारे ढांगी नाम के रेतीले टीले पर उनका स्थान बना हुआ है, जिसे आलम जी का धोरा भी कहते हैं।
- यहाँ घोड़ी प्रजनन केन्द्र स्थित है।

देवनारायणजी

- जन्म:-** माघ शुक्ल षष्ठी (1243 ई.) को मालासेरी डूंगरी, गोठा-दडावत, आसीन्द (भीलवाड़ा) में।
- वंश:-** ये बगड़ावत कुल के नागवंशीय गुर्जर थे, जिनका लालन-पालन ननिहाल देवास (म.प्र.) में हुआ।
- पिता-** पिता सवाई भोज (अपने 23 भाइयों के साथ भिनाय के सामंत दुर्जनसाल के विरुद्ध लड़ते हुए मारे गए)
- माता-** सेंदू खटानी (मालवा)
- पत्नी-** पीपल दे (धार-मालवा नरेश जयसिंह देव परमार की पुत्री) थीं।
- बचपन का नाम उदयसिंह था।
- गुरु - रूपनाथ जी
- सहयोगी- माकड़ जी
- घोड़ा- लीलाधर
- गाय - सरमाता
- कुल गायों की संख्या - 98,000
- प्रतीक 'सर्प' है।

उपनाम

1.	देवजी
2.	विष्णु के अवतार
3.	गौरक्षक देवता
4.	कमल अवतरित देवता।
5.	आयुर्वेद/तंत्र विद्या के ज्ञाता
6.	औषधि के ज्ञाता
7.	गुर्जर समाज के आराध्य देवता
8.	राज्य क्रांति के जनक

- सम कालीन देवता-** पाबूजी राठौड़
- देव जी की संताने - बीला एवं बीली
- मुख्य देवता व पूजा:-** मुख्य स्थल देवमालेसरी डूंगरी (आसींद, भीलवाड़ा- खारी नदी के पास) है, जहाँ भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।
- इनकी पूजा नीम की पत्तियों से की जाती है।
- पारिवारिक संघर्ष:-** इनके पिता सवाई भोज अपने 23 भाइयों (बगड़ावतों) सहित भिनाय के शासक से संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुए थे। देवनारायण जी ने भिनाय के शासक दुर्जनसाल का वध कर अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया।

अन्य प्रमुख मंदिर

1. देवधाम (जोधपुरिया, टोंक)

- वनस्थली विद्यापीठ के समीप
- बनास, बांडी व मासी नदियों के संगम पर।
- यहाँ पर देवजी ने तपस्या की थी।
- संपूर्ण भारत में गुर्जर समाज का यह सर्वाधिक पौराणिक मंदिर है।
- इस मंदिर की दीवानों पर बगड़ावतों की शौर्य गाथा के चित्र बने हुए।

2. देवमाली (ब्यावर) -

- देवजी ने यहाँ पर अंतिम समय व्यतीत किया था।
- 1290 ई. में मुस्लिम लूटरो से गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- यहाँ पर देवजी ने अपनी 'देह' त्यागी थी।

3. देवडूंगरी (चित्तौड़गढ़) -

- महाराणा सांगा द्वारा निर्माण।
- महाराणा सांगा के आराध्य देवता - देवजी

4. देवास (मध्य प्रदेश)

- देवजी का ननिहाल।
- यहाँ पर देवनारायण जी का बचपन बीता था।
- देवनारायण जी के देवों में उनकी प्रतिमा के स्थान पर ईंटों की पूजा होती है।
- ईंटों पर नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं। अतः इन्हें "ईंटों का श्याम" भी कहा जाता है।
- इनके देवों में छाछ राबड़ी का प्रसाद चढ़ाया जाता है।
- पुजारी - अविवाहित गूर्जरी
- भिनाय (अजमेर) शासक के कोप से बचाने के लिए सेंदू खटाणी इन्हें अपने ननिहाल मालवा ले गई थी।
- बड़े बड़े होने होने पर देवनारायण जी ने भिनाय के ठाकुर को मारकर अपने भाई महेन्दु को वहाँ का राजा बनाया।
- लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत के ग्रंथ 'देवनारायण बगड़ावत महागाथा' में बगड़ावतों व भिनाय के शासक के मध्य हुए युद्ध का रोचक वर्णन है।
- इस ग्रंथ में देवनारायण जी को चौहान वंश से संबंधित बताया गया है।
- इनके मुख्य अनुयायी गुर्जर हैं जो "देवजी की फड़" तथा देवनारायण जी और बगड़ावतों से संबंधित काव्य "बगड़ावत" के गायन द्वारा इनका यशोगान करते हैं।
- किंवदंती है कि हर रात तीन पहर गाये जाने पर यह छह माह में पूर्ण होता है।
- देवनारायण जी की फड़:-** गुर्जर भोपों द्वारा 'जंतर' वाद्ययंत्र के साथ इसका वाचन किया जाता है।
- यह राजस्थान की सबसे लंबी (बड़ी) और सबसे पुरानी फड़ मानी जाती है।
- फड़ का आकार:-** इनकी फड़ में कुल 335 गीत हैं, जो लगभग 1200 पृष्ठों और 15,000 पंक्तियों में संग्रहित हैं (इसी कारण यह सबसे लंबी फड़ है)।

फड़ पर डाक टिकट -

- भारतीय डाक विभाग द्वारा 2 सितम्बर, 1992 को देवनारायण जी की फड़ पर 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया था।
- यह राजस्थान में फड़ पर जारी किया गया सर्वप्रथम डाक टिकट है।
- देवनारायण जी पर भी 3 सितंबर, 2011 को केन्द्रीय संचार मंत्रालय द्वारा 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया है।

मल्लीनाथ जी

- ♦ **जन्म व वंश:-** 1358 ई. में मारवाड़ के राठौड़ राजवंश में जन्म।
- ♦ इनके पिता राव सलखा और माता जाणीदे थीं।
- ♦ **पत्नी-** रानी रुपादे (बरसात के देवी - मंदिर मालाजाल - बालोतरा)
- ♦ **गुरु - उगमसी भाटी** (रानी रुपादे के प्रेरणा से मल्ली नाथ जी ने इन्हें अपना गुरु बनाया था)
- ♦ चाचा कान्हड़दे की मृत्यु के बाद 1374 ई. में ये महेवा (बालोतरा) के स्वामी बने।
- ♦ **राजधानी-** मेवा नगर (बालोतरा)
- ♦ **सैन्य पराक्रम:-** इन्होंने 1378 ई. में फिरोजशाह तुगलक के मालवा के सूबेदार निजामुद्दीन की 13 दलों में बंटी विशाल सेना को परास्त किया था। मारवाड़ में इनके लिए "तेरे तुंगा भांजिया माले सलखाणी" कहावत आज भी प्रचलित है।
- ♦ **आध्यात्मिक जीवन:-** अपनी रानी रूपादे की प्रेरणा से 1389 ई. में ये **उगमसी भाटी** के शिष्य बने और योग दीक्षा ली। इन्होंने **कुंडा पंथ** की स्थापना की और जाति-पांति का त्याग कर निर्गुण-निराकार ईश्वर की उपासना का उपदेश दिया।
- ♦ **हरि कीर्तन व महाप्रयाण:-** इन्होंने मारवाड़ के सभी संतों को एकत्र कर 1399 ई. में एक वृहद् हरि कीर्तन आयोजित करवाया और इसी वर्ष चैत्र शुक्ल द्वितीया को इनका स्वर्गवास हो गया।
- ♦ इन्होंने अपने भतीजे राव चूंडा को मंडौर और नागौर विजय करने में सहायता की थी।
- ♦ **साहित्यिक साक्ष्य:-** मुहणोत नैणसी के अनुसार ये भविष्यदृष्टा और चमत्कारी पुरुष थे।
- ♦ हरजी भाटी द्वारा रचित 'माल री महिमा' ग्रंथ के अनुसार मल्लीनाथ जी की निर्गुण और निराकार ईश्वर में अटूट आस्था थी।
- ♦ **माला -** ख्यातों में मल्लीनाथ जी को माला कहा गया है।
- ♦ **भौगोलिक नामकरण:-** जोधपुर के पश्चिमी भाग का नाम इन्हीं के नाम पर 'मालानी' रखा गया है, जहाँ इनकी सर्वाधिक मान्यता है।
- ♦ **मुख्य मंदिर व मेला:-** बालोतरा जिले में लूनी नदी के किनारे **तिलवाड़ा** में इनका मुख्य मंदिर है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक राजस्थान का सबसे पुराना विशाल पशु मेला भरता है।
- ♦ **रानी का मंदिर :-** मल्लीनाथ जी की पत्नी और प्रसिद्ध संतों में शामिल **रानी रूपादे** का मंदिर मालाजाल गाँव में स्थित है।

इलोजी

- ♦ **पहचान व क्षेत्र:-** इन्हें मारवाड़ अंचल में 'छेड़छाड़ के अनूठे देवता' के रूप में पूजा जाता है।
- ♦ इन्हें कुंवारों को दुल्हन देने वाले और बांझ स्त्रियों को संतान देने वाले लोकदेवता के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- ♦ **उपनाम-** 'छेड़छाड़ के लोक देवता, प्रेम के देवता, बांझ निवारक देवता
- ♦ **ऐतिहासिक प्रसंग:-** पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इनका विवाह दैत्यराज हिरण्यकश्यप की बहन **होलिका** के साथ तय हुआ था, परंतु विवाह के ठीक पहले होलिका दहन हो गया।

- ♦ **उत्सव:-** होली के पावन अवसर पर **बाड़मेर में इलोजी की बारात** अत्यंत धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ निकाली जाती है।
- ♦ **मूर्ति-** आदमकद नग्न प्रतिमा
- ♦ मंदिर - बाड़मेर

तल्लीनाथ जी

- ♦ **जन्म -** इनका जन्म मंडौर (जोधपुर) में राव वीरमदेव के घर हुआ था।
- ♦ मारवाड़ के राठौड़ राजवंश से संबंधित
- ♦ **वास्तविक नाम:-** इनका वास्तविक या प्रारंभिक नाम **गोगादेव राठौड़** (यह शेरगढ़ के सामंत थे)।
- ♦ **गुरु व दीक्षा:-** संन्यास ग्रहण करने के बाद इन्होंने अपने गुरु **जालंधर नाथ** से योग और दीक्षा प्राप्त की थी।

उपनाम

1.	प्रकृति प्रेमी देवता
2.	ओरण का देवता
3.	जालौर क्षेत्र के लोकदेवता

- ♦ **मुख्य थान व मान्यता:-** इनकी सर्वाधिक मान्यता जालौर जिले में है।
- ♦ जालौर के आहोर तहसील के **पाँचौटा गाँव** में स्थित पंचमुखी पहाड़ी पर इनका मुख्य पूजा स्थल (थान) है।
- ♦ **शासक व मान्यता:-** ये जोधपुर के **शेरगढ़ ठिकाने के शासक** थे। जालौर के लोग इनके मंदिर के आसपास के क्षेत्र को 'ओरण' (सुरक्षित वन) मानते हैं और वहाँ से कोई पेड़-पौधा नहीं काटते।
- ♦ **उपचार:-** ग्रामीण अंचलों में जहरीले कीड़ों अथवा साँपों के काटने पर तल्लीनाथ जी के नाम की तांत (डोरी) बांधी जाती है और उनकी पूजा की जाती है।

देवबाबा

उपनाम

1.	पशु चिकित्सक
2.	कष्ट निवारक देवता
3.	गुर्जरों व ग्वालों के पालनहार

- ♦ सवारी - भैसा
- ♦ **मुख्य स्थल व मेला:-** इनका मुख्य मंदिर **नंगला जहाज (भरतपुर)** में स्थित है।
- ♦ यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल पंचमी और चैत्र शुक्ल पंचमी को (वर्ष में दो बार) मेला भरता है।
- ♦ **विशेषता:-** इन्हें पशु चिकित्सा और आयुर्वेद का बहुत अच्छा ज्ञान था। इसी कारण इन्हें **गुर्जरों व ग्वालों के पालनहार (आराध्य देव)** के रूप में पूजा जाता है।
- ♦ देव बाबा को खुश करने के लिये 7 ग्वालों को भोजन करवाया जाता है।

वीर फत्ताजी

- ♦ **जन्म व स्थल:-** इनका जन्म जालौर जिले के **सांथू (सायूँ) गाँव** में हुआ था।
- ♦ सांथू गाँव में ही इनका विशाल मुख्य मंदिर स्थित है।
- ♦ उपनाम - ग्राम रक्षक देवता
- ♦ **वीरगति व मेला:-** ये मुस्लिम लुटेरों से अपने गाँव की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक लड़कर वीरगति को प्राप्त हुए थे।
- ♦ इनकी स्मृति में प्रतिवर्ष **भाद्रपद शुक्ल नवमी** को भव्य मेला भरता है।

डूंगजी-जवाहरजी (गरीबों के देवता)

- ◆ प्रमुख मंदिर - बाठोठ-पाटोदा (सीकर)
- ◆ सहयोगी - करणा मीणा व लोहट जाट
- ◆ उपनाम - लूटपाट के लोकदेवता, धाडवी / धडायती लोकदेवता, 1857 की क्रांति के लोकदेवता, शेखावाटी के रॉबिनहुड
- ◆ सीकर जिले के लूटेरे लोकदेवता, जो धनवानों व अंग्रेजों से धन लूटकर गरीबों में बाँट देते थे।
- ◆ 1857 की क्रांति में सक्रिय भाग लिया।

हरिराम बाबा

- ◆ **जन्म व माता-पिता:-** इनका जन्म झोरड़ा गाँव (नागौर) में हुआ था। इनके पिता का नाम रामनारायण और माता का नाम चन्दणी देवी था।
- ◆ **गुरु व उपचार:-** इनके गुरु का नाम भूरा था। हरिराम जी मंत्रोच्चार द्वारा सर्पदंश का अचूक इलाज करते थे।
- ◆ उपनाम - सर्परक्षक देवता

- ◆ **मुख्य थान व मेला:-** नागौर के झोरड़ा गाँव में इनका मुख्य मंदिर स्थित है, जहाँ भाद्रपद शुक्ल पंचमी को मेला भरता है।
- ◆ **प्रतीक:-** इनके मंदिर में मूर्ति के स्थान पर साँप की बाँबी (बिल) और बाबा हरिराम जी के प्रतीक के रूप में उनके चरण कमल (पगल्ये) पूजे जाते हैं।

मामादेव

- ◆ **स्वरूप :-** इन्हें मुख्य रूप से 'गाँव के रक्षक' के रूप में पूजा जाता है।
- ◆ **उपनाम- 'बरसात के देवता'**
- ◆ **प्रतीक व विशिष्टता:-** इनका कोई पक्का मंदिर या मिट्टी-पत्थर की मूर्ति नहीं होती है। इनके प्रतीक के रूप में लकड़ी का एक विशिष्ट कलात्मक तोरण होता है, जिसे गाँव के बाहर मुख्य रास्ते पर स्थापित किया जाता है।
- ◆ **पूजा व मन्नत:-** अच्छी वर्षा और गाँव की खुशहाली के लिए इनकी पूजा की जाती है। इन्हें प्रसन्न करने के लिए पारंपरिक रूप से भैंसे की बलि देने का रिवाज रहा है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन पंच पीर में शामिल नहीं है?
(a) हड़बूजी (b) तेजाजी
(c) रामदेवजी (d) पाबूजी [b]
2. मंदिर श्री वीर तेजाजी, जो जोधपुर राज्य के महाराजा अभयसिंह द्वारा बनवाया गया था, राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है?
(a) प्रतापगढ़ (b) नागौर
(c) जालौर (d) पाली [b]
3. 'जाहरपीर' के नाम से कौन-से लोक देवता को जाना जाता है?
(a) देवनारायणजी (b) हड़बूजी
(c) गोगाजी (d) रामदेवजी [c]
4. गोगाजी का प्रमुख मेला गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) में भरता है जबकि दूसरा मेला कहाँ भरता है?
(a) नेवटपुर (डूंगरपुर) (b) गोगाजी की ओल्डी (सांचौर)
(c) राशमी गाँव (चित्तौड़गढ़) (d) कोलूमण्ड (जोधपुर) [b]
5. वर्ष 1911 में राजस्थान में श्री गोगा जी के मंदिर का पुनर्निर्माण निम्नलिखित में से किसने कराया था?
(a) महाराजा गंगा सिंह (b) महाराजा मान सिंह
(c) महाराजा सवाई जय सिंह (d) महाराजा उम्मेद सिंह [a]
6. लोक देवताओं के निम्नांकित युग्मों में से कौन-सा सुमेलित नहीं है?
लोक देवता वंश
(a) हड़बूजी - पँवार
(b) पाबूजी - राठौड़
(c) गोगाजी - चौहान
(d) रामदेवजी - तँवर [a]
7. निम्नलिखित में से कौन, राजस्थान में, कामड़िया पंथ के संस्थापक है?
(a) पाबूजी (b) रामदेवजी
(c) देवनारायणजी (d) मल्लीनाथजी [b]
8. नेजा, जम्मा, रिखिया किस स्थानीय लोकदेवता से सम्बन्धित हैं?
(a) रामदेव जी (b) मल्लीनाथ जी
(c) कल्ला जी (d) रूपनाथ जी [a]
9. निम्न में से किस लोक देवता द्वारा राव जोधा को सहायता का वचन दिया गया एवं आशीर्वाद स्वरूप उन्हें एक कटार भेंट की गई-
(a) हरबूजी (b) रामदेवजी
(c) पाबूजी (d) कल्ला राठौड़ [a]
10. नीचे दो कथन दिए गए हैं-
कथन (I): राजस्थान में पाबूजी की ऊँटों के देवता के रूप में पूजा की जाती है।
कथन (II): मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें।
(a) कथन (I) और कथन (II) दोनों सही हैं।
(b) कथन (I) और कथन (II) दोनों गलत हैं।
(c) कथन (I) सही है लेकिन कथन (II) गलत है।
(d) कथन (I) गलत है लेकिन कथन (II) सही है। [a]
11. राजस्थान में मुख्य मेलों और उनके स्थानों के संबंध में निम्नलिखित युग्मों में से कौनसा एक युग्म सुमेलित नहीं है?
(a) शीतला माता - चाकसू (b) बाणेश्वर का मेला - डूंगरपुर
(c) जीण माता - सीकर (d) पाबूजी का मेला - परबतसर [d]
12. जैतमलोठ राठौड़ को किस लोक देवता के नाम से जाना जाता है?
(a) पाबू जी (b) हरभू जी
(c) आलम जी (d) कल्ला जी [c]
13. भारतीय डाक विभाग ने किस लोक देवता की फड़ पर डाक टिकट जारी किया है?
(a) पाबूजी (b) देवनारायणजी
(c) रामदेवजी (d) तेजाजी [b]
14. अकबर के विरुद्ध चित्तौड़गढ़ आक्रमण (1567-68 ई.स.) के समय कौन से लोक देवता युद्ध मारे गये?
(a) वीर फत्ता जी (b) वीर बिग्गा जी
(c) वीर मल्लीनाथ जी (d) वीर कल्ला जी [d]





राजस्थान का इतिहास



कांस्य युगीन सभ्यताएँ

- भारत में पुरातत्व सर्वेक्षण का कार्य प्रारंभ करने का श्रेय **अलेक्जेंडर कनिंघम** को दिया जाता है। कनिंघम को 'भारतीय पुरातत्व का जनक' माना जाता है।
- अलेक्जेंडर कनिंघम ने **1861 ई.** में **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)**, नई दिल्ली का गठन किया था।
- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का कार्य सर्वप्रथम **1871 ई.** में प्रारंभ करने का श्रेय **ए. सी. एल. कार्लाइल** को जाता है।
- कार्लाइल को 'राजस्थान पुरातत्व एवं सर्वेक्षण का जनक' माना जाता है।
- वर्ष 1950 ई. में 'राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग' की स्थापना की गई थी।

कालीबंगा सभ्यता

- उत्तरी राजस्थान में प्राचीन **सरस्वती या दृषद्वती** नदी के बाएं या दक्षिणी तट पर स्थित **हनुमानगढ़** जिला मुख्यालय के **दक्षिण-पश्चिम दिशा** में प्रसिद्ध **कालीबंगा संस्कृति** का विकास हुआ था।
- वर्ष 1947 के विभाजन के बाद कालीबंगा नामक पुरातात्विक स्थल भारत में राजस्थान राज्य के वर्तमान हनुमानगढ़ क्षेत्र में रह गया था।
- कालीबंगा देश का **तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल** है।
- देश के दो सबसे बड़े पुरातात्विक स्थल **राखीगढ़ी (हरियाणा) एवं धौलावीरा (गुजरात)** है।
- प्राचीन सरस्वती नदी का वर्तमान स्वरूप 'घग्घर' है।
- सर्वप्रथम **ऑरिल स्टेन** ने घग्घर नदी का सर्वेक्षण किया था। यह सर्वेक्षण '**ए सर्वे वर्क ऑफ एननशिप्ट साइट अलॉग दी लॉस्ट सरस्वती रिवर**' के नाम से प्रकाशित हुआ था।
- सरस्वती नदी पौराणिक हिंदु ग्रंथों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है।
- इस नदी का वेदों में 80 बार उल्लेख हुआ है। सरस्वती नदी का उल्लेख **ऋग्वेद के दसवें मण्डल** में मिलता है।
- घग्घर नदी को **दृषद्वती नदी, सोता नदी, मृत नदी, हकरा व राजस्थान का शोक** भी कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता एक प्रसिद्ध सैधव स्थल है। यह पंजाबी भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ '**काले रंग की चूड़ियाँ**' होता है। यहाँ से उत्खनन में बड़ी संख्या में काले रंग की चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। इस कारण इस सभ्यता को '**कालीबंगा**' कहा गया है।

खोज एवं उत्खनन कार्य -

- सर्वप्रथम **इतालवी इण्डोलॉजिस्ट एल. पी. टेस्सीटोरी** ने कालीबंगा सभ्यता के बारे में जानकारी प्रदान की थी।
- कालीबंगा सभ्यता को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय **अमलानंद घोष** को दिया जाता है। **ए.एन.घोष** ने 1952 ई. में कालीबंगा सभ्यता की खोज की थी।
- कालीबंगा सभ्यता का उत्खनन भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण, नई दिल्ली द्वारा **वर्ष 1961 से 1969 ई.** के मध्य **बी. बी. लाल तथा बी.के. थापर** के निर्देशन में किया गया।

कालीबंगा सभ्यता के उत्खननकर्ता (1961-69 ई.) -

- | | | |
|---------------|----------------------|----------------------|
| 1. बी.बी. लाल | 2. बी.के. थापर | 3. अमलानंद घोष |
| 4. एम.डी. खरे | 5. के.एम. श्रीवास्तव | 6. एस.पी. श्रीवास्तव |
| 7. एस.पी. जैन | 8. जे.पी. जोशी | |

- कालीबंगा सभ्यता का **उत्खनन पाँच स्तरों** में किया गया था।
- प्रथम व द्वितीय स्तर** से **प्राक् हड़प्पाकालीन** और **तृतीय, चतुर्थ व पंचम स्तर** से **विकसित हड़प्पाकालीन** साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

- कालीबंगा के समान **प्राक् हड़प्पाकालीन** साक्ष्य **पाकिस्तान के कोटदीजी** से प्राप्त हुए हैं।

सभ्यता का समय काल-

- कालीबंगा सभ्यता को **छः हजार वर्ष प्राचीन सभ्यता** माना जाता है। इस सभ्यता का समयकाल **2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.** माना जाता है।
- कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार कालीबंगा सभ्यता का समय **2350 ई.पू. से 1750 ई.पू.** माना जाता है।

कालीबंगा सभ्यता के उपनाम -

- इस सभ्यता को गरीब सभ्यता (दीन-हीन बस्ती), नगरीय सभ्यता, मातृसत्तात्मक सभ्यता, कांस्ययुगीन सभ्यता, हड़प्पाकालीन सभ्यता, साक्षर सभ्यता व ताम्र-कांस्य युगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- संस्कृत साहित्य में कालीबंगा को '**बहुधान्यदायक क्षेत्र**' कहा गया है।
- प्रसिद्ध इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** ने कालीबंगा सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी** कहा है।

कालीबंगा शहर दो भागों या टीलों में विभाजित था-

- (1) पश्चिमी भाग (2) पूर्वी भाग
- पश्चिमी टीला ऊँचाई पर स्थित था जहाँ पर संभवतः पुरोहित वर्ग का निवास रहा होगा।
- पूर्वी भाग अपेक्षाकृत कम ऊँचाई** पर था, जिसे **नगर** कहा जाता था। यहाँ पर सामान्य जनता निवास करती थी।
- वर्ष 1961** में कालीबंगा अवशेष पर भारत सरकार द्वारा **90 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु **वर्ष 1985 ई. में एक संग्रहालय की स्थापना** की गई।

कालीबंगा सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य -

- अण्डाकार कुएं, सात अग्निवेदिकाएं/हवनकुंड, बलिप्रथा के साक्ष्य, अण्डाकार कब्र, युग्मित शवाधान, छः छेद वाली खोपड़ी (शल्य चिकित्सा का ज्ञान), मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर, मृणपट्टिका पर सींगयुक्त देवता की प्रतिमा का अंकन, सिक्कों पर व्याघ्र व महिला कुमारी देवी का चित्र, कांसे का दर्पण, तांबे की चुड़िया, भूकम्प के साक्ष्य, स्वास्तिक का चिह्न, मापक गिलास, रूई कातने का चक्र व तकली, ऊँट की हड्डियाँ, हाथीदाँत का कंघा, पंख फैलाये बगुले की प्रतिमा, भागते हुए बैल की मृणमूर्ति, खिलौना बैलगाड़ी, लकड़ी का हल, जूते हुए खेत के साक्ष्य, एक साथ दो फसलें बौने के साक्ष्य, स्पष्ट जल निकास प्रणाली का अभाव, द्वारपाल कक्ष व समकोण पर काटती सड़कें।
- कालीबंगा से दुर्गीकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहां से दोहरी रक्षा प्राचीर व प्राचीर युक्त किलेबंदी के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, चना, सरसों, कपास व बाजरा की फसलों से परिचित थे।
- इस सभ्यता के लोग माल ढोने के लिए संभवतः बैलगाड़ी का प्रयोग करते थे।
- कालीबंगा सभ्यता के लोगों के घर व चबूतरे धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों से निर्मित होते थे। यहां के घरों के फर्श अलंकृत ईंटों से बने होते थे।

- ♦ कालीबंगा के घरों में जल निकास व्यवस्था में नालियों के निर्माण में लकड़ी व पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। यहां से लकड़ी की नालियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ♦ कालीबंगा के घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर ना खुलकर पीछे की ओर खुलते थे।
- ♦ यहां से चाक पर निर्मित हल्के-पतले लाल रंग के मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जिनपर काले व सफेद रंग की धारियाँ बनी हुई होती थी।
- ♦ कालीबंगा सभ्यता की लिपि सैधवकालीन लिपि (बुस्त्रोफेदन / गौमुत्राक्षर / रहस्यमयी) के समान थी, जो दायें से बायें ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को अब तक नहीं पढ़ा जा सका है।
- ♦ कालीबंगा सभ्यता से लोहा, घोड़ा, नहर, शैलचित्र, मातृदेवी की मूर्ति, मंदिर व चावल के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं।

राजस्थान के अन्य हड़प्पाकालीन स्थल

सोथी सभ्यता (बीकानेर)

- ♦ **खोज** - एल.पी. टेस्सीटोरी द्वारा
- ♦ **उत्खननकर्ता** - अमलानन्द घोष (1950-53)
- ♦ **उपनाम** - कालीबंगा प्रथम, हड़प्पा सभ्यता का उद्गम स्थल
- ♦ **प्रमुख केन्द्र** - 1. पूगल (बीकानेर), 2. साबनिया (बीकानेर)

रातडिया री डेरी (रामगढ़, जैसलमेर)

- ♦ **खोजकर्ता** -
 1. दिलीप कुमार सैनी
 2. पार्थ जगानी
 3. प्रो. जीवनसिंह खरकवाल
 4. डॉ. तमोध पंवार
 5. डॉ. रविन्द्र देवडा
 6. प्रदीप कुमार गर्ग
- ♦ **उत्खनन से निम्नलिखित हड़प्पाकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं-**
 1. लाल लेपयुक्त मृदभाण्ड व कटोरे।
 2. मिट्टी व शंख से बनी चूड़ियाँ।
 3. मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान) व कानमेर (गुजरात) जैसी भट्टी।
 4. चर्ट से बने ब्लेड।
 5. त्रिकोण और इडलीनुमा टेराकोटा कैक।
 6. परफोरेटेड (छिद्रित) जार।
 7. पत्थर के पीसने-घिसने के औजार।

करणपुरा सभ्यता (हनुमानगढ़)

- ♦ **उत्खनन** - वी.एन. प्रभाकर के नेतृत्व में ASI द्वारा
- ♦ **साक्ष्य** -
 1. तांबे का दर्पण।
 2. गेंडे की हड्डियाँ।
 3. तांबे की अंगूठी, कुल्हाड़ी व चूड़ियाँ।
 4. टेराकोटा की मूर्तियों व खिलौने।
 5. रूई कातने का चक्र व तकली।

बरौर सभ्यता (श्रीगंगानगर)

- ♦ **स्थिति** - घग्घर / सरस्वती नदी के किनारे
- ♦ **उत्खनन (2003) से प्राप्त साक्ष्य** -
 1. बटन के आकार की मुहरे।
 2. कच्ची ईंटों से निर्मित घर।
 3. शहरी सभ्यता के पुरावशेष व सुनियोजित नगर विन्यास।
 4. उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था।
 5. यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों में काली मिट्टी मिली है।
- ♦ इस सभ्यता से मई, 2006 में मिट्टी के एक पात्र में सेलखड़ी के लगभग 8000 मनके मिले हैं, उनके साथ शंख की तराशी चूड़ियाँ, अंगूठी, बोरला तथा लाजवर्द मनके मिले हैं।
- ♦ लाजवर्द मनके केवल अफगानिस्तान में मिलते हैं। संभवतः इस सभ्यता के लोगों ने इन्हें अफगानिस्तान से आयात किया होगा।
- ♦ उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यहाँ की सभ्यता को प्राक् एवं विकसित सैधवकाल की माना जाता है।

ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल

गणेश्वर सभ्यता

- ♦ **स्थिति** - कांतली नदी के किनारे, नीम का थाना (सीकर)
- ♦ **खोज** - श्री रतन चन्द्र अग्रवाल द्वारा (1972 ई.)
- ♦ **सर्वप्रथम उत्खनन** - आर. सी. अग्रवाल द्वारा (1972 ई.)
- ♦ **अन्य उत्खननकर्ता** - डॉ. विजय कुमार (1978-79 ई.)
- ♦ **समयकाल** - 2800 ई.पू. (लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी संस्कृति)
- ♦ **उपनाम** - 1. ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी, 2. ताम्रसंचयी सभ्यता, 3. पुरातत्व का पुष्कर
- ♦ **साक्ष्य** -

1.	गैरिक मृदभाण्ड
2.	दोहरी पेचदार सिरे वाली ताम्रपिन
3.	नालीदार प्याला
4.	छल्लेदार बर्तन
5.	मछली पकड़ने के कांटे
6.	कृपषवर्णी / कपीशवर्णी (काले व नीले रंग के) मृदपात्र
7.	लगभग 2000 ताम्र उपकरण व आयुध
8.	ताम्र उपकरणों व पात्रों में 99% प्रतिशत ताँबे की मात्रा
9.	बस्ती को बाढ़ से बचाने के लिए पत्थर से निर्मित बांध
10.	पत्थर से निर्मित घर

- ♦ यह एक प्रागैतिहासिक, प्राक् हड़प्पा, हड़प्पाकालीन व ताम्रयुगीन सभ्यता थी।
- ♦ इस सभ्यता का विस्तार जोधपुरा (साबी नदी) तक था। इस कारण इसे "गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति" भी कहा जाता है।
- ♦ जोधपुरा सभ्यता (कोटपूतली-बहरोड़) से भी गणेश्वर (सीकर) के समान गैरिक मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।
- ♦ गणेश्वर सभ्यता के लोगों को ईंटों का ज्ञान नहीं था।
- ♦ गणेश्वर में ताम्र आपूर्ति खेतड़ी (झुंझुनू) की खानों से होती थी।
- ♦ यहाँ से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ों भेजा जाता था।

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- ♦ **स्थिति** - आयड़/बेड़च नदी के तट पर।
- ♦ **खोज** - डॉ. रत्नचन्द्र अग्रवाल द्वारा (1954 ई.)।
- ♦ **सर्वप्रथम उत्खनन** - अक्षयकीर्ति व्यास द्वारा (1953 ई.)।
- ♦ **अन्य उत्खननकर्ता** - डॉ. आर.सी. अग्रवाल (1956 ई.) व एच.डी. सांकलिया (1961-62 ई.)।
- ♦ **प्राचीन नाम** - ताम्रवती नगरी।
- ♦ **स्थानीय नाम** - धूलकोट।
- ♦ **अन्य नाम** - बनास संस्कृति, ब्लैक एण्ड रेड वेयर संस्कृति, ग्रामीण सभ्यता, मृतकों के टीलों की सभ्यता, आघाटपुर व पितृसत्तात्मक सभ्यता।
- ♦ आहड़ सभ्यता एवं संस्कृति से संबंधित अब तक लगभग 90 से अधिक केंद्रों की खोज की जा चुकी है। इनमें बालाथल, धौलीमगरा, झाड़ोल व भगवानपुरा (उदयपुर), गिलूण्ड व पछमता (राजसमंद), ओझियाणा (ब्यावर), रोजड़ी (गुजरात), पिंड, अलोद व केली प्रमुख हैं।
- ♦ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (उदयपुर) में विकसित आहड़ सभ्यता बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी नदियों के तटों और घाटियों में फैली हुई थी। अतः डॉ. एच.डी. सांकलिया ने इसे 'बनास संस्कृति' कहा है।
- ♦ आहड़ एक ताम्रयुगीन / ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता है, जो लगभग 4000 वर्ष प्राचीन मानी जाती है।

- ♦ **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** ने आहड़ सभ्यता का समृद्ध काल 1900 ई.पू. से 1200 ई.पू. माना है।

आहड़ से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष -

- ♦ लहंगा पहने नारी की खण्डित मूर्ति।
- ♦ रंगाई-छपाई में प्रयुक्त ठप्पे।
- ♦ अनाज पीसने की चक्की।
- ♦ दो ताँबे की कुल्हाड़ियाँ
- ♦ ताँबे की छह मुद्राएँ तथा तीन मुहरें
- ♦ मिट्टी की बनी टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ
- ♦ बैल की मृण्मूर्ति (बनासियन बुल)
- ♦ दो मुंह वाला चूल्हा, सिलबट्टा व पेन।
- ♦ माप-तौल के बांट।
- ♦ गेहूँ, चावल व ज्वार की फसलों के साक्ष्य।
- ♦ शरीर से मेल छुड़ाने के झावे।
- ♦ कच्ची ईंटों से निर्मित घर।
- ♦ हाथी, घोड़े व अन्य जंगली जानवर एवं मवेशियों के साक्ष्य।
- ♦ इस सभ्यता के लोग घरों का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए चक्रकूप पद्धति का प्रयोग करते थे।
- ♦ आवासीय भवनों की नीव पत्थर से बनी होती थी।
- ♦ नीव व दीवारों को मजबूत तथा सौन्दर्ययुक्त बनाने हेतु मिट्टी में क्वार्ट्ज के टुकड़े एवं चिप्स के सम्मिश्रण का प्रयोग करते थे।
- ♦ यहाँ एक घर से 6 चूल्हे प्राप्त हुए हैं। जिससे संयुक्त परिवार प्रथा व सामूहिक भोजन व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- ♦ आहड़ सभ्यता के उत्खनन से अनेक विदेशी (ईरानी) वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। जैसे- लैपिस लाजुली, धूप दानियाँ व बिना हथके जलपात्र।
- ♦ आहड़ सभ्यता से **लाल व काले** रंग के मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'गौरे' व 'कोठे' कहा जाता है।
- ♦ आहड़ से प्राप्त इन कृष्ण-लोहित (लाल व काले रंग) मृदभांडों को उल्टी तपाई विधि से पकाया जाता था। इन मृदभांडों का उपयोग अनाज भरने में किया जाता था।
- ♦ आहड़वासी **ताम्रधातु** कर्मी थे। यहां से बड़ी संख्या में ताँबे के औजार व उपकरण मिले हैं।
- ♦ आहड़ अपने ताम्र के प्रचुर भंडार के लिये प्रसिद्ध था। धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख साधन था।
- ♦ यहाँ के लोगों का महत्त्वपूर्ण व्यवसाय अयस्क ताँबे को गलाना तथा ताम्र वस्तुएँ बनाना था।
- ♦ आहड़ से ताँबे की 40 खदानें, 6 मुद्राएँ, 2 कुल्हाड़ियाँ, अंगूठी व चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।
- ♦ इस सभ्यता के लोग ताँबा, लोहा तथा टिन नामक धातुओं से परिचित थे।
- ♦ आहड़ सभ्यता के लोग अपने **मृतकों को आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- ♦ मृतक का **सिर उत्तर व पैर दक्षिण** दिशा में रखे जाते थे।
- ♦ यहाँ से लोहे के 79 उपकरण प्राप्त हुए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि यह सभ्यता केवल ताँबे तक सीमित नहीं थी, बल्कि धीरे-धीरे लोहे का भी प्रयोग करने लगी थी।
- ♦ इसी आधार पर इस सभ्यता को दो कालखंडों में विभाजित किया गया है-
- ♦ **कालखंड प्रथम**, जो ताम्रयुगीन था और जिसमें केवल ताँबे का प्रयोग होता था,
- ♦ **कालखंड द्वितीय**, जिसमें लोहे के उपकरणों का भी उपयोग होने लगा था।
- ♦ आहड़वासी खेती करना जानते थे। यहां के लोग कपड़ों की रंगाई व छपाई से परिचित थे।
- ♦ आहड़ से यूनानी चिह्नंकित मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। यहां से प्राप्त यूनानी मुहर पर अपोलो (सूर्य) का चित्र बना हुआ है।

बालाथल (प्रागैतिहासिक ताम्रपाषाणिक स्थल)

- ♦ **स्थिति** - बेड़च नदी के किनारे (वल्लभनगर, उदयपुर)
- ♦ **उत्खनन** - प्रो. वी.एन. मिश्र द्वारा (1993 ई.)

बालाथल से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष -

- ♦ लोहा गलाने की 5 भट्टियाँ।
- ♦ लौहयुगीन नलकूप।
- ♦ दुर्गीकरण के साक्ष्य।
- ♦ 11 कमरों वाला विशाल भवन।
- ♦ मिट्टी से निर्मित सांड की आकृतियाँ।
- ♦ अपरिष्कृत मृदभाण्ड।
- ♦ हाथ से बुना सूती कपड़े का टुकड़ा।
- ♦ ताँबे के औजार व सिक्के।
- ♦ योगी मुद्रा (बैठी हुई अवस्था) में शवाधान।
- ♦ उत्खनन से प्राप्त मृदभाण्डों, ताँबे के औजारों और मकानों पर सिंधु घाटी सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है।
- ♦ इससे स्पष्ट होता है कि बालाथल का सिंधुवासियों अर्थात् हड़प्पा सभ्यता के लोगों के साथ संपर्क था।
- ♦ बालाथल एक ताम्रपाषाणिक व लौहयुगीन सभ्यता थी।
- ♦ यहाँ से एक 4000 वर्ष पुराना नर कंकाल मिला है। इसे भारत में कुछ रोग का प्राचीनतम प्रमाण माना जाता है।

गिलुण्ड (राजसमंद)

- ♦ **स्थिति**- बनास नदी के किनारे।
- ♦ **सर्वप्रथम उत्खनन** - श्री बी.बी. लाल द्वारा।
- ♦ **अन्य उत्खननकर्ता** - प्रो. वी.एस.शिन्दे व प्रो. गेगरी पोशल
- ♦ **समयकाल** - 1900 ई. पू. से 1700 ई.पू।
- ♦ **उपनाम** - नवपाषाणिक संस्कृति व ताम्रप्रस्तर युगीन सभ्यता।
- ♦ **उत्खनित स्थल** - मोडिया मगरी

गिलुण्ड सभ्यता से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष -

- ♦ हाथीदांत की चूड़ियाँ।
- ♦ एक मटके में गेहूँ के दाने।
- ♦ मिट्टी के खिलौने (हाथी, ऊँट व कुत्ते की आकृति)।
- ♦ पत्थर की गोलियाँ।
- ♦ पक्की ईंटों से निर्मित दीवार।
- ♦ दीवारों के मध्य में अनाज भरने की कोठी एवं चूल्हे के अवशेष।
- ♦ पाँच प्रकार के मृदभाण्ड (सादे, काले, भूरे, लाल-काले व पॉलिशदार)।

ओझियाना - बदनौर (ब्यावर)

- ♦ **स्थिति** - बदनौर (ब्यावर) के पास खारी नदी के तट पर एक पहाड़ी पर स्थित एक आहड़ सभ्यता का प्रसिद्ध केंद्र।
- ♦ **उत्खनन** - बी.आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाठी द्वारा (2000-2001 में)
- ♦ यहाँ से ताँबे की चूड़िया, अंगूठी व मांदलिया प्राप्त हुआ है।
- ♦ यहाँ से **बैल (वृषभ) तथा गाय की मृण्मय मूर्तियाँ** प्राप्त हुई हैं। जिन पर सफेद रंग से डिजाइन किया गया है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- ♦ **स्थिति** - प्राचीन सरस्वती/दृषद्वती या घग्घर नदी के किनारे।
- ♦ **उत्खनन कार्य** - डॉ. श्रीमती हन्नारिड के निर्देशन में स्वीडिश दल द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।
- ♦ **अन्य उत्खननकर्ता** - होलगर अर्बमेन व के.एरिस्किन।

पुरातात्विक साक्ष्य -

- ♦ लाल-गुलाबी मृदभाण्ड।
- ♦ गुरु-शिष्य की मूर्ति।
- ♦ कुषाणकालीन तथा उसके पूर्व के कुल 105 ताँबे के सिक्के।
- ♦ गांधार शैली की मूर्तियाँ।

- ◆ चावल की खेती के साक्ष्य।
- ◆ ईंटों से निर्मित घर।
- ◆ पंचमार्क (आहत) एवं कुषाण शासक कनिष्ककालीन सिक्के।
- ◆ बच्चों के खेलने की मिट्टी की छोटी पहिएदार गाड़ियाँ।
- ◆ घंटाकार मृदपात्र, टोटीदार घड़े व बर्तनों के ढक्कन।
- ◆ अजैकपाद (भगवान शिव का एक रूप) की मूर्ति।
- ◆ रंगमहल को कुषाणकालीन सभ्यता के समान माना जाता है।
- ◆ लाल रंग के पात्रों पर काले रंग के डिजाइन के कारण इसे रंग महल नाम मिला।
- ◆ रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने और उजड़ने के संकेत मिले हैं।

मलाह (भरतपुर)

- ◆ यह स्थल भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- ◆ इस स्थल से अधिक संख्या में ताँबे की तलवारें एवं हार्पून प्राप्त हुए हैं।

कुराड़ा (डीडवाना-कुचामन)

- ◆ यह ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल है।
- ◆ पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1934 ई. में यहाँ पर उत्खनन किया गया था।
- ◆ यहाँ से एक नालीदार प्याले (ईरान के जैसा) सहित 103 उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- ◆ कुराड़ा को 'औजारों की नगरी' भी कहा जाता है।

लौह युगीन सभ्यता स्थल

बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़)

- ◆ बैराठ सभ्यता वर्तमान कोटपुतली-बहरोड़ जिले में बाणगंगा नदी के किनारे स्थित है।
- ◆ बैराठ सभ्यता की खोज एवं सर्वप्रथम उत्खनन का कार्य वर्ष 1936-37 में दयाराम साहनी के नेतृत्व में हुआ था।
- ◆ दयाराम साहनी ने उत्खनन के बाद 'द आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स एण्ड एक्सकेवेशन एट बैराठ' नामक प्रतिवेदन तैयार किया था।
- ◆ वर्ष 1962-63 ई. में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित द्वारा यहां पर वृहद् स्तर पर उत्खनन कार्य किया गया था।
- ◆ बैराठ सभ्यता को प्राचीन युग की चित्रशाला, विराटनगर व लौहयुगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- ◆ 'भीम डूंगरी', 'गणेश डूंगरी', 'महादेव डूंगरी' व 'बीजक पहाड़ी' का संबंध बैराठ सभ्यता से है।
- ◆ बैराठ से महाभारतकाल, महाजनपदकाल, मौर्यकाल, गुप्तकाल, मुगलकाल तथा **बौद्ध धर्म** एवं **संस्कृति** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ◆ बैराठ, लालसोट, शेरगढ़ तथा नगरी राजस्थान में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र थे।
- ◆ बैराठ का प्राचीन नाम '**विराटनगर**' था। महाजनपद काल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था।
- ◆ यहां से उत्तर गुप्तकालीन शंख लिपि व लौहयुगीन चित्रित धूसर रंग के मृदभांड प्राप्त हुए हैं।
- ◆ बैराठ सभ्यता के लोग लौह धातु से परिचित थे। यहाँ उत्खनन से लोहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं।
- ◆ यहाँ से मुगलकालीन टकसाल व हथियारों का कारखाना होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुगल काल में ढाले गये सिक्कों पर 'बैराठ अंकित' मिलता है।
- ◆ यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- ◆ 7वीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बैराठ की यात्रा की तथा अपने यात्रा वृत्तांत सी-यू-की में इसका उल्लेख किया है।

- ◆ ह्वेनसांग ने बैराठ को पी-लो-यो-तो-लो कहा तथा यहां के बैल व भेड़ें प्रसिद्ध बताईं।
 - ◆ चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार यहां पर 8 बौद्ध मठ थे जिन्हें कालांतर में हूण शासक मिहिरकुल ने तुड़वा दिया था।
 - ◆ बैराठ बौद्ध धर्म एवं संस्कृति का केंद्र था।
 - ◆ यहां से गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप, चैत्य तथा विहार के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
 - ◆ यहां से महात्मा बुद्ध की मूर्ति व 6-7 कमरों का एक खंडहरनुमा भवन प्राप्त हुआ है।
 - ◆ प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् टी.एच. हैण्डले ने नलियासर नामक पुरास्थल की पहचान भी एक बौद्ध कस्बे के रूप में की थी।
 - ◆ बैराठ, मौर्य साम्राज्य का हिस्सा था। जिसके कई प्रमाण मिले हैं। जैसे-
1. अशोक द्वारा निर्मित हीनयान संप्रदाय का गोल या वृत्ताकार बौद्ध मंदिर।
 2. अशोक स्तम्भ व अशोक कालीन दो शिलालेख-
 - (i) भाबू शिलालेख
 - (ii) लघु शिलालेख
- ◆ कैप्टन बर्ट को 1837 ई. में बीजक पहाड़ी से भाबू शिलालेख प्राप्त हुआ था। वर्तमान में यह रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।
 - ◆ इस शिलालेख में अशोक द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
 - ◆ भाबू शिलालेख से बौद्ध धर्म के त्रि-रत्नों (बुद्ध, धम्म व संघ) के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
 - ◆ भाबू अभिलेख में मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन की अनुशंसा की थी।
 - ◆ इस अभिलेख में बौद्ध धर्म की 7 पुस्तकों का उल्लेख हुआ है।
 - ◆ ए.सी.एल. कार्लाइल ने 1871 ई. में भीम पहाड़ी से सम्राट अशोक के लघु शिलालेख की खोज की थी।
 - ◆ बैराठ में बीजक की पहाड़ी पर एक अशोक कालीन वृत्ताकार मन्दिर के साक्ष्य मिले हैं, दयाराम साहनी ने अपनी रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया था।
 - ◆ बैराठ सभ्यता के लोग वस्त्र बुनाई की तकनीक से परिचित थे।
 - ◆ बैराठ से सूती कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ है जिसमें 36 मुद्राएं बंधी हुई प्राप्त हुई हैं।
 - ◆ यहां से एक सूती कपड़े के टुकड़े में बंधी हुई 36 मुद्राएं प्राप्त हुई हैं। इनमें से 8 चांदी के पंचमार्क (आहत) सिक्के व 28 सिक्के इंडो-ग्रीक शासकों के थे।
 - ◆ 28 में से 16 सिक्के प्रसिद्ध हिंद-यूनानी शासक मिनेण्डर के थे।
 - ◆ ध्यातव्य रहे कि बालाथल सभ्यता से भी एक सूती कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ है।
 - ◆ यहां से चित्रित शैलाश्रय, भीमताल व कीचक महल के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
 - ◆ महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास विराटनगर में बिताया था।

चित्रित धूसर मृदभांड	बैराठ
काले व लाल रंग के मृदभांड	आहड़
कपीशवर्णी मृदभांड	गणेश्वर
लाल-गुलाबी मृदभांड	रंगमहल
गेरिक मृदभांड	गणेश्वर व जोधपुरा
लाल मृदभांड जिन पर सफेद व काले रंग की धारिया	कालीबंगा

नगरी सभ्यता (चित्तौड़गढ़)

- ❖ **स्थिति** - बेडच नदी के किनारे
- ❖ **प्राचीन नाम** - माध्यमिका
- नगरी / माध्यमिका के बारे में जानकारी देने वाले स्रोत -**
- ❖ वेदव्यास का महाभारत
- ❖ पाणिनी का अष्टाध्यायी
- ❖ पतंजलि का महाभाष्य
- ❖ बडली शिलालेख (443 ई.पू.)
- ❖ **खोज** - ए.सी. एल. कार्लाइल द्वारा (187१३)
- ❖ **उत्खनन** - भण्डारकर (1919-20 ई.) तथा सौन्दरराजन द्वारा (1961-62 ई.)

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ❖ गुप्तकालीन शिव मंदिर।
- ❖ वैष्णव मंदिर।
- ❖ नहर के साक्ष्य।
- ❖ शिवि जनपद के सिक्के।
- ❖ चार चक्राकार कुँए।
- ❖ लेखयुक्त शिलाएँ।
- ❖ अलंकरणयुक्त ईंटें।
- ❖ हाथियों का बाड़ा और प्रकाश स्तंभ।
- ❖ यह राजस्थान का प्रथम उत्खनित स्थल माना जाता है।
- ❖ यह बौद्ध, जैन तथा वैष्णव धर्मों का केन्द्र था।
- ❖ पतंजलि के महाभाष्य के अनुसार यवन आक्रमणकारियों ने इसे नष्ट कर दिया था।

रैठ सभ्यता (टोंक)

- ❖ **स्थिति** - ढील नदी के किनारे, निवाई तहसील, टोंक
- ❖ **उत्खनन** - केदारनाथ (के.एन.) पुरी द्वारा (1938-40 ई.)
- ❖ **उपनाम** - प्राचीन राजस्थान का टाटा नगर

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ❖ मातृदेवी की एक मृणमयी मूर्ति।
- ❖ उष्णीश युक्त स्त्री की मूर्ति।
- ❖ पगड़ी पहने स्त्री की मृणमूर्ति।
- ❖ 115 घेरेदार कूप व मिट्टी के मकान।
- ❖ लौह उपकरण व अनाज के दाने।
- ❖ सेलखड़ी की डिबिया व पाषाण के मनके।
- ❖ सीसे की एक मुहर जिस पर मालव 'जनपद स' ब्राह्मी लिपि में अंकित है।
- ❖ यहाँ से 3075 आहत (पंचमार्क) मुद्राएँ मिली हैं। इनमें मालव, मित्र, अपोलोडोटस तथा इण्डोससेनियन सिक्के प्रमुख हैं।

सुनारी (झुंझुनू)

- ❖ **स्थिति** - कांतली नदी के किनारे
- उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -**
- ❖ घोड़े व चावल के अवशेष।
- ❖ लौहा गलाने की भट्टियाँ (भारत में प्राचीनतम)।
- ❖ कुषाणकालीन मृणमूर्तियाँ तथा चाक पर निर्मित काले रंग के मृदपात्र।
- ❖ लोहे के तीर व शंख की चूड़ियाँ।
- ❖ घोड़े से खींचे जाने वाले रथ।
- ❖ यह एक वैदिककालीन बस्ती थी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ कि बस्ती वैदिक आर्यों ने बसाई थी।

जोधपुरा (कोटपूतली-बहरोड़)

- ❖ **स्थिति** - साबी नदी के किनारे (कोटपूतली-बहरोड़)
- ❖ **उत्खनन** - आर.सी. अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार द्वारा (1972-75 ई.)
- ❖ **समयकाल** - 2500 ई.पू. से 200 ईस्वी

उपनाम -

1. धरतूल घाट की सभ्यता
2. लौहयुगीन सभ्यता

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ❖ लौहा गलाने की भट्टियाँ।
- ❖ लौह उपकरण (कीलें व तीर के अग्रभाग)।
- ❖ ताम्र उपकरण।
- ❖ कुबड़बैल की आकृतियाँ।
- ❖ मिट्टी एवं पत्थर के मनके।
- ❖ स्लेटी रंग के चित्रित मृदभाण्ड।
- ❖ गैरिक रंग के पानी पीने के पात्र, कटोरे तथा तश्तरियाँ।

ईसवाल (उदयपुर)

- ❖ **उत्खनन** - राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के पुरातत्व विभाग द्वारा।
- ❖ **उपनाम** - प्राचीन औद्योगिक बस्ती।

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ❖ लौहा गलाने की भट्टियाँ।
- ❖ ऊँट का दाँत।
- ❖ लौह अयस्क व लौहमल।
- ❖ 5 स्तर पर खुदाई।
- ❖ मिट्टी में प्रयुक्त होने वाले पाइप।
- ❖ पत्थर के मकान।

नोह (भरतपुर)

- ❖ **स्थिति** - रूपारेल नदी के तट पर
- ❖ **उत्खनन** - आर.सी. अग्रवाल द्वारा (1963-64 ई.)

पुरातात्विक साक्ष्य -

- ❖ कुषाण शासक हुविस्क एवं वासुदेव के सिक्के
- ❖ शुंगकालीन यक्ष (जाख बाबा) की पाँच मीटर ऊँचाई वाली मूर्ति
- ❖ लोहे के कृषि उपकरण
- ❖ 16 चक्राकार कूप
- ❖ मिट्टी की कच्ची ईंटों से निर्मित परकोटा
- ❖ मौर्यकालीन पॉलिशयुक्त चुनार के चिकने पत्थर के टुकड़े
- ❖ यहाँ से 5 सांस्कृतिक युगों के अवशेष मिले हैं।
- ❖ यह ताम्रयुगीन व लौहयुगीन सभ्यता है।
- ❖ यहाँ के निवासी मकान बनाने के लिए पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे।

नगर (टोंक)

- ❖ टोंक जिले में **उणियारा कस्बे** के पास स्थित है। इसे **कार्कोट नगर** भी कहा जाता है।
- ❖ महाभारत में उल्लिखित मालवों की राजधानी कार्कोट नगर का समीकरण इससे किया जाता है।
- ❖ इसका प्राचीन नाम '**मालव नगर**' था।

उत्खनन कार्य -

- ❖ वर्ष 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- ❖ यहाँ से बड़ी संख्या में **मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं।
- ❖ 1871 ई. में कार्लाइल को यहाँ से 6000 मालव सिक्के प्राप्त हुए थे।
- ❖ यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
- ❖ नगर में उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित **महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति** प्राप्त हुई है।
- ❖ यहाँ से एकमुखी शिवलिंग तथा शुंगकालीन कामदेव-रति व इन्द्र-इन्द्रानी की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं।
- ❖ इसके अतिरिक्त यहाँ से मोदक रूप में गणेश का अंकन, फणधारी नाग का अंकन, कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है।
- ❖ नगर सभ्यता को '**खेड़ा सभ्यता**' के नाम से भी जाना जाता है।

भीनमाल (जालोर)

- ❖ **उत्खनन** - श्री आर. सी. अग्रवाल द्वारा (1953-54 ई.)
- ❖ **प्राचीन नाम** - श्रीमाल (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)

- ♦ **उत्खनन में प्राप्त साक्ष्य** - 1. यूनानी दुहत्थी सुराही, 2. रोमन ऐम्फोरा (सुरापात्र) 3. शक क्षत्रपों के सिक्के
- ♦ यहाँ से प्राप्त मृदपात्रों पर विदेशी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- ♦ 'शिशुपाल वध' के रचयिता महाकवि माघ का कार्यक्षेत्र यहीं था।
- ♦ गुप्तकालीन विद्वान् ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान भी भीनमाल ही था।
- ♦ ब्रह्मगुप्त (भारत का न्यूटन) ने 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' व 'खण्डखाद्यक' नामक ग्रंथों की रचना की है।
- ♦ चीनी यात्री ह्वेसांग/श्वेनत्सांग/युआनच्वांग 641 ई. में भीनमाल आया था। इसने भीनमाल को प्रतिहारों की राजधानी बताया और इसे 'पी-लो-मो-लो' कहा।

बागौर सभ्यता

- ♦ **भीलवाड़ा में कोठारी नदी** के किनारे स्थित है।
- ♦ **उत्खनन कार्य** - यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में डॉ. विरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस. लेभ्रिक व डेक्कन कॉलेज पूना तथा राजस्थान पुरातत्त्व विभाग के सहयोग से किया गया।
- ♦ राजस्थान में आरंभिक मानव बस्ती बागौर में पाई गई है।
- ♦ बागौर में सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी 1707 ई. में दक्षिण भारत से लौटते समय रुके थे। उनके ठहरने के स्थान पर गुरुद्वारा **कलगीधर बागौर साहिब** बनाया गया है।
- ♦ वी.एन. मिश्र ने बागौर की तुलना मोरहाना पहाड़ (उत्तरप्रदेश) से की है।
- ♦ **उत्खनित स्थल** - महासतियों का टीला।
- ♦ **उत्खनन के स्तर** - 3 (मध्यपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल व लौहकाल)।

अन्य नाम

1.	आदिम संस्कृति का संग्रहालय
2.	प्राचीन सभ्यताओं का पालना
3.	लघुपाषाण उपकरणों का घर
4.	मध्य पाषाणकालीन सभ्यता स्थल

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य/पुरावशेष -

1.	भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
2.	14 प्रकार की कृषि के साक्ष्य
3.	पशुओं के कंकाल व कसाई खाने के साक्ष्य
4.	एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों का हार
5.	5 ताम्र उपकरण, 7 लौह उपकरण व एक 10.5 सेमी. छेद वाली तांबे की सूई।
6.	मध्य पाषाणकालीन लघु उपकरण (माइक्रोलिथ)
7.	पत्थर व ईंटों से निर्मित घर तथा चाक पर निर्मित मृदभाण्ड।

तिलवाड़ा (बालोतरा)

- ♦ बालोतरा जिले में लूणी नदी के किनारे तिलवाड़ा सभ्यता की खोज डॉ. वी.एन. मिश्रा ने की थी।
- ♦ यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में 'राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग' द्वारा डॉ. वी.एन. मिश्र के नेतृत्व में करवाया गया।
- ♦ यह एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल** है जहाँ से 500 ई.पू. से 200 ई.पू. तक विकसित सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- ♦ यहाँ एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले हैं।
- ♦ यहाँ से पाषाणकालीन लघु उपकरण प्राप्त हुए हैं।

नलियासर (जयपुर)

- ♦ प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् टी.एच. हैण्डले ने इस पुरास्थल की पहचान एक बौद्ध कस्बे के रूप में की थी। इसे 'चौहान पूर्व सभ्यता' भी कहा जाता है।

- ♦ राजस्थान में बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र बैराठ, लालसोट, शेरगढ़, नगरी तथा नलियासर थे। इस लौहयुगीन सभ्यता स्थल के उत्खनन से निम्नलिखित पुरावशेष प्राप्त हुए हैं-
- ♦ 105 कुषाणकालीन मुद्राएँ।
- ♦ हड्डी के पासे व काँसे के कड़े।
- ♦ पूजा पात्र व तलवार।
- ♦ अलंकरण युक्त ईंटें व नालियों के गोल पाइप।
- ♦ आहत मुद्राएँ तथा इण्डोससेनियन सिक्के।
- ♦ कुषाण शासक हुविस्क, इण्डो-ग्रीक, यौधेयगण एवं गुप्तयुगीन चांदी के सिक्के।
- ♦ स्वर्ण निर्मित सिंह सिर व तांबे के पात्र।
- ♦ मिट्टी के आभूषण, मनके, शीशों की चूड़ियाँ तथा सिलबट्टे।

लाछूरा (भीलवाड़ा)

- ♦ **उत्खनन** - 1998-99 ई. में बी.आर. मीणा के निर्देशन में एस.सी. सरन, कंवर सिंह व बी.आर. सिंह द्वारा

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ♦ ललितासन में नारी की मृणमूर्ति।
- ♦ लोहे का चाकू व तांबे की चूड़ियाँ।
- ♦ मिट्टी की मुहरें जिन पर ब्राह्मी लिपि के चार अक्षर अंकित हैं।

बहज गाँव सभ्यता (डीग)

- ♦ **उत्खनन** - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा (2024-25) डॉ. विनय गुप्ता व पवन सारस्वत के निर्देशन में।
- ♦ **समयकाल** - 3500 ई.पू. से 1000 ई.पू.

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ♦ शिव-पार्वती की टेराकोटा मूर्तियाँ।
- ♦ 1700 वर्ष पुराना नर कंकाल।
- ♦ 15 यज्ञ कुण्ड व कुषाणकालीन सिक्के।
- ♦ ब्राह्मी लिपि व खरोष्ठी लिपि की मुहरें।
- ♦ महाभारत और मौर्यकालीन अवशेष।
- ♦ नर कंकाल व शंख की चूड़ियाँ।
- ♦ मिट्टी के खंभों से बनी इमारतें।
- ♦ परतदार दीवारों के लिए बनाई गई खाई।
- ♦ हड्डी से बने औजार व अर्द्धकीमती पत्थर के मनके।
- ♦ महाभारतकालीन वस्त्र व बर्तन।
- ♦ यहां से महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य काल, शुंगकाल व कुषाणकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ♦ बहज गाँव में एक पुरानी नदी के चैनल की खोज की है। गाँव में 23 मीटर की गहराई पर एक प्राचीन नदी तंत्र (पैलियो चैनल) मिला है। इतिहासकार इसे ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती नदी से जोड़कर देख रहे हैं।

कोटड़ा (झालावाड़)

- ♦ इस स्थल का उत्खनन वर्ष 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा किया गया।
- ♦ यहाँ से 7वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

कणसवा (कोटा)

- ♦ इस स्थल से **मौर्य शासक धवल** का 738 ई. से संबंधित लेख मिला है।

डडीकर (अलवर)

- ♦ इस स्थल से पाँच से सात हजार वर्ष पुराने शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

गरड़दा (बूँदी)

- ♦ **छाजा नदी** के किनारे स्थित इस स्थान से **पहली बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त हुई है।

क्र.सं.	सभ्यता	जिला	नदी	उत्खननकर्ता
1.	कालीबंगा	हनुमानगढ़	सरस्वती	बी.बी.लाल, बी.के.थापर, जे.पी.जोशी, एम.डी.खरे, के.एम.श्रीवास्तव, एस.पी.श्रीवास्तव व एस.पी.जैन
2.	आहड़	उदयपुर	बेड़च	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी.अग्रवाल व एच.डी. सांकलिया
3.	गिलूण्ड	राजसमन्द	बनास	बी.बी.लाल, ग्रेगरी पोशल तथा वी.एस.शिंदे
4.	बागौर	भीलवाड़ा	कोठारी	वी.एन.मिश्र व एल.एस.लेशिक
5.	बालाथल	उदयपुर	बेड़च	वी.एन.मिश्र
6.	गणेश्वर	सीकर	कांतली	आर.सी.अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार
7.	रंगमहल	हनुमानगढ़	सरस्वती	श्रीमती हन्नारिड, होलगर अर्बमेन व के.एरिस्किन
8.	ओझियाना	भीलवाड़ा	खारी	बी.आर.मीणा व आलोक त्रिपाठी
9.	नोह	भरतपुर	रूपारेल	आर.सी.अग्रवाल
10.	नगरी	चित्तौड़गढ़	बेड़च	डी.आर. भण्डारकर व सौन्दर राजन
11.	जोधपुरा	जयपुर	साबी	आर.सी.अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार
12.	तिलवाड़ा	बालोतरा	लूनी	वी.एन.मिश्र
13.	रैठ	टोंक	ढील	कैदारनाथ पुरी
14.	बैराठ	जयपुर	बाणगंगा	दयाराम साहनी, एन.एल.बनर्जी व के.एन. दीक्षित
15.	निम्बाहेड़ा	चित्तौड़गढ़	कादमली	वी.एन.मिश्र
16.	मंडपिया/मांड्या	भीलवाड़ा	बनास	वी.एन.मिश्र
17.	सुनारी	झुंझुनूँ	कांतली	राजस्थान पुरातत्त्व विभाग

क्र.	संस्कृति काल	स्थल
1.	पुरापाषाण काल	डीडवाना (सबसे प्राचीन स्थल), जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर), विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), दर (भरतपुर), इन्द्रगढ़ (बूंदी), बूढ़ा पुष्कर व होकरा (अजमेर)
2.	मध्यपाषाण काल	बागौर व मंडपिया (भीलवाड़ा), सोजत व धनेरी (पाली), तिलवाड़ा (बालोतरा), निम्बाहेड़ा (चित्तौड़), बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़), हरसौरा (अलवर), सोहनपुरा (सीकर) आदि।
3.	नवपाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), गिलूण्ड (राजसमंद),
4.	ताम्रपाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बालोतरा), आहड़ (उदयपुर), बालाथल (उदयपुर)
5.	ताम्रयुगीन	गणेश्वर (सीकर), साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), बेणेश्वर (झुंझुनूँ), नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथवाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), एलाना (जालोर), झाड़ोल (उदयपुर), ओझियाना (ब्यावर), कुराड़ा (डीडवाना), मलाह (भरतपुर), कोल माहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौहयुगीन	नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनूँ), विराटनगर व जोधपुरा (कोटपूतली-बहरोड़), सांभर (जयपुर), रैठ, नगर, नैणवा (टोंक), भीनमाल (जालोर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (श्रीगंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)
7.	हड़प्पाकालीन स्थल	कालीबंगा व करणपुरा (हनुमानगढ़), सोंथी (बीकानेर), बिनजौर (श्रीगंगानगर), रातड़िया री डेरी (जैसलमेर)
8.	वैदिक / आर्य सभ्यता के प्रमुख केंद्र	अनूपगढ़, तरखान वाला डेरा, चक-64 (श्रीगंगानगर)

राजस्थान के अन्य महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल

क्र. सं.	पुरातात्विक स्थल	जिला
1.	नगरी, निंबाहेड़ा, पिण्ड-पाडलिया व मरमी गांव	चित्तौड़गढ़
2.	पूंगल, साबणिया, सोंथी व डाडाथोरा	बीकानेर
3.	एलाना व भीनमाल	जालोर
4.	झाड़ोल, आहड़, बालाथल, भगवानपुरा व धौलीमगरा	उदयपुर
5.	मलाह, नोह व दर	भरतपुर
6.	चीथवाड़ी, नन्दलालपुरा व किराड़ोत	जयपुर
7.	कोल माहौली	सवाईमाधोपुर
8.	अहेड़ा, बूढ़ा पुष्कर व होकरा	अजमेर
9.	चक-84, चक-64, बरोर, बिनजौर, तरखानवाला डेरा व अनूपगढ़	श्रीगंगानगर
10.	नैनवा व गरदड़ा	बूंदी
11.	कालीबंगा, पीलीबंगा, रंगमहल, करणपुरा व बड़ोपल	हनुमानगढ़
12.	कुण्डा व ओला तथा रातड़िया री डेरी	जैसलमेर
13.	बागौर, मंडपिया, लाछुरा व जहाजपुर	भीलवाड़ा
14.	कोटड़ा व खानपुरा	झालावाड़

15.	खुरड़ी व कुराड़ा	परबतसर (डीडवाना)
16.	आलनीया व दर्दा	कोटा
17.	सोजत व धनेरी	पाली
18.	नीम का थाना व गुरारा	सीकर
19.	भानगढ़ व ढिंगरिया	अलवर
20.	बहज गांव	डीग
21.	जायल	नागौर (पुरा पाषाण कालीन)
22.	चन्द्रावती	सिरोही

अभ्यास प्रश्न

- कालीबंगा उत्तरी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में नदी के किनारे स्थित है।
(a) घग्घर (सरस्वती) (b) लूणी
(c) साबरमती (d) बनास [a]
- कालीबंगा सभ्यता को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय दिया जा सकता है?
(a) बी. बी. लाल (b) बी. के. थापर
(c) एम. डी. खरे (d) अमलानन्द घोष [d]
- नीचे दो कथन दिए गए हैं एक अभिकथन (A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (R) के रूप में।
अभिकथन-A: कालीबंगा के कब्रगाह में छह (6) छेदों वाली बालक की खोपड़ी मिली है।
कारण-R: छेद/छिद्र, मस्तिष्क ज्वर के उपचार के सूचक हो सकते हैं।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(b) A सही है लेकिन R सही, नहीं है।
(c) A सही नहीं है लेकिन R सही है।
(d) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है। [d]
- किस सभ्यता में मकान व बस्तियों के निर्माण में ईंटों का प्रयोग नहीं होता था?
(a) आहड़ (b) कालीबंगा
(c) गणेश्वर (d) बैराठ [c]
- किस सभ्यता को धूलकोट भी कहते हैं?
(a) कालीबंगा (b) बालाथल
(c) बैराठ (d) आहड़ [d]
- राजस्थान की कौनसी सभ्यता बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी नदियों के तटों और घाटियों में फैली हुई थी?
(a) कालीबंगा (b) गणेश्वर
(c) आहड़ (d) बैराठ [c]
- अनाज रखने के बड़े मृदाभाण्ड जिन्हें "गोरे कोठ" कहा जाता था, किस प्राचीन सभ्यता से प्राप्त हुए?
(a) ओझियाना (b) जोधपुरा
(c) कालीबंगा (d) आहड़ [d]
- निम्नलिखित में से कौनसा/से कथन सही है/हैं?
(A) के.एन. दीक्षित बैराठ में उत्खनन से सम्बन्धित हैं।
(B) बैराठ से सूती वस्त्र का टुकड़ा प्राप्त हुआ था।
(C) बैराठ में बीजक की पहाड़ी पर एक अशोक कालीन वृत्ताकार मन्दिर के साक्ष्य मिले हैं, दयाराम साहनी ने अपनी रिपोर्ट में जिसका उल्लेख किया था।
(a) (B) और (C) (b) केवल (B)
(c) (A), (B) और (C) (d) (A) और (C) [c]
- निम्नलिखित में से कौन-सा 'चित्रित धूसर मृदाभांड' संस्कृति का पुरास्थल है?
(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गणेश्वर (d) बैराठ [d]
- सन् 1837 में बीजक पहाड़ी (बैराठ) स्थित अशोक के शिलालेख को किसने खोजा?
(a) कैप्टन बर्ट (b) कर्नल जेम्स टॉड
(c) कैप्टन हॉकिन्स (d) आर. सी. अग्रवाल [a]
- बालाथल सभ्यता का उत्खनन किसके निर्देशन में हुआ?
(a) वी.एन. मिश्र (b) बी.बी. लाल
(c) आर.सी. अग्रवाल (d) अमलानन्द घोष [a]
- "बालाथल सभ्यता" का पुरातत्व स्थल कहाँ स्थित है?
(a) हनुमानगढ़ (b) अजमेर
(c) वल्लभनगर, उदयपुर (d) माऊन्ट आबू, सिरोही [c]
- निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
a. कालीबंगा हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
b. आहड़वासियों ने अपने मृतकों को आभूषणों और गहनों के साथ दफनाया था।
c. बागौर टोंक जिले में स्थित है।
d. ताम्रपाषाण मृदाभाण्ड गिल्लूण्ड में पाये जाते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a, b, c (b) a, b, d
(c) b, c, d (d) a, c, d [b]
- निम्नलिखित किस प्राचीन स्थल के उत्खनन में मालव जनपद की लौह सामग्री के विशाल संग्रह की जानकारी प्राप्त हुई है?
(a) नगर (नैनवाँ) (b) नगरी (मध्यमिका)
(c) सांभर (d) रैढ़ (टोंक) [d]
- किस पुरातात्विक स्थल को पूर्व में 'मालव नगर' कहते थे?
(a) नगर (टोंक) (b) नलियासर (सांभर)
(c) सुनारी (झुंझुनूँ) (d) रैढ़ (टोंक) [a]
- निम्न प्रमुख सभ्यताओं को उनके प्रथम प्रमुख उत्खनन/अन्वेषण के अनुसार आरंभिक से अद्यतन के क्रम में व्यवस्थित करें।
a. बागौर b. कालीबंगा
c. गिल्लूण्ड d. आहड़
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) d, b, a, c (b) d, c, b, a
(c) a, b, c, d (d) b, d, c, a [d]
- भरतपुर जिले के किस गाँव में उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं?
(a) नदबई (b) नोह
(c) रूपवास (d) कुम्हेर [b]





राजस्थान की राजव्यवस्था



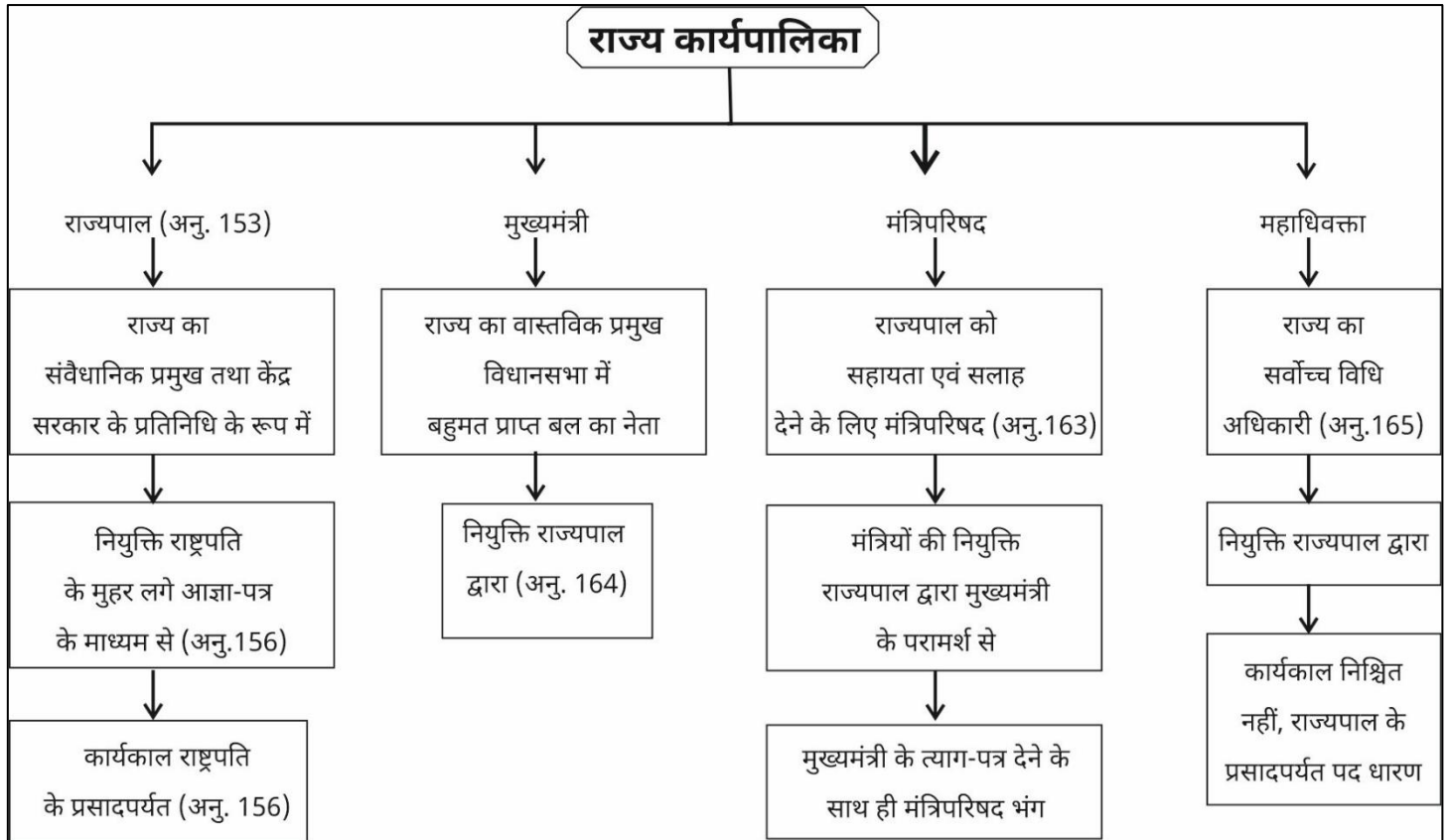
राज्यपाल से संबंधित प्रमुख अनुच्छेद

अनुच्छेद	विवरण
153	राज्यों के राज्यपाल
154	राज्य की कार्यकारी शक्ति
155	राज्यपाल की नियुक्ति
156	राज्यपाल के पद की पदावधि
157	राज्यपाल के रूप में नियुक्ति के लिए योग्यताएँ
158	राज्यपाल कार्यालय की शर्तें
159	राज्यपाल द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
160	कतिपय आकस्मिकताओं में राज्यपाल के कार्यों का निर्वहन
161	क्षमा आदि देने की राज्यपाल की शक्ति
162	राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार
163	राज्यपाल को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद्
164	मंत्रियों से संबंधित अन्य प्रावधान जैसे नियुक्तियाँ, कार्यकाल, वेतन और अन्य
165	राज्य के महाधिवक्ता
166	किसी राज्य की सरकार के कामकाज का संचालन
167	राज्यपाल को सूचना प्रस्तुत करने आदि के संबंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य
174	राज्य विधानमंडल के सत्र, सत्रावसान और विघटन
175	राज्य विधानमंडल के सदनों को सम्बोधित करने और संदेश भेजने के राज्यपाल के अधिकार।
176	राज्य विधानमंडल के सदनों में राज्यपाल व विशेष अभिभाषण।
200	विधेयकों पर सहमति (अर्थात् राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों पर राज्यपाल की सहमति)
201	राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के विचार हेतु आरक्षित विधेयक
213	अध्यादेश प्रख्यापित करने की राज्यपाल की शक्ति
217	उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल से परामर्श किया जाना।
233	राज्यपाल द्वारा जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति
234	राज्यपाल द्वारा राज्य की न्यायिक सेवा में व्यक्तियों (जिला न्यायाधीशों के अलावा) की नियुक्ति।

राज्य का राज्यपाल

- ♦ **अनुच्छेद 153** - प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा; एक व्यक्ति दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल हो सकता है (7वां संविधान संशोधन, 1956)।
- ♦ **अनुच्छेद 155** - राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है (मुहर लगे आदेश से)।

- ♦ **SC निर्णय (1979)** - राज्यपाल का पद केंद्र के अधीन रोजगार नहीं, बल्कि स्वतंत्र संवैधानिक पद है।
- ❖ **अनुच्छेद 157 - राज्यपाल हेतु अर्हताएँ :-**
 - ♦ भारत का नागरिक हो।
 - ♦ न्यूनतम आयु 35 वर्ष।
- ❖ **दो परंपराएँ (कुछ अपवादों के साथ):-**
 - ♦ राज्यपाल उस राज्य का निवासी न हो।
 - ♦ नियुक्ति में मुख्यमंत्री से परामर्श लिया जाए।
- ❖ **अनुच्छेद 158 - पद की शर्तें:-**
 - ♦ सांसद या विधायक नहीं होना चाहिए।
 - ♦ किसी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए।
 - ♦ वेतन-भत्ते संसद द्वारा निर्धारित होंगे और कार्यकाल में कम नहीं किए जा सकते।
 - ♦ दो या अधिक राज्यों के राज्यपाल होने पर भत्ते राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित होंगे।
- ❖ **शपथ / प्रतिज्ञान (अनुच्छेद 159)**
 - ♦ शपथ में संविधान, राज्य की सुरक्षा व जनहित की रक्षा का संकल्प।
 - ♦ शपथ दिलाने वाला - उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश; अनुपस्थित हो तो वरिष्ठ न्यायाधीश।
- ❖ **विशेषाधिकार एवं उन्मुक्तियाँ (अनुच्छेद 361)**
 - ♦ शासकीय कृत्यों के लिए विधिक उत्तरदायित्व से उन्मुक्ति।
 - ♦ पद पर रहते आपराधिक कार्यवाही नहीं हो सकती, न ही गिरफ्तारी।
 - ♦ व्यक्तिगत कार्यों के लिए सिविल मामला चल सकता है (2 माह पूर्व नोटिस आवश्यक)।
- ❖ **कार्यकाल (अनुच्छेद 156)**
 - ♦ सामान्य कार्यकाल: 5 वर्ष, लेकिन राष्ट्रपति के प्रसादपर्यन्त पद पर बने रहते हैं।
 - ♦ स्थानांतरण व पुनः नियुक्ति संभव।
 - ♦ उत्तराधिकारी के कार्यभार संभालने तक पद पर बने रहते हैं।
 - ♦ त्याग-पत्र राष्ट्रपति को दिया जाता है।
 - ♦ आकस्मिक मृत्यु पर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को कार्यभार सौंपा जाता है।
- ❖ **वेतन एवं भत्ते**
 - ♦ संसद द्वारा निर्धारित, भुगतान राज्य की संचित निधि से।
 - ♦ उल्लेख - संविधान की दूसरी अनुसूची में।
 - ♦ 2012 में वेतन ₹3.5 लाख प्रतिमाह किया गया।

राज्यपाल की शक्तियाँ
❖ कार्यकारी शक्तियाँ-


- ❖ **अनुच्छेद 154** के अनुसार राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित है।
- ❖ राज्यपाल राज्य सरकार के सभी कार्य औपचारिक रूप से अपने नाम से करता है।
- ❖ मुख्यमंत्री, मंत्रियों, महाधिवक्ता, राज्य निर्वाचन आयुक्त, लोक सेवा आयोग अध्यक्ष/सदस्य की नियुक्ति करता है।
- ❖ विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति कुलपतियों की नियुक्ति करता है।
- ❖ राज्यपाल राष्ट्रपति से राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है।

❖ विधायी शक्तियाँ -

- ❖ राज्य विधानसभा का अभिन्न अंग, सत्र को आहूत या सत्रावसान और विघटित कर सकता है।
- ❖ सत्र के पहले दिन व चुनाव पश्चात् पहला सत्र संबोधित करता है।
- ❖ विधान परिषद में 1/6 सदस्यों को नामित कर सकता है।
- ❖ **अध्यादेश (अनु. 213)** जारी करने की शक्ति सत्र न होने पर 6 सप्ताह तक प्रभावी।
- ❖ विधेयकों को स्वीकारना, रोकना, पुनर्विचार हेतु लौटाना या राष्ट्रपति के पास भेजना।

❖ वित्तीय शक्तियाँ-

- ❖ संचित निधि पर नियंत्रण - बिना अनुमति खर्च/जमा नहीं हो सकता।
- ❖ बजट विधानसभा में प्रस्तुत कराना सुनिश्चित करता है।
- ❖ धन विधेयक केवल राज्यपाल की अनुशंसा पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- ❖ आकस्मिक व्यय हेतु आकस्मिक निधि से अग्रिम ले सकता है।
- ❖ प्रत्येक **5 वर्ष** में वित्त आयोग का गठन करता है।

अनुच्छेद	विवरण
अनुच्छेद 200	धन विधेयक को पूर्वानुमति प्रदान करना।
अनुच्छेद 202	बजट को पूर्वानुमति प्रदान करना।
अनुच्छेद 203 (3)	राज्यपाल की: पूर्वानुमति से अनुदान की माँग पर मतदान होता है। वित्तीय आपातकाल में धन विधेयक राष्ट्रपति को भेजना।
अनुच्छेद 205	अनुपूरक अतिरिक्त या अधिक अनुदान की माँग।
अनुच्छेद 243 (I और Y)	राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति करना।
अनुच्छेद 267 (2)	राज्य आकस्मिक: निधि पर नियंत्रण। वह अप्रत्याशित व्यय को पूरा करने के लिए राज्य को अग्रिम राशि देता है।

❖ न्यायिक शक्तियाँ-

- ❖ जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति/स्थानांतरण करता है (अनु. 233)।
- ❖ उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में परामर्श करता है (अनु. 217)।
- ❖ अनु. 234 के अनुसार अन्य न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति करता है।
- ❖ न्यायाधीशों को शपथ दिलाता है।

अनुच्छेद	विवरण
अनुच्छेद 161	क्षमादान की शक्तियाँ
अनुच्छेद 217	राज्यपाल राज्य उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति में परामर्श लेने का हकदार है।
अनुच्छेद 233	राज्यपाल जिला न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण करता है।
अनुच्छेद 234	राज्यपाल द्वारा राज्य की न्यायिक सेवा में व्यक्तियों (जिला न्यायाधीशों के अलावा) की नियुक्ति के लिए समर्थन।

❖ क्षमा की शक्ति (अनु. 161)-

- ❖ राज्य कानून के अंतर्गत अपराधों की सजा माफ, निलंबित या कम कर सकता है।

❖ स्वविवेकीय शक्तियाँ (अनु. 163)-

- ❖ राष्ट्रपति शासन की सिफारिश, विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजना, बहुमत न मिलने पर मुख्यमंत्री की नियुक्ति आदि मामलों में विवेकाधिकार।
- ❖ असम, मिजोरम, त्रिपुरा आदि राज्यों में जनजातीय परिषदों के वित्तीय मसलों पर विशेष अधिकार।

अनुच्छेद	विवरण
अनुच्छेद 163 (3)	यह कथन मंत्रिपरिषद् की सलाह की गोपनीयता और न्यायिक हस्तक्षेप की सीमा से संबंधित है। इसका अर्थ है कि किसी न्यायालय में यह जांच नहीं की जा सकती कि मंत्रियों ने राष्ट्रपति या राज्यपाल को कोई सलाह दी थी या नहीं, और यदि दी थी तो उसकी विषयवस्तु क्या थी।
अनुच्छेद 164 (1)	मुख्यमंत्री की नियुक्ति त्रिशंकु सरकार (बहुमत नहीं हो)
अनुच्छेद 167	मुख्यमंत्री से विभिन्न विधायी व प्रशासनिक सूचनाएँ प्राप्त करना।
अनुच्छेद 174 (2)	विधानसभा को भंग करना। मंत्रिपरिषद् को बर्खास्त करना।
अनुच्छेद 175(2)	राज्यपाल को यह अधिकार है कि जब किसी राज्य सरकार के बहुमत को लेकर संदेह उत्पन्न हो जाए, तब वह मुख्यमंत्री या सत्तारूढ़ दल को विधानसभा में अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए कह सकता/सकती है। इस प्रक्रिया को फ्लोर टेस्ट या बहुमत परीक्षण कहा जाता है।
अनुच्छेद 176	विधानसभा का विशेष सत्र बुलाना।

राष्ट्रपति शासन के दौरान राजस्थान में राज्यपाल

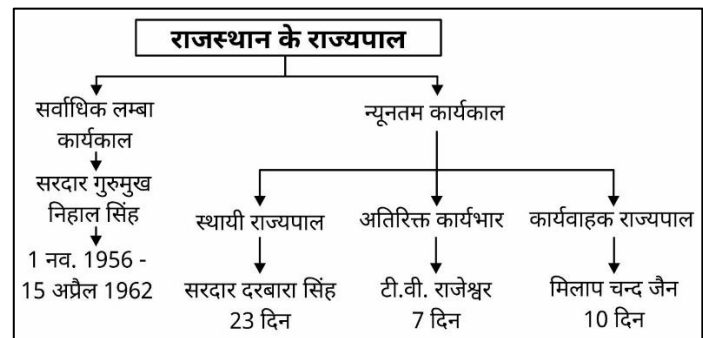
क्र.	अवधि	अवधि (दिन)	राज्यपाल
1	13 मार्च - 26 अप्रैल 1967	44 दिन	डॉ. सम्पूर्णानंद, सरदार हुकुम सिंह
2	30 अप्रैल - 21 जून 1977	52 दिन	वेदपाल त्यागी, रघुकुल तिलक
3	17 फरवरी - 5 जून 1980	109 दिन	रघुकुल तिलक
4	15 दिसंबर 1992 - 3 दिसंबर 1993	353 दिन	डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी, धनिकलाल मंडल (प्रभारी), बलिराम भगत

पद पर रहते हुए राज्यपालों की मृत्यु

क्रम	नाम	वर्ष
1	दरबारा सिंह	1998
2	निर्मल चन्द जैन	2003
3	एस. के. सिंह	2009
4	श्रीमती प्रभा राव	2010

राजस्थान की महिला राज्यपाल

नाम	कार्यकाल	विशेष जानकारी
श्रीमती प्रतिभा पाटिल	08-11-2004 से 23-06-2007	प्रथम महिला राज्यपाल, पद से त्याग-पत्र देने वाली प्रथम महिला
श्रीमती प्रभा राव	03-12-2009 से 24-01-2010 (अतिरिक्त प्रभार) 25-01-2010 से 26-04-2010	कार्यकाल के दौरान मृत्यु, HP की राज्यपाल के रूप में अतिरिक्त प्रभार
श्रीमती मार्गरेट अल्वा	12-05-2012 से 07-08-2014	—



- ❖ राजस्थान के वे राज्यपाल जो किसी राज्य/संघ शासित प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे -

1.	गुरुमुख निहाल सिंह	दिल्ली के मुख्यमंत्री
2.	मदनलाल खुराना	दिल्ली के मुख्यमंत्री
3.	सम्पूर्णानंद	उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री
4.	कल्याण सिंह	उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री
5.	एम. चेन्नारेड्डी	आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री
6.	वसंतराव पाटिल	महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री
7.	दरबारा सिंह	पंजाब के मुख्यमंत्री

❖ वे राज्यपाल जो लोकसेवा आयोग के सदस्य रहे -

1. रघुकुल तिलक

- ★ 12 मई, 1977 से 8 अगस्त, 1981
- ★ राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य रहे।
- ★ प्रथम राज्यपाल जिन्हें बर्खास्त किया गया।
- ★ तीसरे राष्ट्रपति शासन (1980) के समय राज्य के गवर्नर।
- ★ रेलवे सेवा चयन आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष थे।

2. UPSC के सदस्य - स्वरूप सिंह

- ★ संघ लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य रहे।
- ★ अतिरिक्त प्रभार वाले राजस्थान के प्रथम राज्यपाल।

❖ राजस्थान के वे राज्यपाल जो किसी राज्य की विधानसभा के अध्यक्ष रहे हैं -

1.	सरदार गुरुमुख निहाल सिंह	दिल्ली विधानसभा
2.	दरबारा सिंह	पंजाब विधानसभा
3.	धनिकलाल मण्डल	बिहार विधानसभा
4.	हरिभाऊ बागडे	महाराष्ट्र विधानसभा

❖ राजस्थान के वे राज्यपाल जिन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दिया-

1.	जोगिन्दर सिंह	1977 में
2.	बसंत राव पाटिल	1987 में
3.	देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय	1991 में
4.	मदनलाल खुराना	2004 में
5.	प्रतिभा पाटिल	2007 में

❖ राजस्थान के राज्यपाल जिन्होंने कार्यवाहक (10) व अतिरिक्त प्रभार (9) के रूप में कार्य किया-

कार्यवाहक राज्यपाल	अतिरिक्त राज्यपाल
1. जगत नारायण	1. स्वरूप सिंह (गुजरात)
2. वेदपाल त्यागी	2. धनिक लाल मंडल (हरियाणा)
3. के.डी. शर्मा	3. कैलाशपति मिश्र (गुजरात)
4. पी.के. बनर्जी	4. टी.वी. राजेश्वर (उत्तरप्रदेश)
5. डी.पी. गुप्ता	5. ए.आर. किदवई (हरियाणा)
6. जे.एस. वर्मा	6. रामेश्वर ठाकुर (मध्यप्रदेश)
7. मिलाप चन्द जैन	7. प्रभा राव (हिमाचल प्रदेश)
8. एन.एल. टिबेरवाल	8. शिवराज पाटिल (पंजाब)
9. शैलेन्द्र कुमार सिंह	9. रामनाईक (उत्तरप्रदेश)
10. प्रभा राव	-
11. मागरिट अल्वा	

❖ राजस्थान के संदर्भ में राज्यपाल

- ❖ राजस्थान में 30 मार्च, 1949 से 31 अक्टूबर, 1956 तक राज्य में राजप्रमुख का पद था।
- ❖ इस पद पर जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय नियुक्त थे। सवाई मानसिंह द्वितीय राजस्थान के पहले व एकमात्र राजप्रमुख थे।

- ❖ राजस्थान में 1 नवम्बर, 1956 को राज्य के पुनर्गठन के बाद राजप्रमुख का पद समाप्त करके राज्यपाल का पद सृजित किया गया।
- ❖ राज्य के प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहालसिंह बने।

राज्यपाल से संबंधित प्रमुख समितियां

प्रथम प्रशासनिक सुधार समिति	1966
राज मन्नार समिति	1969
भगवान सहाय समिति	1970
सरकारिया आयोग	1983
वैकट चलैया आयोग	2000
पुंछी आयोग	2007

राजस्थान के राज्यपाल

क्र. स.	राज्यपाल का नाम	कार्यकाल	विशेष विवरण
1.	राजप्रमुख सवाई मानसिंह	30 March 1949 से 31 Oct. 1956	राजस्थान के प्रथम एवं एकमात्र राजप्रमुख पोलो के प्रमुख खिलाड़ी (इंडियन पोलो एसोसिएशन के अध्यक्ष) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय कोर्ट के वंशानुगत सदस्य।
नोट:- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 नवंबर, 1956 को 7 वें संविधान संशोधन द्वारा राजप्रमुख की संस्था को समाप्त कर दिया गया। 25 अक्टूबर 1956 को श्री गुरुमुख निहाल सिंह को राजस्थान का प्रथम राज्यपाल नियुक्त किया गया।			
2.	सरदार गुरुमुख निहाल सिंह	1 Nov. 1956 से 15 April 1962	राजस्थान के प्रथम राज्यपाल - 25 अक्टूबर, 1956 को नियुक्त। सर्वाधिक कार्यकाल वाले राज्यपाल। (सबसे लम्बा कार्यकाल) दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, रामजस कॉलेज, श्रीराम कॉलेज के प्राचार्य रहे।
3.	डॉ. संपूर्णानंद सिंह	16 April 1962 से 15 April 1967	राजस्थान के प्रथम राष्ट्रपति शासन (1967) के समय गवर्नर थे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। भारत-चीन युद्ध (1962) के समय राजस्थान के राज्यपाल थे। डूंगर महाविद्यालय बीकानेर के प्राचार्य रहे।
4.	सरदार हुकुम सिंह	16 April 1967 से 19 Nov. 1970	यह दो बार राज्यपाल रहे। संविधान सभा, अंतरिम संसद के सदस्य रहे। लोकसभा अध्यक्ष के समय प्रथम बार लोकसभा में मंत्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव की अनुमति दी। प्रमुख पुस्तकें - द स्पोक्समैन, द प्रोब्लम ऑफ सिख्स, द सिख केस।

5.	न्यायमूर्ति जगत नारायण	20 Nov. 1970 से 23 Dec. 1970	राज्य के प्रथम कार्यवाहक राज्यपाल।
6.	सरदार हुकुम सिंह	24 Dec. 1970 से 30 June 1972	दूसरी बार राज्यपाल।
7.	सरदार जोगिंदर सिंह	1 July 1972 से 14 Feb. 1977	प्रथम राज्यपाल जिन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दिया। गर्वनर रिलीफ फंड विनियम-1973, गठन - 14 मार्च, 1973 भारत में दूसरी बार आपातकाल के समय राज्यपाल। उड़ीसा एवं राजस्थान के राज्यपाल, नेशनल राइफल एसोसिएशन के महासचिव थे।
8.	न्यायमूर्ति श्री वेदपाल त्यागी	11 Feb. 1977 से 11 May 1977	द्वितीय न्यायमूर्ति जो राज्यपाल बने। द्वितीय कार्यवाहक राज्यपाल। यह द्वितीय राष्ट्रपति शासन (1977) के समय गवर्नर थे।
9.	रघुकुल तिलक	12 May 1977 से 8 Aug. 1981	राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य रहे। प्रथम राज्यपाल जिन्हें बर्खास्त किया गया। तीसरे राष्ट्रपति शासन (1980) के समय राज्य के गवर्नर। रेलवे सेवा चयन आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष थे।
10.	न्यायमूर्ति श्री. के.डी. शर्मा	8 Aug. 1981 से 5 March 1982	IFS रहे।
11.	एयर चीफ मार्शल ओ.पी. मेहरा	6 March 1982 से 4 Jan. 1985	चीफ ऑफ एयर स्टॉफ रहे। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिकल लिमिटेड के अध्यक्ष रहे। इण्डियन ओलम्पिक एसोसिएशन के 5वें अध्यक्ष रहे। ड्रग्स कप एसोसिएशन के आजीवन अध्यक्ष, पुस्तक- मेमोरीज स्वीट एंड सौरा
12.	न्यायमूर्ति पी.के. बनर्जी	5 Jan. 1985 से 31 Jan. 1985	भारतीय फुटबाल टीम के कप्तान रहे।
13.	एयर चीफ मार्शल ओ.पी. मेहरा	1 Feb. 1985 से 3 Nov. 1985	-
14.	न्यायमूर्ति डी.पी. गुप्ता	4 Nov. 1985 से 19 Nov. 1985	सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश रहे।
15.	न्यायमूर्ति जगदीश शरण वर्मा	20 Nov. 1985 से 14 Oct. 1987	सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे।
16.	वसंत राव पाटिल	15 Oct. 1987 से 19 Feb. 1988	महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे। 1967 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय सहकारी चीनी मिल संघ के अध्यक्ष।
17.	सुखदेव प्रसाद	20 Feb. 1988 से 2 Feb. 1989	राज्यसभा सांसद रहे। केन्द्रीय मंत्री मण्डल में स्टील एवं माइन्स विभाग के उपमंत्री
18.	न्यायमूर्ति जगदीश शरण वर्मा	3 Feb. 1989 से 19 Feb. 1989	सुखदेव प्रसाद के चिकित्सा अवकाश के कारण राज्य के कार्यवाहक राज्य के दो बार कार्यवाहक राज्यपाल रहे।
19.	सुखदेव प्रसाद	20 Feb. 1989 से 2 Feb. 1990 तक	-
20.	मिलाप चंद जैन	3 Feb. 1990 से 13 Feb. 1990	राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे। राजीव गांधी हत्याकाण्ड में बने जांच आयोग के अध्यक्ष।
21.	प्रोफेसर देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय	14 Feb. 1990 से 25 Aug. 1991	भारत-फ्रांस संयुक्त आयोग के प्रथम भारतीय सह अध्यक्ष बने। भारत-यूगोस्लाविया, भारत चेकोस्लाविया संयुक्त आयोग के सह-अध्यक्ष रहे। इण्डियन काउंसिल ऑफ फिलोसॉफी रिसर्च के अध्यक्ष रहे।
22.	डॉ. स्वरूप सिंह	26 Aug. 1991 से 4 Feb. 1992	संघ लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य रहे। अतिरिक्त प्रभार वाले राजस्थान के प्रथम राज्यपाल।
23.	डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी	5 Feb. 1992 से 30 May 1993	आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। चौथे राष्ट्रपति शासन (1992) के समय राजस्थान के गवर्नर थे।
24.	धनिकलाल मंडल	31 May 1993 से 29 June 1993	बिहार विधानसभा के अध्यक्ष रहे।
25.	बलिराम भगत	30 June 1993 से 30 April 1998	लोकसभा अध्यक्ष रहे। भारत के विदेश मंत्री एवं रक्षामंत्री भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।
26.	सरदार दरबारा सिंह	1 May 1998 से 23 May 1998	सबसे कम कार्यकाल वाले राज्यपाल, प्रथम राज्यपाल जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हो गई। पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष रहे।
27.	एन.एल. टिबरेवाल	24 May 1998 से 15 Jan. 1999	राजस्थान उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश रहे। कार्यवाहक राज्यपाल के रूप में सर्वाधिक कार्यकाल

28.	न्यायमूर्ति श्री. अंशुमान सिंह	16 Jan. 1999 से 13 May 2003	इलाहाबाद एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश चार बार राजस्थान के कार्यवाहक राज्यपाल
29.	निर्मल चन्द्र जैन	14 May 2003 से 22 Sept. 2003	पद पर रहते हुए मृत्यु मध्यप्रदेश के महाधिवक्ता, केन्द्रीय वित्त आयोग के सदस्य
30.	कैलाशपति मिश्र	22 Sept. 2003 से 13 Jan. 2004	-
31.	मदन लाल खुराना	14 Jan. 2004 से 31 Oct. 2004	दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे। राज्यपाल के पद से त्यागपत्र दे दिया। राजस्थान में जनता दरबार, दिल्ली का शेर। भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली के अध्यक्ष
32.	टी.वी. राजेश्वर	01 Nov. 2004 से 07 Nov. 2004	IPS अधिकारी जो आईबी के भूतपूर्व अध्यक्ष थे अतिरिक्त प्रभार वाले राज्यपाल। अतिरिक्त प्रभार के रूप में न्यूनतम कार्यकाल
33.	श्रीमती प्रतिभा पाटिल	08 Nov. 2004 से 23 June 2007	राज्य की प्रथम महिला राज्यपाल। देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति। राज्यसभा व लोकसभा दोनों सदनों में सदस्य रही।
34.	डॉ. ए. आर. किदवई	23 June 2007 से 05 Sept. 2007	संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे। जम्मू कश्मीर बैंक के निदेशक एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय के चांसलर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व सदस्य
35.	श्री शेलेन्द्र कुमार सिंह	06 Sept. 2007 से 01 Dec. 2009	न्यूयार्क में UNO में "परमानेंट मिशन ऑफ इण्डिया" के सदस्य। इनका भी निधन पद पर रहते हुआ।
36.	श्री रामेश्वर ठाकुर	10 July, 2009 से 22 July, 2009	मध्य प्रदेश के राज्यपाल रहे।
37.	श्री शेलेन्द्र कुमार सिंह	Dec. 23 July, 2009 से 01 Dec. 2009	-
38.	श्रीमती प्रभा राव	03 Dec. 2009 से 24 Jan. 2010	25 जनवरी, 2010 से 26 अप्रैल, 2010 तक राजस्थान की कार्यवाहक राज्यपाल नियुक्त हुई।
39.	श्रीमती प्रभा राव	25 Jan. 2010 से 26 April 2010	पद पर रहते हुए मृत्यु।
40.	श्री शिवराज पाटिल	28 April 2010 से 11 May 2012	भारत के गृह एवं रक्षामंत्री लोकसभा के अध्यक्ष एवं लोकसभा में प्रश्नकाल की ऑनलाइन ब्राडकास्टिंग शुरू की।
41.	श्रीमती मार्गरेट अल्वा	12 May 2012 से 07 Aug. 2014	राज्यसभा की उपसभापति रही। स्थानीय निकायों में महिलाओं के 33% प्रतिशत आरक्षण एवं 84वें संविधान संशोधन प्रस्ताव के लिए बनी चयन समिति में योगदान।
42.	श्री राम नाइक	08 Aug. 2014 से 03 Sept. 2014	राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने राज्य प्रोटोकॉल की व्यवस्था में संशोधन किया। 2014 के बाद राज्यपाल के लिए 'His Excellency', 'महामहिम' शब्द का प्रयोग नहीं करके 'Honourable' माननीय राज्यपाल अथवा राज्यपाल महोदय शब्द का प्रयोग किये जाने का प्रावधान किया।
43.	श्री कल्याण सिंह	04 Aug. 2014 से 02 Sept. 2019	राजस्थान के राज्यपाल तथा हिमाचल प्रदेश का अतिरिक्त प्रभार। बाबरी मस्जिद दंगों के समय उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे।
44.	श्री कलराज मिश्र	09 Sept. 2019 से 30 July 2024	समुप्रणा क्रांति आंदोलन के संयोजक, राजस्थान से पूर्व हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल।
45.	हरिभाऊ किशनराव वागडे	31 July 2024 से वर्तमान तक (व्यक्तिगत क्रमानुसार- 22वें पदानुसार - 45वें)	उपनाम - नाना। नियुक्ति - 27 जुलाई, 2024 औरंगाबाद के फुलब्री विधानसभा से से 5 बार विधायक रहे हैं। इससे पहले हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल (22 जुलाई से 18 सितम्बर 2019) रह चुके हैं। शिक्षा संस्था वरूड के संस्थापक सदस्य।

अभ्यास प्रश्न

1. संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन राष्ट्रपति शासन राजस्थान में कितनी बार लगाया गया है?
(a) 2 (b) 3 [c]
(c) 4 (d) 5
2. निम्नलिखित में से किसकी नियुक्ति राज्यपाल द्वारा नहीं की जाती है?
(a) राज्य का महाधिवक्ता
(b) राज्य का लोकायुक्त
(c) राज्य लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष
(d) उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश [d]
3. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद उपबंध करता है कि 'प्रत्येक राज्य के लिए राज्यपाल होगा'?
(a) अनु. 154 (b) अनु. 155
(c) अनु. 153 (d) अनु. 164 [c]
4. निम्नांकित में से कौन-सा सही समुचित नहीं है?
(a) अनुच्छेद 153 - राज्यपाल का पद
(b) अनुच्छेद 156 - राज्यपाल की पदावधि
(c) अनुच्छेद 154 - राज्यपाल की कार्यपालिका शक्ति
(d) अनुच्छेद 155 - राज्यपाल को पद से हटाया जाना [d]
5. निम्नलिखित में से कौन-सी राज्य में राज्यपाल की नियुक्ति के लिए आवश्यक योग्यता नहीं है?
(a) भारत का नागरिक होना चाहिए
(b) लोकसभा का सदस्य होना चाहिए
(c) न्यूनतम आयु 35 वर्ष होनी चाहिए
(d) राज्यसभा का सदस्य नहीं हो सकता [b]
6. राज्यपाल अपना त्याग-पत्र संबोधित करता है-
(a) राष्ट्रपति को
(b) प्रधानमंत्री को
(c) संघ के गृह मंत्री को
(d) उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति को [a]
7. किस सांविधानिक संशोधन द्वारा संविधान में यह जोड़ा गया कि एक व्यक्ति को दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है?
(a) चौथा संशोधन, 1955 (b) सातवाँ संशोधन, 1956
(c) बारहवाँ संशोधन, 1962 (d) पंद्रहवाँ संशोधन, 1963 [b]
8. राज्य के राज्यपालों की केन्द्र द्वारा नियुक्ति के प्रावधान को लिया गया है-
(a) कनाडा (b) अमेरिका
(c) स्विट्जरलैण्ड (d) आयरलैण्ड [a]
9. राजस्थान के किस राज्यपाल / राज्यपालों ने अपना कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व ही राज्यपाल पद से त्यागपत्र दे दिया-
1. दरबारा सिंह 2. मदन लाल खुराना
3. प्रतिभा पाटिल
(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) केवल 2 [b]
10. राजस्थान के वे राज्यपाल जिनका कार्यकाल के दौरान निधन हुआ-
1. एस. के. सिंह 2. श्रीमती प्रभा राव
3. निर्मल चंद जैन 4. दरबारा सिंह
- (a) केवल 2 (b) 2, 4
(c) 1, 2, 3, 4 (d) केवल 1 [c]
11. निम्नलिखित में से कौन, राजस्थान की प्रथम महिला राज्यपाल थीं?
(a) मारगिट अल्वा (b) प्रभा राव
(c) प्रतिभा देवी सिंह पाटिल (d) उमा भारती [c]
12. राजस्थान के प्रथम राज्यपाल कौन थे?
(a) गुरुमुख निहाल सिंह (b) हुकुम सिंह
(c) डॉ. संपूर्णानंद (d) रघुकुल तिलक [a]
13. राजस्थान में राज्यपाल राहत कोष का गठन निम्नलिखित में से किस पूर्व राज्यपाल के कार्यकाल के दौरान किया गया था?
(a) श्री जोगिंदर सिंह (b) श्री वसंत राव पाटिल
(c) श्री ओ.पी. मेहरा (d) श्री रघुकुल तिलक [a]
14. निम्नलिखित में से किसकी नियुक्ति राज्यपाल द्वारा नहीं की जाती है?
(a) राज्य का महाधिवक्ता
(b) राज्य का लोकायुक्त
(c) राज्य लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष
(d) उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश [d]
15. राज्य की कार्यपालिका शक्ति किसमें निहित होती है?
(a) गृह मंत्री
(b) मुख्यमंत्री
(c) सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश
(d) राज्यपाल [d]
16. संविधान के अनुच्छेद 155 के तहत राज्यपाल की नियुक्ति निम्न में से किसके द्वारा की जाती है?
(a) भारत के राष्ट्रपति (b) भारत के प्रधानमंत्री
(c) राज्य के मुख्यमंत्री (d) केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् [a]
17. संविधान के किस अनुच्छेद में राज्यपाल की शपथ का प्रारूप दिया गया है?
(a) अनु. 158 (b) अनु. 159
(c) अनु. 154 (d) अनु. 155 [b]
18. निम्न में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(a) अनुच्छेद 155- राज्यपाल की नियुक्ति
(b) अनुच्छेद 156 - राज्यपाल नियुक्त होने के लिए अर्हताएँ
(c) अनुच्छेद 158 - राज्यपाल के पद के लिए शर्तें
(d) अनुच्छेद 159 - राज्यपाल द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान [b]
19. राज्यपाल पद हेतु न्यूनतम आयु सीमा निर्धारित है-
(a) 35 वर्ष (b) 25 वर्ष
(c) 18 वर्ष (d) 50 वर्ष [a]
20. राजभव, राजस्थान में 'इन्फॉर्मास' पोर्टल किस राज्यपाल के कार्यकाल के दौरान प्रारंभ किया गया?
(a) अंशुमन सिंह (b) प्रतिभा देवी सिंह पाटिल
(c) कलराज मिश्र (d) कल्याण सिंह [c]





|

हिन्दी



- हिन्दी फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
- सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे और 'ध' को 'द' बोलते थे।
- इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया।
- सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
- भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है-

1.	प्राचीन भारतीय आर्य भाषा	1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
2.	मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	500 ई. पू. - 1000 ई. तक
3.	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा	1000 ई. - वर्तमान समय

संस्कृत

- वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) - 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
 - लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) - 1000 ई.पू. - 500 ई.पू.
- पालि (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
 - प्राकृत (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
 - अपभ्रंश (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
 - हिन्दी - 1000 ई. - वर्तमान समय
 - हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

भाषा

- भाषा (प्रकट करना) - संस्कृत
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।
- विशेष- राजस्थानी भाषा दिवस - 21 फरवरी
- हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर
- संविधान के भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351 में हिन्दी के राजभाषा होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
- विशेष- वर्तमान समय में 12 अनुसूची और 22 भाषाओं में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।

व्याकरण

- व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
 - व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
 - व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं-
- (1) वर्ण विचार
 - (2) शब्द विचार
 - (3) वाक्य विचार
- भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
 - लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
 - मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
 - अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
 - भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

वर्ण विचार

- वर्णों के व्यवस्थित क्रम को वर्णमाला कहते हैं।
- भाषा की सबसे छोटी उच्चारित इकाई ध्वनि कहलाती है।
- लिखित ध्वनि अर्थात् भाषा की सबसे छोटा लिखित अंश वर्ण कहलाता है।

- भाषा का वह अंश जिसका उच्चारण श्वास के एक झटके में पूर्ण हो जाए उसे अक्षर कहते हैं।

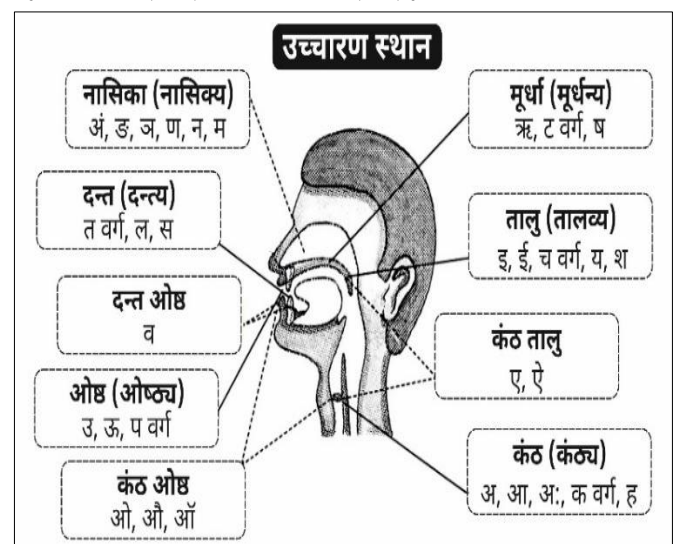
वर्ण के प्रकार -

- हिंदी वर्णमाला में मूल वर्णों की संख्या 44 होती है परंतु कुल वर्ण 53 माने गए हैं, जो निम्नानुसार है-

वर्णों का वर्गीकरण :-

हिन्दी में कुल वर्णों की संख्या - 53					
स्वर - 11	अयोगवाह - 2	व्यंजन - 33	संयुक्ताक्षर - 4	उत्क्षिप्त व्यंजन - 2	विशिष्ट व्यंजन - 1
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ	अं, अः	क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	झ, ढ़	ळ

1. उच्चारण स्थान के आधार पर :-



2. स्वर-तंत्रियों में कंपन/नाद/घोष के आधार पर :-

अघोष	घोष
उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से बिना टकराये आसानी से निकल जाए।	उच्चारण के समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से टकराकर घोष (नाद) उत्पन्न करती हो।

क, ख च, छ ट, ठ त, थ प, फ श, ष, स	ग, घ, ङ ज, झ, ञ ड, ढ, ण द, ध, न् ब, भ, म् य, र, ल, व, ह सभी स्वर (11)
---	---

3. प्राण वायु प्रक्षेप की दृष्टि से :-

अल्पप्राण	महाप्राण
उच्चारण में कम हवा (प्राण या श्वास) बाहर निकलती है।	उच्चारण में अधिक हवा या श्वास बाहर निकलती है।
क, ग, ङ च, ज, ञ ट, ड, ण त, द, न् प, ब, म् य, र, ल, व सभी स्वर	ख, घ छ, झ ठ, ढ थ, ध फ, भ श, ष, स, ह विसर्ग (अः)

♦ वर्ण दो प्रकार के होते हैं-

(I) स्वर (II) व्यंजन

I. स्वर (अच्)

- ♦ जिन वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिन वर्णों के उच्चारण में हवा बिना किसी रुकावट के मुँह से बाहर आती है, स्वर कहलाते हैं।
- ♦ हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 मानी गई हैं, ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों की मात्राएँ :-

- ♦ 'अ' को छोड़कर प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। जब स्वरों का व्यंजनों के साथ प्रयोग किया जाता है, तो उनकी मात्राओं का ही प्रयोग किया जाता है।

A. स्वरों का वर्गीकरण -

1. उत्पत्ति अथवा मात्रा काल के आधार पर -

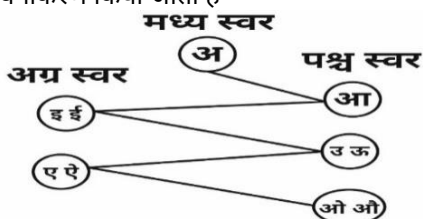
ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर	प्लुत स्वर
उच्चारण समय में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे	उच्चारण समय में मूल स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय, अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है	जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है,
अ, इ, उ, ऋ	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ	अ३, इ३, उ३, ॐ

- ♦ नोट - ए, ओ, ऐ, औ ये संयुक्त/संधि स्वर कहलाते हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं।

अ + इ = ए अ + ए = ऐ
अ + उ = ओ अ + ऊ = औ

2. जिह्वा के भाग के आधार पर -

- ♦ जिह्वा के तीनों भाग- अग्र, मध्य और पश्च के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण किया जाता है -



3. मुखकृति के आधार पर -

संवृत	अर्द्धसंवृत	विवृत	अर्द्धविवृत
उच्चारण के दौरान बिल्कुल कम मुँह खुले	उच्चारण के दौरान संवृत से थोड़ा ज्यादा मुँह खुले	उच्चारण के दौरान पूरा मुँह खुले	उच्चारण के दौरान विवृत से थोड़ा कम मुँह खुले
इ, ई, उ, ऊ	ए, ओ	आ	अ, ऐ, औ

4. ओष्ठों की स्थिति के आधार पर -

अवृत्तामुखी स्वर	वृत्तामुखी स्वर
उच्चारण में होठ गोल नहीं होते हैं	उच्चारण में होठ गोल होते हैं
अ, आ, इ, ई, ए, ऐ	उ, ऊ, ओ, औ, ऑ

II. व्यंजन

- ♦ जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। किसी व्यंजन का उच्चारण तभी किया जा सकता है, जब उसमें स्वर मिला हुआ हो। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर या स्वर तंत्र के किसी भाग से टकरा कर घर्षण करती हुई या रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं।

जैसे-क, ख, ग आदि।

B. व्यंजनों का वर्गीकरण -

1. प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद -

स्पर्श व्यंजन	अंतस्थ व्यंजन	ऊष्म व्यंजन
क, ख, ग, घ, ङ च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न् प, फ, ब, भ, म्	य, र, ल, व्	श, ष, स, ह

2. उच्चारण के आधार पर व्यंजनों के भेद -

1.	स्पर्श	क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2.	स्पर्श-संघर्षी	च, छ, ज, झ
3.	नासिक्य	ङ, ञ, ण, न्, म्
4.	संघर्षहीन/अर्द्धस्वर	य, व्
5.	प्रकंपित/लुठित	र्
6.	पार्श्विक	ल्
7.	संघर्षी	श, ष, स
8.	अलिजिह्वा/काकल्य/खरतंत्री	ह

- 1. **द्वित्व व्यंजन** - दो समान व्यंजनों का साथ-साथ प्रयुक्त होना जिसमें पहला व्यंजन स्वर रहित हो द्वित्व कहलाता है।

जैसे - बच्चा, बल्ला, बिल्ली, अब्बू, कच्ची, सम्मान आदि।

2. गृहीत ध्वनियाँ -

- ♦ **ओं** - इसका प्रयोग केवल अंग्रेजी के शब्दों में किया जाता है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है।

जैसे— बॉल, कॉल, हॉल, डॉक्टर, डॉल आदि।

- ♦ **'ज़' और 'फ़'** - इनका प्रयोग केवल अरबी-फारसी के शब्दों में किया जाता है; जैसे-कागज, सजा, जरा, शरीफ़, कफ़न, नफ़रत आदि।

अरबी/ फ़ारसी भाषा से आगत वर्ण क़, ख़, ग़, ज़, फ़

3. वर्ण विच्छेद/विश्लेषण -

- ◆ शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसके ज्ञान द्वारा वर्तनी व उच्चारण की अशुद्धियों से बचा जा सकता है **जैसे- अचानक** - अ + च् + आ + न् + अ + क् + अ
स्वच्छ - स् + व् + अ + च् + छ् + अ
कमल - क् + अ + म् + अ + ल् + अ

4. अयोगवाह -

- ◆ हिन्दी में दो अयोगवाह ध्वनियाँ हैं- **अं और अः**।
- ◆ अनुस्वार (ँ) और विसर्ग (ः) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है।
- ◆ इनका मेल हमेशा स्वर के साथ होता है।
- ◆ विशेष- उत्क्षिप्त - 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ 'ड' और 'ढ' से भिन्न हैं। ये दोनों ध्वनियाँ कभी शब्द के प्रारंभ में नहीं आती।

5. **अनुनासिक** - जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। नाक की सहायता से बोले जाने के कारण इन्हें 'अनुनासिक' कहा जाता है **जैसे-गाँव, पाँच।**

6. **अनुस्वार** - जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय व्यंजन के ऊपर (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। **जैसे- कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंधा।**

7. **अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर** - उच्चारण करते समय जब वायु नासिका से टकराकर या रुककर बाहर निकले तो ऐसे स्वर अनुस्वार कहलाते हैं उच्चारण करते समय जब वायु मुख के साथ-साथ नासिका से भी बाहर निकले, तो ऐसे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं **जैसे-पाँच।**

अभ्यास प्रश्न

- निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व
- निम्नलिखित में से अर्द्धस्वर हैं-
(a) य, व (b) अ, इ
(c) आ, ई (d) ए, ऐ
- अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है-
(a) वर्ण (b) ध्वनि
(c) शब्द (d) वाक्य
- वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती, कहलाते हैं-
(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) विसर्ग (d) अयोगवाह
- निम्नलिखित में से 'अयोगवाह' वर्ण है-
(a) अ, आ (b) अं, अः
(c) अ, अः (d) आ, अं
- 'ह' वर्ण का उच्चारण स्थान होता है-
(a) कंठ (b) काकल्य
(c) अलजिह्वा (d) उपर्युक्त सभी
- निम्नलिखित में से अल्पप्राण वर्ण नहीं है-
(a) क, ज, ञ (b) च, ड, ण
(c) फ, ब, म (d) त, ब, न
- निम्नलिखित में से घोष/सघोष वर्ण हैं-
(a) अ, ख, ब (b) ई, ख, फ
(c) ऊ, ज, ध (d) ए, थ, भ
- यदि ऊपर के होंठ को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुविधा होगी-
(a) व (b) ब
(c) व और ब दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
- निम्नलिखित में से स्वर रहित 'र्' का उदाहरण है-
(a) क्रम (b) गृह
(c) ट्रक (d) आशीर्वाद
- हिंदी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
(a) 2 (b) 4
(c) 6 (d) 8

- 'र' का विवरण है-
(a) वत्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(b) वत्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण, व्यंजन
(c) वत्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(d) वत्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण, व्यंजन
- जब एक ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?
(a) संयुक्त ध्वनियाँ
(b) युग्मक ध्वनियाँ
(c) संपृक्त ध्वनियाँ
(d) पारस्परिक ध्वनियाँ
- स्पर्श व्यंजन, कंठ्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि हैं-
(a) क (b) ग
(c) ख (d) घ
- अनुस्वार किसका कार्य करता है?
(a) विसर्ग का
(b) चंद्रबिंदु का
(c) पंचम वर्ण का
(d) स्वर का
- निम्नलिखित शब्दों में से नवीन विकसित ध्वनियाँ कौन-सी है?
(a) ख, ग (b) उ, ऊ
(c) ऐ, औ (d) श, स
- किन ध्वनियों को 'अनुस्वार' कहा जाता है?
(a) स्वर के बाद में आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ
(b) स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनियाँ
(c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ
(d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ
- किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(a) कृपा (b) कृष्ण
(c) दृष्टि (d) ग्रह
- हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?
(a) क (b) छ
(c) त्र (d) ज्ञ

ANSWER KEY

1. [d]	2. [a]	3. [c]	4. [a]	5. [b]
6. [d]	7. [c]	8. [c]	9. [b]	10. [d]
11. [a]	12. [a]	13. [b]	14. [c]	15. [c]
16. [a]	17. [a]	18. [d]	19. [a]	





ENGLISH



- ◆ अंग्रेजी में a, an और the को Articles कहते हैं। ये दो 'प्रकार के होते हैं -

- Indefinite Articles - a, an
- Definite Article - the

(1) Indefinite Article -

- ◆ A तथा an का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पहले होता है जिनको गिना जा सके जैसे - A chair is made of wood. इस वाक्य में chair को गिना जा सकता है अतः इसके पूर्व a का प्रयोग हुआ है wood (लकड़ी) को यहाँ गिना नहीं जा सकता। अतः इसके पहले Indefinite Article का प्रयोग नहीं हुआ है।

(2) Definite Article-

- ◆ यह निश्चित Noun के पहले प्रयोग होता है। जैसे - I went to call the teacher (the teacher of our class).

1. Use of 'A' and 'An' - Indefinite Articles

'A' का प्रयोग

नियम -

- (a) Indefinite Article 'a' का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पूर्व किया जाता है जिनकी गिनती की जा सकती है और जिनका उच्चारण व्यंजन (Consonant) की ध्वनि से होता है। जैसे - a dog, a woman, a horse, a boy, a table, आदि ये शब्द क्रमशः 'ड', 'व', 'ह', 'ब' तथा ट ध्वनि से आरम्भ होते हैं। अतः Article 'a' इनके पूर्व लगा है।
- (b) जब 'u' की आवाज 'यू' हो। जैसे - a university, a European, a useful thing, a unit.

'An' का प्रयोग।

नियम -

- (a) Indefinite Article an' का प्रयोग उन शब्दों से पहले होता है जो किसी स्वर (a, e, i, o, u) से प्रारम्भ हों और जिनका उच्चारण भी स्वर की तरह होता हो। जैसे - an elephant, an ass, an orange, an umbrella, an inkpot.
- (b) जिन शब्दों में 'h' शान्त रहता है, उनसे पहले 'an' का प्रयोग होता है। जैसे - an hour, an honest man, an honourable man.
- ◆ A तथा An का प्रयोग निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा एवं प्रयोग किया जा सकता है।

1. प्रथम बार प्रयुक्त होने वाले एकवचन गिनने योग्य संज्ञाओं (Singular Countable Nouns) के पहले:

- ◆ I have a book.
- ◆ She lives in a hut.
- ◆ He saw an old man.
- ◆ Mr Sharma is an umpire in this match.

2. ऐसी एकवचन पूरक संज्ञाओं (Noun Complements) से पूर्व जो किसी पेशे या व्यवसाय (profession) से सम्बन्धित हों:

- ◆ She is a nurse. ◆ He is an engineer.
- ◆ Neeraj is a doctor. ◆ She is an actress.

3. Adjective + Noun की स्थिति में:

- ◆ a big elephant.
- ◆ an old woman.
- ◆ an ugly child.
- ◆ a useful book.

4. ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए जो मूल्य, गति, अनुपात आदि का बोध कराती हों:

- ◆ two rupees a kilo, six times a day, eighty rupees a dozen, 20 km an hour, ten rupees a meter, इत्यादि।

5. संख्यात्मक/मात्रात्मक अभिव्यक्तियों से पूर्व:

- ◆ a pair, a couple, a dozen, half a dozen, a hundred, a thousand, a lot, a great deal, a great man, a quarter, a million इत्यादि।

6. 'a' तथा 'an' का प्रयोग 'एक-से' (same) के अर्थ में भी होता है:

- ◆ Birds of a feather flock together.
- ◆ These are two sides of a coin.
- ◆ Men of a mind always group together.
- ◆ Take two at a time.

7. Mr/ Mrs / Miss + surname के पहले वक्ता से उनका परिचय न होने का भाव दर्शाने के लिए a का प्रयोग होता है:

- ◆ a Mr Sharma, a Mrs Mathur, a Miss Gupta इत्यादि।
- ◆ a Mr Sharma से आशय ऐसे व्यक्ति से है, जो Mr Sharma के नाम से पुकारा जाता है परन्तु वक्ता से अपरिचित है; परिचित अवस्था में केवल Mr Sharma या Mrs Mathur लिखते हैं।

Exercise : 1

Fill in the blanks with 'a' or 'an':

1. He was wise teacher.
2. It was long way to the forest.
3. Now cricket has become international game.
4. They will be back in week.
5. I will finish this work within hour.
6. Rani hopes to win lottery.
7. He is so good umpire that every player respects him.
8. We are to play one-day match next week.
9. He is honest man of our city.
10. Can you give example of a cruel king?
11. My father is MLA.
12. My friend's father is UDC.

Answers:

- | | | | |
|-------|--------|--------|-------|
| 1. a | 2. a | 3. an | 4. A |
| 5. an | 6. a | 7. an | 8. a |
| 9. an | 10. an | 11. an | 12. a |

2. Use of 'the' - Definite Article

- ◆ The एक definite article है और इसका प्रयोग एकवचन व बहुवचन (Singular and Plural Nouns) के पूर्व निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है -

1. एक Noun के पहले जिसका पूर्व में उल्लेख किया जा चुका हो:

- ◆ I saw a lion. The lion was sleeping under a tree. पहले वाक्य में मैंने एक शेर देखा। (दूसरे वाक्य में वही) शेर पेड़ के नीचे सो रहा था।
- ◆ We heard a noise. The noise came from a neighbour's house.

2. Adjectives की Superlative Degree के पहले:

- ◆ Ravi is the best singer in the school.
- ◆ My uncle is the richest man in the town.

अपवाद :

- ◆ किसी सम्बन्धवाचक विशेषण (Possessive Adjective) जैसे: my, his, her, their, your, our के बाद Adjective की Superlative Degree का प्रयोग होने पर the का प्रयोग नहीं होता, जैसे:
- ◆ He is my best friend.
- ◆ Mr Dixit is our best teacher.

3. किसी शब्द समूह (Phrase) या उपवाक्य (Clause) से सुनिश्चित होने वाले Noun के पहले:

- ◆ The girl in the blue skirt is my sister.
- ◆ The man with a little nose is our principal.
- ◆ The cars made in our factory are the strongest ones.
- ◆ The book on the table belongs to the library.
- ◆ The man who went out is an excellent singer.

4. ऐसे noun के पहले जो अपनी सम्पूर्ण जाति (the whole class or race) का बोध कराता है:

- ◆ The dog is a faithful animal. (यहाँ अर्थ 'समस्त कुत्ता जाति') से है।
- ◆ The elephant has a long trunk.
- ◆ The cat likes milk.

5. नदियों, सागरों, महासागरों, खाड़ियों, मरुस्थलों, द्वीप-समूहों, पर्वत श्रृंखलाओं, नहरों, जंगलों तथा देशों के बहुवचनीय नामों के पहले:

- ◆ The Ganga, The Yamuna (rivers)
- ◆ The Bay of Bengal (बंगाल की खाड़ी)
- ◆ The Arabian Sea (अरब सागर)
- ◆ The Gulf of Mexico (मेक्सिको की खाड़ी)
- ◆ The Thar desert, The Sahara Desert (सहारा मरुस्थल)
- ◆ The Himalayas (हिमालय पर्वत श्रृंखला)
- ◆ The West Indies, The UK, The USA (संयुक्त राज्य अमेरिका)

Note:

- ◆ झीलों के नाम के पूर्व Lake, पर्वत या चोटी के नाम के पूर्व Mount व किसी अन्तरीप के नाम से पूर्व Cape शब्द का प्रयोग होने की स्थिति में the का प्रयोग नहीं होता है, जैसे: Cape Camorin, Mount Everest, Lake Mansarovar इत्यादि।

6. संज्ञा (Noun) की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण (Adjective) शब्दों के पूर्व the का प्रयोग होता है:

- ◆ The brave always rule over the earth. (बहादुर व्यक्ति)
- ◆ The rich should help the poor. (अमीर व्यक्ति)
- ◆ The weak can never do anything. (कमजोर व्यक्ति)

7. विश्व में अपने ढंग की अनोखी अथवा एकमात्र वस्तुओं के लिए:

- the sun, the moon, the sky, the earth, the world, the Taj, the Wall of China.

8. दिशाओं के नाम के पहले:

- the east, the west, the south, the north.

9. ऐसे नामों के पहले जो Adjective + Noun के रूप में हों:

- the National Highway, the New South Coast, the Gold Coast.

10. धार्मिक पुस्तकों, वाद्य-यन्त्रों एवं क्रमवाचक संख्याओं से पूर्व:

- the Geeta, the Bible, the Quran, the Ramayana, the violin, the flute, the fourth, the last, the next, इत्यादि।

11. Comparative Degree के दो बार प्रयोग की स्थिति में:

- ◆ The more you have, the more you want.
- ◆ The sooner, the better.
- ◆ The higher you go, the cooler you feel.
- ◆ The better I know her, the more I admire her.

12. जब किसी Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा) की तुलना किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान या वस्तु से की जाती है:

- ◆ Kalidas is the Shakespeare of India.
- ◆ Kashmir is the Switzerland of Asia.

13. धर्म, समुदाय, जाति, राष्ट्रीयता, राजनीतिक दलों, जहाजों, रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों, जलपोतों आदि के नाम के पहले:

- the Hindus, the Sikhs, the Jats, the Vaishnavas, the English, the Indians, the Americans, the Congress, the BJP., the Nilgiri, the Kanishka, the Vikrant, the Chetak Express.

14. Plural Surnames के पहले पूरे परिवार को बताने के लिए:

- ◆ the Guptas, the Sharmas, इत्यादि।

15. शरीर के अंगों के नाम के पहले:

- ◆ He caught her by the hair.
- ◆ She grabbed him by the neck.

16. तारीखों एवं राष्ट्रीय महत्व के दिनों के पहले:

- ◆ the 25th July, the 15th August, the 26th January, the Independence Day, the Republic Day इत्यादि।

17. same, only, opposite, front, end, beginning जैसे शब्दों के पूर्व:

- ◆ the same scene, the only son, the opposite party, the front page, the end of the play, the beginning of the story.

18. all, some of (Plural Noun), one of (Plural Noun), each of (Plural Noun) के साथ:

- ◆ all the boys, some of the students, one of the girls, each of the winners.

The Omission of the Definite Article

निम्नलिखित स्थितियों में Definite Article 'the' प्रयोग नहीं होता है:

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा), Material Noun (पदार्थवाचक संज्ञा) तथा Abstract Noun (भाववाचक संज्ञा) के पूर्व:

- ◆ Arjun was a great archer.
- ◆ Gold is costlier than silver.
- ◆ Wisdom is greater than wealth.

2. जब किसी Common Noun का व्यापक अर्थ में प्रयोग होता हो:

- ◆ Man is mortal.
- ◆ Man is a social animal.

3. भाषाओं, अध्ययन के विषयों, सार्वजनिक स्थलों, खेलों, बीमारियों तथा निश्चित समय पर किये जाने वाले भोजनों के नाम के पहले:

- ◆ I am learning French.
- ◆ She doesn't like physics.
- ◆ We go to hospital when we are ill.
- ◆ They go to school regularly.

- ◆ We play hockey every day.
- ◆ She is suffering from pneumonia. (निमोनिया)
- ◆ I have lunch at noon.
- ◆ He goes to temple daily.
- 4. राष्ट्रों, रंगों, त्योहारों के नाम के पहले:**
- ◆ India has a very old and rich culture.
- ◆ The leaves of this plant have turned yellow.
- ◆ Diwali is celebrated with pomp and show.
- 5. महीनों, दिनों तथा ऋतुओं के नाम के पहले:**
- ◆ January is the first month of the year.
- ◆ Sunday comes before Monday.
- ◆ Spring is the first season of the year. (also The spring)
- 6. God शब्द के पहले इसका प्रयोग नहीं होता (जब 'G' बड़े अक्षर में लिखा गया हो और इसका अर्थ 'ईश्वर' हो):**
- ◆ He prayed to God for help.
- ◆ God is everywhere and within every soul.
- 7. kind of तथा sort of के बाद Definite Article नहीं आता है, जैसे:**
- ◆ What kind of man is he?
- ◆ He is a right sort of man.
- 8. church, market, school, college, hospital, prison, bed के पूर्व Definite Article नहीं लगाते, यदि इनका प्रयोग उसी कार्य के लिए किया जाये जिसके लिए वे बने हैं। Church में प्रार्थना के लिए जाते हैं; market में खरीदारी करने के लिए जाते हैं; school, college में पढ़ने के लिए जाते हैं; hospital में इलाज के लिए, prison में सजा भोगने के लिए तथा bed पर सोने के लिए जाते हैं- अतः यदि इसी अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग होता है, तो इन शब्दों के पूर्व Definite Article नहीं लगता है। जैसे :**
- ◆ My son goes to school. (पढ़ने के लिए)
- ◆ My father is ill and going to hospital. (इलाज के लिए)
- ◆ The thief has been sent to prison. (सजा काटने के लिए)
- ◆ You will have to go to court. (वाद-विवाद या झगड़ा निपटाने के लिए)
- ◆ I go to bed late at night. (सोने के लिए)
- ◆ He goes to church every Sunday. (प्रार्थना के लिए)
- लेकिन यदि इनका प्रयोग दूसरे कार्य के लिए हो तो Definite Article लगाते हैं, जैसे :**
- ◆ I am going to the school to enquire about the progress of my son.
- ◆ My father is going to the hospital to see his friend.
- ◆ Shall we go to the prison to know the prisoner's condition?
- ◆ I am going to the court to see the dacoits.
- ◆ The school is at the next crossing.
- ◆ The market is closed today.
- ◆ The church of Ajmer is very grand.
- 9. Proper Noun + 's' + Noun से पहले Definite Article नहीं आता, जैसे:**
- ◆ This is Mohan's house. (यहाँ the Mohan's house नहीं लिखना चाहिए।)

- ◆ This is Hari's book. (यहाँ the Hari's book नहीं लिखना चाहिए।)
- ◆ परन्तु यदि Common Noun के साथ 's' आता है, तो इसके पहले Article लगाते हैं, जैसे -
That is an old man's room.
This is a priest's hut.
- 10. Possessive Adjective के बाद Definite Article नहीं लगेगा, जैसे:**
This is my house. I know his address.

Exercise: 2

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x':

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति 'a', 'an', 'the' या 'x' से कीजिये-

1. we study in same school.
2. He has suffered lot.
3. Chetak Express is late today.
4. Sonu is tallest boy in his class.
5. A fox is cleverer than crow.
6. Gold is precious metal.
7. We are going to Kolkata next week.
8. We should help poor.
9. Swimming is useful exercise.
10. He works in insurance company.

Answers:

- ◆ 1. the 2. a 3. The 4. The
- 5. a 6. a 7. x 8. The
- 9. a 10. An

Exercise : 3

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x':

रिक्त स्थानों की पूर्ति 'a', 'an', 'the' या 'x' से कीजिये -

1. This morning my daughter expressed her desire to go to school.
2. All of us must be careful about disposing waste.
3. Some of the waste from kitchen can be dumped into a pit.
4. Abhay would spend hours together in front of screen.
5. Rathore joined Indian Forest service in 1960 as a park ranger.
6. Once upon time there was a great kingdom, named Mahapal.
7. But people of Mahapal were not happy.
8. King Mahender declared Vikram prince of Mahapal.
9. Hope this letter finds you in best of spirits.
10. Anjali visited me last week.

Answers:

- ◆ 1. x 2. the 3. the 4. The
- 5. the 6. a 7. the 8. the
- 9. the 10. x





संस्कृत

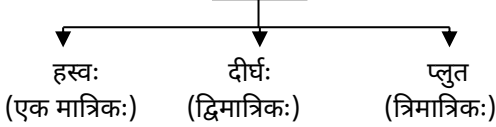


वर्ण की परिभाषा

- ◆ किसी भी भाषा की सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है, अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया हो एवं आगे विभाजन किया जाना संभव नहीं हो; उसे वर्ण कहते हैं।
- ◆ जैसे- क्, ख्, ग्, घ्, अ, इ, उ इत्यादि।
- ◆ अतः भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई को **ध्वनि** कहते हैं तथा भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई को **वर्ण** कहते हैं।
- वर्ण के भेद-** वर्ण के मुख्यतः दो भेद माने गए हैं-
अच् (स्वर) : स्वयं राजन्ते इति स्वराः या स्वयमुच्चारिता स्वराः अर्थात् जो स्वयं उच्चारित होते हैं, वे स्वर कहलाते हैं।
- ◆ इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी सहायता के किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं। इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से हैं-

1. मात्रा या समय के आधार पर वर्गीकरण-

स्वर (अच्)



"एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो, द्विमात्रो दीर्घमुच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो, व्यंजनं चार्धमात्रकम्॥"

- पाणिनि द्वारा रचित 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में प्रयुक्त माहेश्वर सूत्रों में कुल नौ अच् (स्वर) माने हैं- 'अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ'।
(i) **ह्रस्व स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में केवल एक मात्रा का समय लगता है अर्थात् उच्चारण समय लगता है तो वह स्वर ह्रस्व स्वर कहलाता है। इसे मूल स्वर भी कहते हैं। इस श्रेणी में निम्न पाँच स्वर शामिल किए जाते हैं- 'अ, इ, उ, ऋ, लृ'।
(ii) **दीर्घ स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है तो वह दीर्घ स्वर कहलाता है।
- दीर्घ स्वरों में प्रायः दो-दो स्वरों को मेल होता है, अतः इनको संयुक्त स्वर भी कहते हैं। इनकी संख्या आठ मानी जाती हैं-
(क) 'अस्य च्चौ' सूत्र के अनुसार- आ, ई, ऊ, ऋ (4)
(ख) माहेश्वर सूत्र के अनुसार दीर्घ स्वर-ए, ओ, ऐ, औ (4)
नोट: 'लृ' स्वर का दीर्घ रूप नहीं होता है।
इस प्रकार संस्कृत व्याकरण में कुल आठ दीर्घ स्वर माने गए हैं।
(iii) **प्लुत स्वर-** जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है अर्थात् तीन मात्राओं का समय लगता है तो वह स्वर प्लुत स्वर कहलाता है।
- इसे लिखते समय (ऽ) से दर्शया जाता है।
- प्लुत स्वरों का प्रयोग वैदिक मंत्रों में उच्चारण रूप में किया जाता है। पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ में 8/9 प्लुत स्वर स्वीकार किए गए हैं-
नोट- इस प्रकार पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ में कुल 21/22 स्वर वर्ण माने गए हैं। (ह्रस्व-5, दीर्घ-8, प्लुत-8/9=21/22)
- ह्रस्व-दीर्घ एवं प्लुत इन तीनों प्रकार के स्वरों के पुनः तीन-तीन भेद कर दिए जाते हैं। यथा- (1) उदात्त (2) अनुदात्त एवं (3) स्वरित।
- उदात्त, अनुदात्त व स्वरित स्वरों के भी पुनः दो-दो भेद कर दिए जाते हैं।
(1) अनुनासिक स्वर (जैसे-अँ, आँ, ईँ, ईँ, उँ, ऊँ)
(2) अननुनासिक या निरनुनासिक स्वर (जैसे-अ, आ, इ, ई)

हल् (व्यंजन)

- ◆ किसी स्वर की सहायता से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाते हैं। संस्कृत वर्णमाला में कुल 33 व्यंजन हैं, जिनका वर्गीकरण तीन प्रकार से किया गया है।
(1) **स्पर्श व्यंजन-** क् से लेकर म् तक 25 वर्ण स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।
(2) **अन्तःस्थ व्यंजन-** य्, व्, र्, ल् यह चार वर्ण अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं।
(3) **ऊष्म व्यंजन-** श्, ष्, स, ह् यह चार वर्ण ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं।
- नोट-** उपर्युक्त व्यंजनों के अलावा चार संयुक्त व्यंजनों की रचना भी की जाती है, जैसे-
(1) क्ष = क् + ष (2) त्र = त् + र
(3) ज्ञ = ज् + ञ (4) श्र = श् + र

अयोगवाह वर्ण

- ◆ जिन वर्णों का चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों में उपदेश नहीं किया गया है लेकिन जो वर्ण लेखन में काम आते हैं उन्हें अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। अयोगवाह वर्ण निम्नलिखित हैं-
 - (1) अनुस्वार - इसका प्रयोग हमेशा स्वर के बाद में होता है।
(2) विसर्ग - इसका प्रयोग भी स्वर के बाद होता है।
(3) अर्द्ध विसर्ग - विसर्ग का आधास्वरूप अर्द्ध विसर्ग कहलाता है।
(4) यम वर्ण/युग्म वर्ण - जो वर्ण दो-दो के जोड़े में आते हैं उन्हें 'यम' वर्ण कहा जाता है।
 - ◆ यम वर्ण 4 हैं क्, ख्, ग्, घ्
 - ◆ पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ के अनुसार वर्णों की संख्या 63/64 मानी गयी है।
"त्रिषष्टिः चतुष्षष्टिः वा वर्णाः शम्भुमते मता"
शम्भु अर्थात् शंकर के मतानुसार 63 वर्ण माने गये हैं जबकि स्वयंभू अर्थात् ब्रह्मा के अनुसार 64 वर्ण माने गये हैं।
 - 1. **स्वराः विंशतिरेकश्च = अर्थात् स्वरों की संख्या 21 मानी गई है-**
- | ह्रस्व | दीर्घ | प्लुत |
|--------|-------|-------|
| अ | आ | आऽ |
| इ | ई | ईऽ |
| उ | ऊ | ऊऽ |
| ऋ | ऋ | ऋऽ |
| लृ | - | लृऽ |
| | ए | एऽ |
| | ऐ | ऐऽ |
| | ओ | ओऽ |
| | औ | औऽ |
- स्पर्शानां पञ्चविंशतिः = अर्थात् स्पर्शी वर्णों की संख्या मानी गयी है क् से म् तक।
 - यादयश्च स्मृता ही अष्टौ = यकारादि वर्णों की सं. 8
(I) अन्तःस्थ-वर्ण य्, व्, र्, ल्
(II) ऊष्मः वर्ण = श्, ष्, स, ह्
 - चत्वारश्च यमा स्मृता = अर्थात् यम वर्णों की संख्या 4 मानी गई है।
कुं, खुं, गुं, घुं

5. अनुस्वार = (1) वर्ण अनुस्वार भी माना गया है।
6. विसर्ग = (1) वर्ण विसर्ग भी माना गया है।
7. पराश्रित वर्ण = जो वर्ण किसी अन्य वर्ण पर आश्रित रहते हैं उन्हें पराश्रित वर्ण कहा जाता है।
- ◆ पराश्रित वर्ण (2) है- (i) जिह्वामूलीय, (ii) उपध्मानीय

8. दुः स्पृष्ट वर्ण = जिस वर्ण का उच्चारण करते समय जिह्वा अत्यन्त कठिनाई से उच्चारण स्थान का स्पर्श करती है उसे दुः स्पृष्ट वर्ण कहते हैं। दुः स्पृष्ट वर्ण = ङ्
व्यंजनों का वर्गीकरण : व्यंजनों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है- (i) उच्चारण के आधार पर वर्गीकरण (ii) प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण।

व्यंजनों का उच्चारण के आधार पर वर्गीकरण

उच्चारण स्थानानि

क्र.सं.	उच्चारण स्थान	वर्ण का नाम	सूत्र	सूत्र की परिभाषा
1	कण्ठः	कण्ठ्य वर्ण	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, आ, क वर्ण (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह तथा विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है।
2	तालु	तालव्य वर्ण	इचुयशानां तालुः	इ, ई, च वर्ण (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) य, तथा 'श' का उच्चारण स्थान तालु होता है।
3	मूर्धा	मूर्धन्य वर्ण	ऋदुरषाणां मूर्धा	ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऴ वर्ण (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र एवं ष का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।
4	दन्त	दन्त्य वर्ण	लृतुलसानां दन्ताः	लृ, त वर्ण (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल एवं स का उच्चारण स्थान दन्त होता है।
5	ओष्ठ	ओष्ठ्य वर्ण	उपूध्मानीयानामोष्ठौ	उ, ऊ, प वर्ण (प्, फ्, ब्, भ्, म्) एवं *उपध्मानीय वर्ण (प्र, फ्र) का उच्चारण स्थान 'ओष्ठ' होता है।
6	नासिका	नासिक्य वर्ण	(i) जमडणनानां नासिका (ii) नासिकानुस्वारस्य च	प्रत्येक वर्ण के पंचम वर्ण (ङ, ज, ण, न, म) तथा अनुस्वार (.) का उच्चारण स्थान *नासिका होता है।
7	कण्ठ-तालु	कण्ठतालव्य वर्ण	एदैतोः कण्ठतालुः	ए, ऐ इन दोनों वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठतालु होता है।
8	कण्ठोष्ठ	कण्ठोष्ठ्य वर्ण	ओदैतोः कण्ठोष्ठम्	ओ, औ इन दोनों वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ होता है।
9	दन्तोष्ठ	दन्तोष्ठ्य वर्ण	वकारस्य दन्तोष्ठम्	व वर्ण का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ होता है।
10	जिह्वामूल	जिह्वामूलीय वर्ण	जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	*जिह्वामूलीय वर्ण (क्, ख्) का उच्चारण स्थान 'जिह्वामूल' होता है।

उपध्मानीय-

- ◆ यह अर्द्ध विसर्ग का रूप माना जाता है। इसका प्रयोग प्र, फ्र के साथ किया जाता है।

जिह्वामूलीय-

- ◆ यह भी अर्द्ध विसर्ग का रूप माना जाता है। इसका प्रयोग क्र, ख के साथ किया जाता है।

नोट- निम्नलिखित 10 वर्णों के 2-2 उच्चारण स्थान माने गए हैं-

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| (1) ङ = कण्ठ+नासिका | (6) ए = कण्ठ + तालु |
| (2) ज = तालु+नासिका | (7) ऐ = कण्ठ + तालु |
| (3) ण = मूर्धा+नासिका | (8) औ = कण्ठ + ओष्ठ |
| (4) न = दन्त+नासिका | (9) औ = कण्ठ + ओष्ठ |
| (5) म = ओष्ठ+नासिका | (10) व = दन्त + ओष्ठ |

नोट-पाणिनीय शिक्षा ग्रंथ के अनुसार कुल आठ उच्चारण स्थान माने गए हैं, जैसे-

"अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥"

- | | | | |
|---------------|-----------|------------------|--------------|
| 1. उरः (काकल) | 2. कण्ठः | 3. शिरः (मूर्धा) | 4. जिह्वामूल |
| 5. दन्त | 6. नासिका | 7. ओष्ठ | 8. तालु |

व्यंजनों का प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण

प्रयत्न की परिभाषा-

- ◆ किसी भी वर्ण का उच्चारण करने पर मुख के आन्तरिक एवं बाह्य अंगों के द्वारा जो प्रयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

- ◆ प्रयत्न (यत्न) के भेद- "यत्नो द्विधा-आभ्यन्तरो बाह्यश्च"

1. आभ्यन्तर प्रयत्न

2. बाह्य प्रयत्न

1. **आभ्यन्तर प्रयत्न-** हमारे मुख के आन्तरिक अंगों के द्वारा जो प्रयत्न किया जाता है, उसे आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं-

- (i) **स्पृष्ट-"स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्"** अर्थात् 'क' से लेकर 'म' तक के सभी 25 स्पर्श व्यंजनों का आभ्यन्तर प्रयत्न 'स्पृष्ट' माना जाता है।

- (ii) **ईषत्स्पृष्ट-"ईषत्स्पृष्टमन्तः स्थानाम्"** अर्थात् 'य, व, र, ल' इन चारों व्यंजनों का आभ्यन्तर प्रयत्न 'ईषत्स्पृष्ट' माना जाता है।

- (iii) **ईषद्विवृत-"ईषद्विवृतमूष्मणाम्"** अर्थात् 'श, ष, स, ह' इन चारों ऊष्म व्यंजनों का आभ्यन्तर प्रयत्न 'ईषद्विवृत' माना जाता है।

- (iv) **विवृत-"विवृतं स्वरणाम्"** अर्थात् सभी स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न 'विवृत' माना जाता है।

- (v) **संवृत-** "ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोगे संवृतम्।

प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव॥"

- ◆ अर्थात् ह्रस्व 'अ' स्वर का प्रयोग दशा में आभ्यन्तर प्रयत्न 'संवृत' होता है एवं प्रक्रिया दशा में ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न 'विवृत' ही होता है।

प्रयोग दशा-

- ◆ जब ह्रस्व 'अ' का किसी शब्द में सामान्यतः प्रयोग किया जाता है, तो वह उसकी प्रयोग दशा कहलाती है। जैसे- राम, शिव, गणेश- इन सभी उदाहरणों में अंतिम स्वर ह्रस्व 'अ' की प्रयोग दशा मानी जाएगी। अतः प्रयोग दशा में ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न हमेशा संवृत माना जाता है।

प्रक्रिया दशा-

- ◆ जब ह्रस्व 'अ' का प्रयोग किसी वर्ण के साथ संधि के लिए प्रयोग किया जाता है तो वह उसकी प्रक्रिया दशा मानी जाती है, जैसे- राम+अवतार = रामावतार।

- ◆ इस उदाहरण में 'म' में प्रयुक्त ह्रस्व 'अ' की प्रक्रिया दशा मानी जाएगी। अतः प्रक्रिया दशा में ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत माना जाता है।
2. **बाह्य प्रयत्न-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुखाधिक बाह्य भागों को प्रयत्न करना पड़ता है तो उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके 11 भेद हैं-
- विवार-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख पूरी तरह खुलता है।
 - संवार-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख पूरी तरह नहीं खुलता है।
 - श्वास-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वर्ण तेज श्वास के साथ बाहर निकलता है।
 - नाद-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वर्ण तेज ध्वनि के साथ बाहर निकलता है।
 - घोष-** जिन वर्णों का उच्चारण तेज घोष (कंपन) के साथ बाहर निकलता है।
 - अघोष-** जिन वर्णों का उच्चारण कम कंपन के साथ बाहर निकलता है।
 - अल्पप्राण-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कम प्राणों (वायु) का प्रयोग हो।
 - महाप्राण-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय अधिक प्राणों (वायु) का प्रयोग हो।
 - उदात्त-** "उच्चैरुदात्तः" जिन वर्णों का उच्चारण तालु आदि के ऊपर के भागों से किया जाता है, वे उदात्त कहलाते हैं। वैदिक मंत्रों में इनका प्रयोग किया जाता है। इन वर्णों के ऊपर कोई चिह्न नहीं होता है।
 - अनुदात्त-** "नीचैरनुदात्तः" जिन वर्णों का उच्चारण तालु आदि के नीचे के भागों से किया जाता है, वे अनुदात्त कहलाते हैं। वैदिक मंत्रों में इनका प्रयोग किया जाता है। इन वर्णों के नीचे आड़ी/क्षैतिज रेखा (क) चिह्न होता है।
 - स्वरित-"समाहार स्वरितः"** जिन वर्णों का उच्चारण जिह्वा आदि के मध्य के भाग से किया जाता है, वे स्वरित कहलाते हैं। इनका प्रयोग वैदिक मंत्रों में किया जाता है। इन वर्णों के ऊपर खड़ी रेखा चिह्न होता है।

बाह्य प्रयत्नों का वर्गीकरण-

संवार, नाद, घोष	हश् प्रत्याहार के वर्ण (ह्र, य्, व्, र् तथा प्रत्येक वर्ग का 3, 4, 5 वर्ण) एवं अनुस्वार
विवार, श्वास, अघोष	खर् प्रत्याहार के वर्ण (श्, ष्, स् तथा प्रत्येक वर्ग का 1, 2 वर्ण) एवं विसर्ग
अल्पप्राण-	प्रत्येक वर्ग का 1, 3, 5 वर्ण तथा अंतस्थ वर्ण (य्, व्, र्, ल्)
महाप्राण	प्रत्येक वर्ग का 2, 4 वर्ण तथा ऊष्म वर्ण (श्, ष्, स्, ह्)

नोट- जिस वर्ण का बाह्य प्रयत्न **संवार** होगा उसका **नाद, घोष** भी होगा तथा जिस वर्ण का बाह्य प्रयत्न **विवार** होगा उसका **श्वास, अघोष** भी होगा।

वर्णों की विभिन्न संज्ञाएँ (संज्ञा प्रकरणम्)

- इत् संज्ञा-** किसी धातु, प्रत्यय या शब्द के अंत में आए हलन्त वर्ण की इत् संज्ञा "हलन्त्यम्" सूत्र से होती है तथा "तस्य लोपः" सूत्र से उस वर्ण का लोप होता है। जैसे माहेश्वर सूत्र के प्रत्येक सूत्र के अंतिम हलन्त वर्ण की इत् संज्ञा होती है। जैसे- अ, इ, उ, ण् - इसमें ण् इत् संज्ञक है।

- सवर्ण संज्ञा-"तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्"** अर्थात् जिन वर्णों के उच्चारण स्थान एवं आभ्यन्तर प्रयत्न दोनों समान होते हैं, उन वर्णों के परस्पर सवर्ण संज्ञा मानी जाती है, जैसे- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ, इन वर्णों की परस्पर सवर्ण संज्ञा मानी जाती है, क्योंकि इन वर्णों के उच्चारण स्थान एवं आभ्यन्तर प्रयत्न समान है।
नोट-"ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्" सूत्र के अनुसार ऋ-लृ इन वर्णों की भी परस्पर सवर्ण संज्ञा मानी जाती है।
- पद संज्ञा-"सुप्तिङन्तं पदम्"** सूत्र के अनुसार यदि किसी शब्द के साथ कोई 'सुप्' प्रत्यय जुड़ जाता है अथवा किसी धातु के साथ कोई 'तिङ्' प्रत्यय जुड़ जाता है तो उनके जुड़ने के बाद जो रूप बनता है, उस शब्द की पद संज्ञा मानी जाती है।
जैसे- राम+सु = रामः (पद संज्ञक)
पठ् + तिप् = पठति (क्रिया पद)
नोट- 'सुप्' प्रत्ययों की संख्या 21 मानी गई हैं।
'तिङ्' प्रत्ययों की संख्या 18 मानी गई है।
- संयोग संज्ञा-"हलोऽनन्तरा संयोगः"** इस सूत्र के अनुसार जब किसी शब्द में किन्हीं दो या दो से अधिक व्यंजनों के बीच में कोई स्वर नहीं आता है, तो उन व्यंजनों की संयोग संज्ञा मानी जाती है, जैसे- **अग्नि** = अ ग् न् इ। इसमें ग् तथा न् के बीच कोई स्वर नहीं है, अतः ग् तथा न् की संयोग संज्ञा हुई। इसी प्रकार **इन्द्र** = इ न् द् र् अ शब्द में न् द् र् के बीच कोई स्वर नहीं है, अतः न् द् र् की संयोग संज्ञा हुई।
- टि संज्ञा-"अचोऽन्यादि टि"** सूत्र के अनुसार अंतिम किसी शब्द में अंतिम अच् (स्वर) से लेकर परे वाले वर्ण समूह की **टि संज्ञा** मानी जाती है, जैसे-राजन् शब्द में **अन् टि संज्ञक वर्ण समूह** है। इसी प्रकार **पतत्** शब्द में **अत् टि संज्ञक वर्ण समूह** है।
- प्रगृह्य संज्ञा-"ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्"** सूत्र के अनुसार दीर्घ ईकारांत, दीर्घ उकारांत एवं एकारांत शब्द जब द्विवचन में प्रयुक्त हो, तब उन शब्दों की प्रगृह्य संज्ञा मानी जाती है, जैसे-

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हरिः	हरी	हरयः
मुनिः	मुनी	मुनयः
साधुः	साधू	साधवः
विष्णुः	विष्णू	विष्णवः
लता	लते	लताः
गीता	गीते	गीताः

- ◆ उपर्युक्त उदाहरण में जो द्विवचन में शब्द लिखे गए हैं, वे प्रगृह्य संज्ञक शब्द माने गए हैं।
- निष्ठा संज्ञा-** "क्त" एवं "क्तवतु" इन दोनों प्रत्ययों की **निष्ठा संज्ञा** होती है।
 - घ संज्ञा-** 'तरप्' एवं 'तमप्' इन दोनों की **घ संज्ञा** होती है।
 - घु संज्ञा-** 'दा' तथा 'धा' धातुओं की तथा इनके अर्थ वाले अन्य धातुओं की **घु संज्ञा** होती है।
 - सत् संज्ञा-** 'शत्' एवं 'शानच्' प्रत्ययों की **सत् संज्ञा** होती है।
 - गुण संज्ञा-"अदेङ् गुणः"** सूत्र के अनुसार अ, ए, ओ इन तीन वर्णों की **गुण संज्ञा** होती है।
 - वृद्धि संज्ञा-"वृद्धिरादैच्"** सूत्र के अनुसार आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की **वृद्धि संज्ञा** होती है।
साफल्यम्, माधुर्यम्, सौन्दर्यम्।

अभ्यास प्रश्न

1. "औ" इत्यस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानमस्ति-
(a) दन्तोष्ठम् (b) कण्ठोष्ठम्
(c) कण्ठतालु (d) नासिका
2. अन्तःस्थाः वर्णाः सन्ति-
(a) य व र ल (b) ह्श् ष् स्
(c) प् फ् ब् भ् (d) जप्
3. "प" वर्णस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति-
(a) कण्ठः (b) दन्तः
(c) ओष्ठौ (d) तालु
4. 'उ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति-
(a) कण्ठः (b) तालु
(c) मूर्धा (d) ओष्ठौ
5. 'ऋ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति-
(a) दन्ताः (b) जिह्वा
(c) मूर्धा (d) कण्ठः।
6. 'चवर्गस्य' उच्चारणस्थानं भवति-
(a) मुखम् (b) मूर्धा
(c) तालु (d) दन्ताः
7. 'थ' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानं भवति-
(a) तालु (b) मूर्धा
(c) कण्ठः (d) दन्ताः
8. 'य' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते-
(a) कण्ठः (b) मूर्धा
(c) तालु (d) दन्ताः।
9. 'लृ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति-
(a) नासिका (b) दन्ताः
(c) ओष्ठौ (d) कण्ठः।
10. 'ओ' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते
(a) कण्ठोष्ठम् (b) दन्तोष्ठम्
(c) कण्ठतालु (d) जिह्वामूलम्
11. ऊष्मवर्णः वर्तते?
(a) र् (b) ह्
(c) प् (d) व्।
12. "घ" कारस्य उच्चारणस्थानमस्ति -
(a) कण्ठः (b) तालु
(c) नासिका (d) मूर्धा
13. अनुस्वारस्य उच्चारणस्थानं किम्?
(a) नासिका (b) कण्ठः
(c) तालु (d) दन्ताः
14. 'ए'कारस्य उच्चारणस्थानं किम्?
(a) कण्ठ (b) कण्ठोष्ठम्
(c) कण्ठतालु (d) तालु
15. 'ज' इति वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम् ?
(a) दन्ताः (b) ओष्ठौ
(c) तालु (d) मूर्धा
16. अधोलिखितेषु दन्त्योष्ठयः वर्णः कः ?
(a) व् (b) क्
(c) त् (d) प्
17. अचः भवन्ति -
(a) व्यञ्जनानि (b) स्वराः
(c) उपसर्गाः (d) धातवः
18. "य" इत्यस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति -
(a) मूर्धा (b) दन्ताः
(c) तालु (d) कण्ठः
19. संस्कृतभाषायाम् स्वराः सन्ति -
(a) य् व् र् ल् (b) श् ष् स् ह्
(c) अ इ उ ऋ (d) ज् म् ङ् न्
20. उष्म वर्णानाम् क्रमः कः?
(a) श् ष् स् ह् (b) ष् श् स् ह्
(c) स् ष् श् ह् (d) ह् ष् स् श्
21. 'व' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति?
(a) कण्ठोष्ठम् (b) कण्ठ-तालु
(c) दन्तोष्ठम् (d) जिह्वामूलम्।
22. 'त' वर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति?
(a) नासिका (b) मूर्धा
(c) कण्ठः (d) दन्ताः।
23. 'अ' स्वरस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति?
(a) ओष्ठौ (b) कण्ठः
(c) दन्ताः (d) मुखम्।
24. 'मूर्धा' उच्चारणस्थानम् अस्ति-
(a) वकारस्य (b) षकारस्य
(c) ककारस्य (d) पकारस्य।
25. 'ह' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते
(a) मूर्धा (b) कण्ठः
(c) तालु (d) नासिका।
26. 'ए' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति
(a) कण्ठोष्ठम् (b) दन्तोष्ठम्
(c) कण्ठतालु (d) नासिका।
27. 'मूर्धा' उच्चारणस्थानं कथ्यते-
(a) 'ल' वर्णस्य (b) 'र' वर्णस्य
(c) 'य' वर्णस्य (d) 'न' वर्णस्य।

ANSWER KEY

1. [b]	2. [a]	3. [c]	4. [d]	5. [c]	6. [c]	7. [d]	8. [c]	9. [b]	10. [a]
11. [b]	12. [a]	13. [a]	14. [c]	15. [c]	16. [a]	17. [b]	18. [c]	19. [c]	20. [a]
21. [c]	22. [d]	23. [b]	24. [b]	25. [b]	26. [c]	27. [b]			

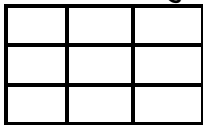




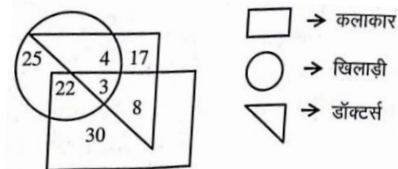
विगत वर्षों के प्रश्न-पत्र



भाग - अ मानसिक योग्यता

- अमन का परिचय देते हुए रेखा ने कहा "उसकी पत्नी मेरे पिता की इकलौती बेटी है"। अमन रेखा से किस प्रकार संबंधित है?
(A) देवर/साला (B) पति
(C) पिता (D) दामाद [B]
- 'अभियंता' जिस तरह 'उत्पादन' (Production) से सम्बन्धित हैं, उसी तरह 'डॉक्टर' (Doctor) सम्बन्धित हैं
(A) उपचार (B) अस्पताल
(C) शरीर (D) सर्जरी [A]
- एक खास भाषा में DEBU को 45221 और MANSI को 13114199 कोड किया जाता है।
उसी भाषा में RAJVEER को कैसे कोड किया जाएगा?
(A) 16100225588 (B) 17111222555
(C) 18011252581 (D) 18110225518 [D]
- यदि VOTER = 41352, HEATER = 743654, TEASER = 645834 है, तो कौनसी संख्या "S" का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) 1 (B) 5
(C) 8 (D) 7 [C]
- दिये गये चार सेट में से वह सेट चुनें जो नीचे दिये गये सेट के समान है - 13:20:27
(A) 3:11:18 (B) 18:25:32
(C) 18:27:72 (D) 7:14:28 [B]
- दी गई श्रृंखला में ऐसे कितने 7 हैं जिनके ठीक पहले 6 आता है लेकिन उनके ठीक बाद 8 नहीं आता है?
3, 4, 8, 7, 6, 1, 5, 6, 7, 8, 4, 9, 6, 7, 5
(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 4 [A]
- नीचे कथन (I) एवं कथन (II) दिए गए हैं, उनको पढ़कर सही उत्तर का चयन कीजिए
कथन : (I) ऑनलाइन शॉपिंग में काफी बढ़ोतरी हुई है।
(II) कई स्थानीय रिटेल दुकानें बंद हो रही हैं।
(A) कथन (I) कारण है और कथन (II) उसका परिणाम है।
(B) कथन (II) कारण है और कथन (I) उसका परिणाम है।
(C) दोनों कथन (I) और (II) स्वतंत्र कारण हैं।
(D) दोनों कथन (I) और (II) स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं। [A]
- यदि ACE = 15 है और BDF = 48 है, तो HJL क्या होगा?
(A) 960 (B) 710
(C) 698 (D) 250 [A]
- निम्नलिखित अक्षरों को पुनर्व्यवस्थित (Rearrange) करने पर बनने वाले शब्द का आखिरी अक्षर क्या है?
C, P, A, O, E, C, K (A bird)
(A) E (B) K
(C) P (D) C [B]
- दिये गये चित्र में से कुल वर्गों की संख्या ज्ञात कीजिए

(A) 10 (B) 14
(C) 12 (D) 16 [B]

- निम्न श्रृंखला को पूरा कीजिए
5040, 720, 120, 24,, 2, 1
(A) 8 (B) 7
(C) 6 (D) 5 [C]
- एक बड़े शहर के नेटवर्क पर साइबर अटैक हुआ, जिससे सेवाएं ठप हो गई।
कार्रवाई के तरीके होंगे -
(I) अधिकारियों को तुरंत सभी नेटवर्क बंद कर देने चाहिए।
(II) IT टीम को कमजोरी का पता लगाकर उसे ठीक करना चाहिए।
(A) सिर्फ (I) (B) सिर्फ (II)
(C) न तो (I) और ना ही (II) (D) (I) और (II) दोनों [D]
- यदि बिट्टू कहता है, "आरती की माँ मेरी माँ की इकलौती बेटी है।" तो बिट्टू का आरती से क्या रिश्ता है?
(A) मामा (B) चाचा
(C) दादा (D) पिता [A]
- यदि 'Y' कहता है कि उसकी माँ X की माँ की इकलौती बेटी हैं, तो 'X', 'Y' से किस प्रकार सम्बन्धित है?
(A) चाचा (B) भाई
(C) चचेरा भाई (D) मामा [D]
- यदि अपराजित, भूमि का भाई है और भूमि, चैतन्य की बहन है, तो अपराजित का चैतन्य से क्या संबंध है?
(A) भाई (B) माँ
(C) "पिता (D) बहन [A]
- दूसरे युग की दूसरी सादृश्यता ज्ञात करने के लिए उसी सम्बन्ध का उपयोग करें - 16 : 2 :: 256 :
(A) 4 (B) 6
(C) 5 (D) 7 [A]
- वह संख्या पहचानिए जो दिए गए पैटर्न में फिट बैठती है
16, 81, 256, 625, 1296,
(A) 2401 (B) 2405
(C) 2409 (D) 2415 [A]
- सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें-
125 : 216 :: ? : 512
(A) 260 (B) 300
(C) 312 (D) 343 [D]
- निम्न रेखाचित्र का अध्ययन करके नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर दीजिए-



कितने डॉक्टर, खिलाड़ी और कलाकार दोनों हैं?

- (A) 22 (B) 8
(C) 3 (D) 30 [C]
- निम्न श्रृंखला का अगला पद ज्ञात कीजिए-
ADA, EHE, ILI,
(A) JKJ (B) GJG
(C) MPM (D) JHJ [C]

21. एक MNC में 1000 कर्मचारियों को यादृच्छिक रूप से चुना गया। 500 को चाय पसंद है, 380 को कॉफी पसंद है और 120 को चाय और कॉफी दोनों पसंद हैं। निम्न का मिलान करें -

1. कितने लोगों को सिर्फ चाय पसंद है?	(i) 760
2. कितने लोगों को सिर्फ कॉफी पसंद है?	(ii) 640
3. कितने लोगों को न तो चाय पसंद है और ना ही कॉफी?	(iii) 240
4. कितने लोग चाय या कॉफी में से केवल एक ही चीज़ पसंद करते हैं?	(iv) 260
5. कितने लोगों को कम से कम एक पेय पसंद है?	(v) 380

- (A) (1)-(i), (2)-(ii), (3)-(iii), (4)-(iv), (5)-(v)
 (B) (1)-(v), (2)-(iv), (3)-(iii), (4)-(ii), (5)-(i)
 (C) (1)-(ii), (2)-(iii), (3)-(i), (4)-(v), (5)-(iv)
 (D) (1)-(iii), (2)-(i), (3)-(ii), (4)-(iv), (5)-(v) [B]

22. यदि $E = 5$ और $BAT = 23$ है, तो $MUG = \dots\dots\dots$

- (A) 41 (B) 53
 (C) 57 (D) 62 [A]

23. प्रश्न चिह्न की जगह क्या आएगा?

A ₁	B ₅	C ₉
D ₁₃	E ₁₇	?
G ₇	H ₁₁	I ₁₅

- (A) F₂₁ (B) G₂₂
 (C) H₂₃ (D) I₂₄ [A]

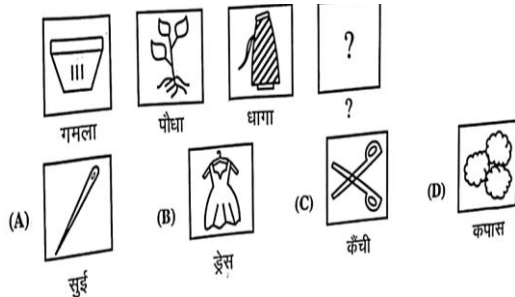
24. निम्न श्रृंखला में अगला पद ज्ञात कीजिए

- 3F, 6G, 11I, 18L,
 (A) 21O (B) 25N
 (C) 25P (D) 27P [D]

25. निम्नलिखित में से "तीर : धनुष" के समान जोड़ा ज्ञात कीजिए

- (A) फुटबॉल : हाथ (B) सलाद चाकू
 (C) बुलेट : राइफल (D) धुआँ : पानी [C]

26. प्रश्न चिह्न के स्थान पर कौनसी विकल्प आकृति आएगी?



27. रवि ने सीता से कहा, "तुम्हारी माँ मेरी दादी की बेटी हैं"। रवि और सीता एक दूसरे से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

- (A) चाचा - भतीजी (B) पिता - पुत्री
 (C) चचेरे / ममेरे भाई-बहन (D) माता - पुत्र [C]

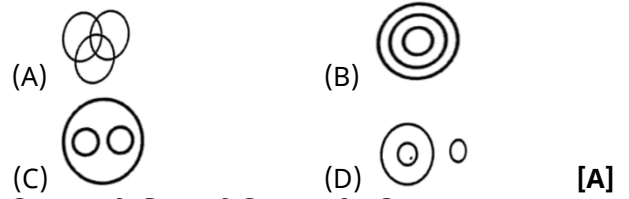
28. एक लड़की ने एक लड़के का परिचय कराते हुए कहा, "यह मेरे चाचा के पिता की बेटी का बेटा है।" इस लड़के का उस लड़की से क्या रिश्ता है?

- (A) बहन (B) भाई
 (C) सगे भाई/बहन (D) बेटा [B]

29. एक परिवार में छः सदस्य हैं G, H, I, J, N, O जिसमें से तीन महिलाएँ और एक विवाहित जोड़ा है। G, I की माँ है और J, I का बेटा है। H, G का पति है और I उसका बेटा है जबकि O उसकी बेटी है। महिलाओं के समूह में कौन शामिल हैं?

- (A) N, W, I (B) G, H, I
 (C) N, O, G (D) G, N, J [C]

30. निम्नलिखित में से कौनसा आरेख एक शिक्षक, एक लेखक और एक कलाकार के बीच सर्वश्रेष्ठ संबंध को दर्शाता है?



31. निम्न प्रश्न के लिए सही विकल्प को चुनिए

- गाय : बैल : घोड़ी :
 (A) जानवर (B) कुत्ता
 (C) घोड़ा (D) माँस [C]

32. एक घड़ी 1 बजे चालू की जाती है। 5 बजकर 30 मिनट पर घंटे की सुई कितने डिग्री घूम चुकी होती है?

- (A) 115° (B) 135°
 (C) 140° (D) 155° [B]

33. एक सुबह, ऋतिक पूर्व दिशा में 2 कि.मी. चलता है, फिर दाहिनी ओर मुड़कर 3 कि.मी. चलता है, फिर बाईं ओर मुड़कर 2 कि.मी. चलता है। अब वह किस दिशा की ओर मुख करके खड़ा है?

- (A) दक्षिण (B) उत्तर
 (C) पश्चिम (D) पूर्व [D]

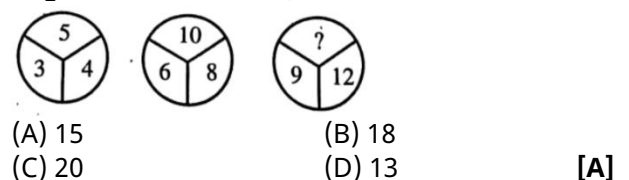
34. चार शब्द दिये गये हैं जिनमें से तीन किसी न किसी रूप में एक जैसे हैं, जबकि चौथा अलग है। विषम अलग शब्द का चयन करें-

- (A) भावना (B) खुशी
 (C) चिंता (D) गुस्सा [A]

35. यदि 'नीले' को 'हरा' पुकारा जाये, 'हरे' को 'सफेद', 'सफेद' को 'लाल', 'लाल' को 'काला' तब साफ आकाश का रंग क्या होगा?

- (A) नीला (B) हरा
 (C) सफेद (D) काला [B]

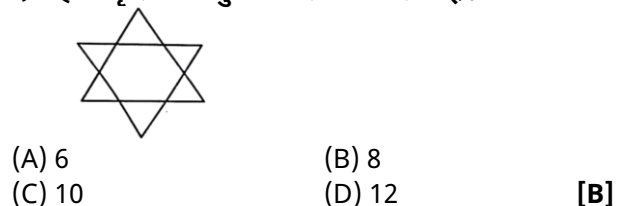
36. विलुप्त संख्या को पहचानिए-



37. X, Y और Z की आयु का योग 45 वर्ष है। Y की आयु क्या है? कथन:

- (I) Y, X से 12 वर्ष बड़ा है।
 (II) Z की आयु 15 वर्ष है।
 (A) केवल कथन (I) प्रश्न का उत्तर देने के लिए पर्याप्त है।
 (B) केवल कथन (II) प्रश्न का उत्तर देने के लिए पर्याप्त है।
 (C) दोनों कथन (I) और (II) प्रश्न का उत्तर देने के लिए पर्याप्त हैं।
 (D) दोनों कथन (I) और (II) प्रश्न का उत्तर देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। [C]

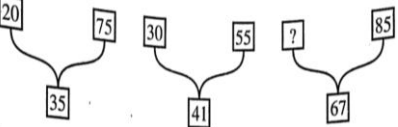
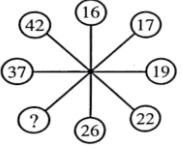
38. दी गई आकृति में त्रिभुजों की संख्या कितनी है?



39. दूसरे समूह में लुप्त पद ज्ञात कीजिए -

- AEJO : BFKP :: CGLQ :
 (A) ENSY (B) DLNP
 (C) DHMR (D) FMPV [C]

40. अजीत, भाविनी के पिता हैं, जो चित्रा की पुत्री है और चित्रा, पारुल की पुत्री है। अजीत का पारुल से क्या संबंध है?
(A) पुत्र (B) पुत्री
(C) दामाद (D) बहू [C]
41. निम्न श्रृंखला में आगे क्या आएगा?

(A)  (B) 
(C)  (D)  [C]
42. निम्नलिखित में लुप्त संख्या भरें?

(A) 35 (B) 40
(C) 45 (D) 50 [D]
43. शब्दों का विषम जोड़ा चुनें -
(A) गाय: बछड़ा (B) कुत्ता : कुतिया
(C) शेर : शावक (D) कछुआ नन्हा कछुआ [B]
44. A, P, R, X, S और Z एक पंक्ति में बैठे हैं। S और Z केन्द्र में हैं, A और P किनारों पर हैं। R, A के बायीं ओर बैठा है। P के दायीं ओर कौन बैठा है?
(A) S (B) X
(C) Z (D) R [B]
45. निम्न प्रश्न में विलुप्त संख्या खोजिए-

(A) 30 (B) 25
(C) 27 (D) 31 [D]
46. उस शब्द का पता लगायें जो दिये गए शब्द के अक्षरों से बनाया जा सकता है PRAGMATIC
(A) GUITAR (B) AGMARK
(C) GAME (D) MAGIC [D]
47. निम्नलिखित में से कौनसा समूह से संबंधित नहीं है?
(A) ZA (B) XC
(C) VE (D) MG [D]
48. 'P, Q और R की उम्र का कुल योग 90 साल है। पाँच साल पहले उनकी उम्र का कुल योग कितना था?
(A) 70 साल (B) 75 साल
(C) 80 साल (D) 85 साल [B]
49. यदि '+' का आशय 'x', '-' का आशय '+', 'x' का आशय '÷' और '÷' का आशय '-' हो, तो
 $20 + 10 \times 20 \div 4 - 10$ का मान होगा
(A) 8 (B) 16
(C) 32 (D) 17 [B]
50. निम्न में से कौनसा भिन्न है?
(A) व्हाट्सएप (B) स्काइप
(C) स्नैपचैट (D) लिंक्डइन [D]

भाग ब
राजस्थान की सामान्य जानकारी

51. 'विकसित राजस्थान @2047' में, वर्ष 2029 तक राज्य का लक्ष्य कितने मूल्य की अर्थव्यवस्था अर्जित करना है-
(A) \$275 बिलियन (B) \$325 बिलियन
(C) \$350 बिलियन (D) \$450 बिलियन [C]
52. बाड़मेर की गिरल खदान और नागौर की मातासुख और कसनाऊ खदानों से कौनसा खनिज निकाला जाता
(A) बेंटोनाइट (B) जिप्सम
(C) लिग्नाइट (D) चूना पत्थर [C]
53. निम्नांकित में से कौनसी एक नदी चंबल नदी की सहायक नदी नहीं है?
(A) काली सिंध (B) बाणगंगा
(C) बनास (D) पार्वती [B]
54. राजस्थान में 2024-25 के दौरान किस सेक्टर ने प्रचलित मूल्यों पर 'सकल राज्य मूल्य वर्धन' में सर्वाधिक योगदान दिया है?
(A) कृषि (B) उद्योग
(C) अवसंरचना (D) सेवा [D]
55. निम्नलिखित में से राजस्थान के किस खिलाड़ी को 2025 में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(A) साक्षी कुमारी (B) मोना अग्रवाल
(C) ओम प्रकाश मिठरवाल (D) सुंदर सिंह गुर्जर [B]
56. निम्नांकित में से जयपुर के किस दरबारी संगीतज्ञ ने 'स्वर-सागर' नामक ग्रंथ लिखा था?
(A) भट्ट द्वारकानाथ (B) देवर्षि भट्ट
(C) अली भगवान (D) चौद खॉ [D]
57. 'सांझी कला' में किस देवी की पूजा की जाती है?
(A) पार्वती (B) लक्ष्मी
(C) सरस्वती (D) सीता [A]
58. राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के सही समूह को पहचानिए-
(A) पिछोला, फतेह सागर, पंचभद्रा
(B) जयसमंद, डीडवाना, नक्की
(C) राजसमंद, सिलीसेढ़, कोलायत
(D) सांभर, लूणकरणसर, आना सागर [C]
59. राजस्थान के निम्नांकित पुरातात्विक स्थलों में से किसका उत्खनन 1952-54 के दौरान स्वीडिश पुरातात्विक दल द्वारा किया गया था?
(A) रंग महल (B) जोधपुरा
(C) गणेश्वर (D) भीनमाल [A]
60. 26 जनवरी, 1950 को प्रारंभ हुए संविधान की प्रथम अनुसूची में अजमेर को किस रूप में श्रेणीकृत किया गया था?
(A) पार्ट - A राज्य (B) पार्ट - B राज्य
(C) पार्ट - C राज्य (D) संघ शासित क्षेत्र [C]
61. शाहरुख खान अभिनीत फिल्म 'पहेली' इनमें से किस राजस्थानी लेखक की कहानी पर आधारित थी?
(A) विजयदान देथा की 'दुविधा'
(B) नाथमल जोशी की 'एक बींदणी दो बींद'
(C) लक्ष्मी कुमारी चुंडावत की 'मांझल रात'
(D) यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र की 'जोग-संजोग' [A]
62. उन तीन स्थलों को पहचानिए, जहाँ 1787 से 1800 के दौरान चौथ वसूली के मुद्दे पर मराठों और राजपूत राज्यों के बीच युद्ध हुए
(A) हुरड़ा, राजमहल, तुंगा (B) बूंदी, मालपुरा, अजमेर
(C) तुंगा, पाटन, मालपुरा (D) बगरू, पाटन, जयपुर [C]

63. राजस्थान के लोक रंगकर्म की किस विधा से 'तुरा कलंगी' संबंधित है?
(A) ख्याल (B) तमाशा
(C) रम्मत (D) स्वांग [A]
64. राजस्थान में अरावली पर्वत श्रेणी की दूसरी सर्वोच्च चोटी है -
(A) अचलगढ़ (B) सज्जनगढ़
(C) जरगा (D) सेर [D]
65. पुष्कर मेला किस माह में आयोजित होता है?
(A) श्रावण (B) पौष
(C) कार्तिक (D) भाद्रपद [C]
66. मोरिया, लूर, कूद, मांदल नृत्य हैं -
(A) गरासिया के (B) भील के
(C) गुर्जर के (D) कालबेलिया के [A]
67. निम्नलिखित में से किसने 'वीर भारत समाज' की स्थापना की थी?
(A) जमनालाल बजाज (B) मोतीलाल तेजावत
(C) माणिक्य लाल वर्मा (D) विजय सिंह पथिक [D]
68. दो बावड़ियों से मिलकर बना 'नगर सागर कुंड' स्थित है
(A) दौसा में (B) बूंदी में
(C) कोटा में (D) चित्तौड़गढ़ में [B]
69. बांध और जिस नदी पर इसे निर्मित किया गया है, के त्रुटिपूर्ण युग्म को पहचानिए-
(A) मेजा बांध कोठारी नदी
(B) मातृकुंडिया बांध - बनास नदी
(C) नाहर सागर बांध नगदी नदी
(D) फतेह सागर बांध बेड़च नदी [C]
70. राजस्थान की निम्न वस्तुओं में से किसे जी.आई. (भौगोलिक संकेत) टैग नहीं मिला है?
(A) बीकानेरी भुजिया (B) कोटा डोरिया
(C) जयपुर की ब्लू पॉटरी (D) राजस्थान रावण हत्था [D]
71. निम्न में से कौन कभी भी राजस्थान विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष नहीं रहे?
(A) भैरों सिंह शेखावत (B) हरिदेव जोशी
(C) वसुंधरा राजे (D) अशोक गहलोत [D]
72. 1990 के दशक (1990 से 1999) के दौरान, निम्नांकित में से किसने राजस्थान के मुख्यमंत्री का पद धारण नहीं किया?
(A) हरि देव जोशी (B) शिव चरण माथुर
(C) भैरों सिंह शेखावत (D) अशोक गहलोत [B]
73. लोक-देवताओं के सही समूह को पहचानिए, जिनकी पाँच पीरों के रूप में राजस्थान में पूजा की जाती है -
(A) पाबूजी, तेजाजी, कल्लाजी, गोगाजी, देवनारायणजी
(B) देवनारायणजी, रामदेवजी, हड़बूजी, मल्लीनाथजी, कल्लाजी
(C) गोगाजी, पाबूजी, रामदेवजी, मेहाजी, हड़बूजी
(D) पाबूजी, मल्लीनाथजी, मेहाजी, गोगाजी, तेजाजी [C]
74. राजस्थान के स्थानों के सही समूह को पहचानिए, जिन पर सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था
(A) चित्तौड़, जोधपुर, सिराही
(B) रणथंभोर, चित्तौड़, जालौर
(C) जोधपुर, जालौर, चित्तौड़
(D) सिराही, रणथंभोर, जोधपुर [B]
75. वर्तमान समय के कौनसे जिले महाभारत काल के 'जांगलदेश' के अंतर्गत आते हैं-
(A) बीकानेर - नागौर (B) उदयपुर - जोधपुर
(C) अलवर - जयपुर (D) अलवर - भरतपुर [A]
76. निम्न व्यक्तियों में से कौन राजस्थान विधान सभा के पूर्णकालिक अध्यक्ष नहीं रहे हैं?
(A) नरोत्तम लाल जोशी (B) रामकिशोर व्यास
(C) निरंजन नाथ आचार्य (D) गुलाब चंद कटारिया [D]
77. जोहड़, खड़ीन और झालरा विधियाँ हैं
(A) जल संरक्षण की (B) मृदा संरक्षण की
(C) वन्यजीव संरक्षण की (D) बीज संरक्षण की [A]
78. निम्न में से कौन 'एकी आंदोलन' से संबंधित हैं?
(A) मोतीलाल तेजावत (B) माणिक्य लाल वर्मा
(C) नयनू राम शर्मा (D) कुंज बिहारी लाल मोदी [A]
79. 'गींदड़' नृत्य के संबंध में निम्नांकित कथनों पर विचार कीजिए
(I) यह शेखावटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है।
(II) इसे केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।
(A) केवल (I) सही है
(B) केवल (II) सही है
(C) (I) व (II) दोनों सही हैं
(D) न तो (I) ना ही (II) सही है [C]
80. पंडित विश्व मोहन भट्ट को उनके एल्बम 'ए मीटिंग बाय द रिवर' के लिए 1994 में कौनसा पुरस्कार दिया गया था?
(A) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार
(B) पद्म श्री
(C) ग्रैमी पुरस्कार
(D) कालिदास सम्मान [C]
81. ओ.डी.ओ.पी. योजना के अंतर्गत जिले और उत्पाद के त्रुटिपूर्ण युग्म को पहचानिए
(A) बारों - आम (B) अजमेर - गुलाब
(C) चूरू - मूंगफली उत्पाद (D) सीकर - प्याज़ [A]
82. निम्नांकित में से कौनसा एक दुर्ग करौली जिले में स्थित नहीं है?
(A) तिमनगढ़ (B) शेरगढ़
(C) देवगिरि (D) उंटगिरी [B]
83. जयसिंह सूरी निम्न में से किस पुस्तक के लेखक हैं?
(A) राज प्रशस्ति (B) हमीर मद मर्दन
(C) कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति (D) ज्ञान मंजरी [B]
84. सूकड़ी नदी के किनारे, सोनगिरी की पहाड़ियों पर कौनसा किला बना हुआ है?
(A) गागरोन किला (B) भैंसरोड़गढ़ किला
(C) जालौर किला (D) सिवाना किला [C]
85. होली (धुलंडी) के दूसरे दिन 'बादशाह की सवारी' की शोभायात्रा कहाँ निकाली जाती है?
(A) चूरू (B) भीलवाड़ा
(C) भीनमाल (D) ब्यावर [D]
86. हमसीढ़ो क्या है?
(A) भीलों द्वारा गाया जाने वाला गीत
(B) मीणा द्वारा गाया जाने वाला गीत
(C) मांगणियार द्वारा गाया जाने वाला गीत
(D) लंगा द्वारा गाया जाने वाला गीत [A]
87. राजस्थान के निम्नांकित मंदिरों में से कौनसा एक मंदिर-स्थापत्य की 'भूमिज शैली' से संबंधित नहीं है?
(A) महानालेश्वर, मैनाल (B) समाधीश्वर मंदिर, चित्तौड़गढ़
(C) भांड देवरा, बारों (D) सूर्य मंदिर, रणकपुर [B]
88. 'इन्या पर्वत' किससे संबंधित है?
(A) भील (B) गरासिया
(C) मीणा (D) गुर्जर [A]

89. राजस्थानी काव्य-संग्रह 'गाँव अर अम्मा', जिसे वर्ष 2024 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला, के लेखक कौन हैं?
(A) अंबिका दत्त (B) मुकुट मणिराज
(C) भँवर सिंह सामोर (D) मीठेश निर्मोही [B]
90. राजस्थान के पुरातात्विक स्थल और समीपस्थ नदी के त्रुटिपूर्ण युग को पहचानिए
(A) बागोर - कोठारी (B) सुनारी - कांटली
(C) नगरी - बेड़च (D) नोह - बाणगंगा [D]
91. 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के तहत पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने एवं राज्यपाल को सिफारिशें करने के लिये कौनसी संवैधानिक संस्था बनायी गयी है?
(A) राजस्थान राज्य आयोजना बोर्ड
(B) राज्य वित्त आयोग
(C) पंचायत समिति
(D) जिला परिषद [B]
92. अंग्रेजों से संधि करने वाला राजपूताना का अंतिम राज्य था
(A) उदयपुर (B) कोटा
(C) सिरौही (D) जैसलमेर [C]
93. राजस्थान की जनगणना 2011 से संबंधित कथनों पर विचार कीजिए
(I) राजस्थान की कुल जनसंख्या में से, 24.9% लोग नगरीय क्षेत्र में रहते थे।
(II) राजस्थान में महिला साक्षरता दर 60.1% थी।
(A) केवल (I) सही है (B) केवल (II) सही है
(C) (I) व (II) दोनों सही हैं (D) न तो (I) ना ही (II) सही है [A]
94. 'बीजक की पहाड़ी' में की गयी खुदाई में किस साम्राज्य के अवशेष मिले हैं?
(A) मौर्य साम्राज्य (B) गुप्त साम्राज्य
(C) चोल साम्राज्य (D) पांड्य साम्राज्य [A]
95. राजस्थान के राज्यपाल को पहचानिए, जिनकी पदावधि के दौरान अनुच्छेद 356 के अधीन राष्ट्रपति शासन केवल उद्घोषित किया गया, वापस नहीं लिया गया
(A) रघुकुल तिलक (B) हुकुम सिंह
(C) एम. चेन्ना रेड्डी (D) बलिराम भगत [C]
96. राजस्थान के महान चित्रकार मोरध्वज निहालचंद चित्रकला की किस शैली से संबंधित थे?
(A) बीकानेर शैली (B) जोधपुर शैली
(C) बूंदी शैली (D) किशनगढ़ शैली [D]
97. इनमें से किस महिला स्वतंत्रता सेनानी को उनके राजनीतिक और सामाजिक सुधार कार्यों के कारण बूंदी से निष्कासित किया गया था?
(A) नगेन्द्र बाला (B) जानकी देवी बजाज
(C) शांता त्रिवेदी (D) अंजना देवी चौधरी [D]
98. नागौर के राजपूत योद्धा अमर सिंह राठौड़ को निम्नांकित में से किस बादशाह ने 'राव' की पदवी प्रदान की थी?
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ (D) औरंगज़ेब [C]
99. निम्न में से कौन स्वतंत्रता सेनानी, 1954 से 1960 तक राज्य सभा के सदस्य रहे?
(A) बलवंत सिंह मेहता (B) मास्टर आदित्येन्द्र
(C) जयनारायण व्यास (D) माणिक्य लाल वर्मा [B]
100. वर्ष 2022-23 के आंकड़ों के अनुसार सोयाबीन उत्पादन में राजस्थान का कौनसा स्थान है?
(A) प्रथम (B) द्वितीय
(C) तृतीय (D) चतुर्थ [C]

भाग स
शिक्षण अभिक्रमता एवं अभिवृत्ति

101. एक सफल अध्यापक वह है, जो-
(A) विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करे।
(B) समय से पहले कोर्स पूरा कर दे।
(C) विद्यार्थियों को नोट्स तैयार करने में सहयोग करे।
(D) विद्यार्थियों को फेल करने में विश्वास नहीं करे। [A]
102. जब कोई शिक्षक विद्यार्थियों को कुछ जानकारी देना चाहता है, तो कौनसी सम्प्रेषण कौशल का इस्तेमाल किया जाएगा?
(A) बोलना और लिखना (B) बोलना और पढ़ना
(C) पढ़ना और लिखना (D) बोलना और सुनना [A]
103. 'संदेश में सभी जरूरी जानकारी होनी चाहिए।' सम्प्रेषण कौशल का यह मूल सिद्धान्त निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?
(A) स्पष्टता (B) संक्षिप्तता
(C) पूर्णता (D) ठोसपन [C]
104. सम्प्रेषण एक प्रक्रिया है
(A) विचारों व सूचना का आदान-प्रदान करने की
(B) आदेश देने की
(C) केवल संदेश लिखने की
(D) केवल सुनने की [A]
105. मूल्य शिक्षा के लिए कौनसी विधि सबसे उपयुक्त है?
(A) व्याख्यान विधि (B) अभ्यास विधि
(C) श्रुतलेख विधि (D) कहानी सुनाने की विधि [D]
106. "मूल्यांकन" शब्द का क्या अर्थ है?
(A) मापन
(C) मापन और मूल्य निर्धारण
(B) मूल्य निर्धारण
(D) न तो मापन और ना ही मूल्य निर्धारण [C]
107. व्यक्ति का वह गुण जिससे यह पता चलता है कि वह समस्या को कितने तरीकों से समाधान करना जानता है, कहलाता है
(A) प्रवाहिता (B) लचीलापन
(C) मौलिकता (D) विस्तारण [B]
108. मिस नीना ने विद्यार्थियों से अखबार के विभिन्न उपयोगों के बारे में बताने को कहा। रेहान ने अखबार के 15 अलग-अलग उपयोगों को बताकर यह खेल जीत लिया। इस खेल के माध्यम से मिस नीना ने रचनात्मकता के किस घटक को संबोधित किया?
(A) प्रवाह (B) लचीलापन
(C) मौलिकता (D) विस्तार [B]
109. एक विद्यार्थी की खुद की लिखी कविता रचनात्मकता के किस तत्व को दिखाती है?
(A) मौलिकता (B) लचीलापन
(C) विस्तार (D) प्रवाह [A]
110. अधिगम की प्रक्रिया में, इनाम किस तरह का प्रेरक है, जो शिक्षक विद्यार्थियों को देता है?
(A) बाहरी (B) आंतरिक
(C) जैव-जनित (D) शारीरिक [A]
111. आपकी कक्षा का एक विद्यार्थी कक्षा में रुचि प्रदर्शित नहीं करता है, तो आप
(A) उसे दंड देंगे।
(B) उसे कक्षा से बाहर निकाल देंगे।
(C) इसके पीछे के कारण का पता करेंगे।
(D) उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे। [C]
112. सृजनात्मकता को विकसित करने में शिक्षक की भूमिका है -
(A) कठोर नियम लागू करना
(B) तैयार उत्तर देना
(C) रटत अधिगम पर बल देना
(D) खोज एवं प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करना [D]

113. सूचना भेजने वाले से जानकारी पाने के लिए इनमें से किस तरीके का इस्तेमाल किया जाता है?
(A) सुनना (B) बोलना
(C) बताना (D) लिखना [A]
114. शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुसार, व्यावसायिक दृष्टिकोण किसे प्रभावित करता है?
(A) केवल शिक्षक (B) केवल प्रशासन
(C) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (D) विद्यालय भवन [C]
115. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द, अधिगम की प्रकृति का वर्णन नहीं करता है?
(A) प्रक्रिया (B) उत्पाद
(C) उद्देश्यपूर्ण (D) सतत [B]
116. निम्नलिखित में से कौनसा शिक्षक के व्यावसायिक दृष्टिकोण का मूल घटक है?
(A) पूर्वाग्रह एवं विश्वास (B) रुचि एवं राय
(C) रुचि एवं विश्वास (D) विश्वास एवं व्यवहार [D]
117. शिक्षा में लैंगिक पक्षपात का परिणाम होता है -
(A) सामाजिक अन्याय (B) समान अवसर
(C) समावेशी विकास (D) संतुलित विकास [A]
118. शिक्षक का व्यावसायिक दृष्टिकोण सबसे अधिक किसमें सहायक होता है?
(A) अनुशासन बनाए रखने में
(B) विद्यार्थियों के अधिगम में सुधार करने में
(C) कार्यभार कम करने में
(D) छुट्टियाँ बढ़ाने में [B]
119. विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता पैदा करने के लिए किस तरह का अनुशासन सबसे प्रभावी है?
(A) प्रभाववादी अनुशासन (B) दमनकारी अनुशासन
(C) मुक्तिवादी अनुशासन (D) आत्मानुशासन [D]
120. सकारात्मक कक्षा वातावरण बनाए रखना किसकी जिम्मेदारी है?
(A) छात्रों की (B) विद्यालय प्रशासन की
(C) शिक्षकों की (D) अभिभावकों की [C]
121. निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है -
(A) छात्रों को रैंक देना
(B) अंतिम परिणाम आंकना
(C) प्रतिस्पर्धा बढ़ाना
(D) अधिगम प्रक्रिया में सुधार करना [D]
122. शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 में किन कक्षाओं के लिए CCE को अनिवार्य बनाया गया?
(A) कक्षा I से V (B) कक्षा VI से VIII
(C) कक्षा I से VIII (D) कक्षा IX से XII [C]
123. व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध शिक्षक यह मानता है कि शिक्षण है-
(A) एक नौकरी (B) एक सामाजिक उत्तरदायित्व
(C) जीविकोपार्जन का एक साधन (D) शक्ति का एक साधन [B]
124. निम्नलिखित में से कौनसा रचनात्मक बच्चे का गुण नहीं है?
(A) बुद्धिमत्ता (B) निर्भरता
(C) आत्मविश्वासी (D) मौलिक विचार [B]
125. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक का व्यावसायिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से किस गुण को दर्शाता है?
(A) व्यक्तिगत सुविधा (B) विद्यार्थियों के प्रति प्रतिबद्धता
(C) आर्थिक लाभ (D) सामाजिक प्रतिष्ठा [B]
126. कौनसी नेतृत्व शैली अनुयायियों को अपनी क्षमता पहचानने के लिए प्रोत्साहित करती है?
(A) आदिम नेतृत्व (B) प्रेरणादायक नेतृत्व
(C) लेन-देन संबंधी नेतृत्व (D) नौकरशाही नेतृत्व [B]

127. निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने में शिक्षक की भूमिका का वर्णन करता है?
(A) प्रशासक (B) प्रबंधक
(C) जाँचकर्ता (D) प्रेरक [D]
128. कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों की रचनात्मकता विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका कौनसा रहेगा?
(A) रचनात्मकता विकसित करने के तरीकों पर भाषण
(B) रचनात्मकता के उदाहरण देना
(C) रचनात्मक सोच के लिए प्रोत्साहित करना
(D) रचनात्मकता विकसित करने के लिए हाथों से की जाने वाली गतिविधि [D]
129. आपकी कक्षा का एक विद्यार्थी हमेशा अनोखे प्रश्न करता है, तो आप -
(A) उसे चुप रहने को कहेंगे।
(B) उसे बार-बार प्रश्न पूछने पर डांट लगायेंगे।
(C) उसके अनोखे प्रश्नों के पीछे उसकी सृजनशीलता की पहचान करेंगे।
(D) उसे अलग मिलने को कहेंगे। [C]
130. शिक्षण में सामाजिक संवेदनशीलता मुख्यतः किससे संबंधित है?
(A) कठोर अनुशासन (B) शिक्षार्थी की पृष्ठभूमि की समझ
(C) विषयवस्तु पूर्णता (D) परीक्षा नियंत्रण [B]
131. एक लोकतांत्रिक नेता सामान्यतः -
(A) अकेले निर्णय लेता है
(B) सहभागिता को प्रोत्साहित करता है
(C) कठोर नियंत्रण रखता है
(D) उत्तरदायित्व से बचता है [B]
132. आप अपने विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष के विकास का आकलन करने हेतु क्या करना चाहेंगे?
(A) एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रशासित करेंगे
(B) मनोचिकित्सक द्वारा जाँच करायेंगे
(C) निरन्तर साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद गतिविधियों का आयोजन करायेंगे
(D) उपलब्धि परीक्षण प्रशासित करेंगे [C]
133. विभिन्न पृष्ठभूमियों वाले और व्यापक रूप से फैले श्रोताओं के लिए निम्नलिखित में से कौनसा संचार प्रकार उपयुक्त है?
(A) अंतर्वैयक्तिक संचार (B) अंतरा वैयक्तिक संचार
(C) समूह संचार (D) जनसंचार [D]
134. "रचनात्मक मूल्यांकन" शब्द का संबंध किससे है?
(A) शिक्षण की शुरुआत में विद्यार्थियों का मूल्यांकन
(B) शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों का मूल्यांकन
(C) शिक्षण प्रक्रिया के बाद विद्यार्थियों का मूल्यांकन
(D) सत्र के अंत में विद्यार्थियों का मूल्यांकन [B]
135. CCE का उद्देश्य किसे कम करना है?
(A) अधिगम अवसर (B) शिक्षक की भूमिका
(C) परीक्षा तनाव (D) छात्र सहभागिता [C]
136. निम्नलिखित में से कौन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का तत्व नहीं है?
(A) शिक्षक (B) शिक्षार्थी
(C) माता-पिता (D) पाठ्यचर्या [C]
137. कक्षा के नेतृत्वकर्ता के रूप में, भयमुक्त वातावरण बनाने के लिए, आप अपने पाठ की योजना निम्नलिखित में से किस प्रकार बनाएंगे?
(A) विद्यार्थियों को सीखने योग्य जानकारी प्रदान करने हेतु
(B) विद्यार्थियों को आपस में चर्चा करने और जाँच पड़ताल में शामिल करने हेतु
(C) यह सुनिश्चित करने हेतु कि विद्यार्थी स्वयं अध्ययन करें और सीखें
(D) ऐसा व्याख्यान देने हेतु जिसे विद्यार्थी सुन सकें [B]

138. एक शिक्षक कक्षा के नेता के रूप में तब सफल होता है, जब उसकी अनुपस्थिति में भी -
 (A) कक्षा के विद्यार्थी आपस में बातचीत में व्यस्त हों।
 (B) विद्यार्थी कक्षा में शांति से बैठे हों।
 (C) विद्यार्थी अपना काम करने में व्यस्त हों।
 (D) विद्यार्थी खेलों में व्यस्त हों। [C]
139. निम्नलिखित में से कौनसी CCE में सतत मूल्यांकन की विशेषता नहीं है?
 (A) नियमित मूल्यांकन
 (B) इकाई परीक्षण की आवृत्ति
 (C) मूल्यांकन एक बार होने वाली घटना
 (D) सीखने की कमियों का निदान [C]
140. सीखने के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है?
 (A) सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं।
 (B) बच्चे कई तरीके से सीखते हैं।
 (C) सभी बच्चे सीखने में सक्षम होते हैं।
 (D) मध्यस्थता के बिना सीखना संभव नहीं है। [D]
141. सामाजिक संवेदनशीलता का मतलब है -
 (A) दूसरों की भावनाओं और विचारों को समझने की क्षमता
 (B) दूसरों के बारे में बात करने की क्षमता
 (C) सामाजिक अंतःक्रिया के संकेतों को समझने की क्षमता
 (D) सामाजिक अभिवृत्ति को पहचानने की क्षमता [A]
142. सहायक के रूप में शिक्षक का अर्थ है -
 (A) अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थियों को मार्गदर्शन देना
 (B) तैयार उत्तर देना
 (C) कक्षा पर प्रभुत्व बनाना
 (D) छात्रों की अंतःक्रिया सीमित करना [A]
143. सामाजिक संवेदनशीलता है -
 (A) दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने की क्षमता
 (B) दूसरों की स्थिति को समझने की क्षमता
 (C) दोनों (A) और (B)
 (D) न तो (A) और ना ही (B) [C]
144. कौनसा कारक शिक्षक के व्यावसायिक दृष्टिकोण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है?
 (A) निरंतर प्रशिक्षण (B) प्रेरणा
 (C) कार्य असंतोष (D) विद्यार्थियों की सहभागिता [C]
145. एक प्रभावी नेता के लिए निम्न में से कौनसा आवश्यक गुण है?
 (A) शक्ति (B) विरासत
 (C) पहल (D) पद [C]
146. सक्रिय श्रवण का अर्थ है -
 (A) बिना प्रतिक्रिया सुनना (B) वक्ता को बाधित करना
 (C) समझना व प्रतिक्रिया देना (D) संदेश की अनदेखी करना [C]
147. दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाला ऐसा संप्रेषण, जो इनके बीच संप्रेषणीय सम्बन्ध स्थापित कर है, कहलाता है-
 (A) अंतरा वैयक्तिक संचार (B) पारस्परिक संचार
 (C) जनसम्पर्क संचार (D) निर्देशित करना [B]
148. अपसारी चिंतन का संबंध किससे है?
 (A) सृजनात्मकता (B) बुद्धिमत्ता
 (C) स्मृति (D) आदत निर्माण [A]
149. जब कोई शिक्षक अपने विद्यार्थियों को नक्शा बनाने में दक्ष बनाना चाहता है, तो वह इसके लिए कौनसी शिक्षा रणनीति इस्तेमाल करेगा?
 (A) व्याख्यान (B) प्रदर्शन
 (C) अभ्यास कार्य (D) भूमिका निभाना [C]

150. निम्नलिखित में से कौनसा कथन यह प्रदर्शित करता है कि विद्यार्थी संवेदनशील हैं?
 (A) उनमें केवल शाब्दिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भावनाओं और विचारों को समझने की क्षमता है।
 (B) उनमें केवल अशाब्दिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भावनाओं और विचारों को समझने की क्षमता है।
 (C) उनमें अपने पूर्वाग्रह के आधार पर स्वयं को और दूसरों को स्वीकार करने की क्षमता है।
 (D) उनमें शाब्दिक और अशाब्दिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भावनाओं और विचारों को समझने की क्षमता है। [D]

Part - D
LANGUAGE PROFICIENCY: ENGLISH

Read the following passage and answer the questions 151-154 -

A British survey found that 44 percent of firms, which started to use robots met with initial failure and 22 percent abandoned them altogether, mainly because of inadequate technological know-how and skills at all plant levels.

Robotisation is by and large a viable proposition. These machines can work round the clock, raise output, protect the quality and industrial competitiveness.

Certain production jobs, mostly simple or hazardous ones, are irretrievably lost to robotics. Thus, spot welders, spray painters, cleaners, machine loaders, grinding and polishing machine operators are endangered species.

151. What do you mean by 'robotisation'?
 (A) Making robots
 (B) Marketing robots
 (C) Introduction of robots
 (D) Replacement of humans with robots [D]
152. What does the writer say regarding initial failure?
 (A) 50 percent are using robots.
 (B) British companies stopped the use of robots.
 (C) 22 percent have abandoned the use of robots.
 (D) All of the above [C]
153. A viable proposition' is -
 (A) a workable idea
 (B) a fanciful idea
 (C) an imaginative idea
 (D) an endangered idea [A]
154. Robots are a substitute for -
 (A) planners (B) production workers
 (C) motor cars (D) endangered species [B]
155. Find out the word with correct spelling -
 (A) Supperannuation (B) Superanuation
 (C) Supperanuation (D) Superannuation [D]
156. Which connective is correct?
 he is intelligent, he is humble.
 (A) Although (B) But
 (C) Yet (D) As well as [A]

- 157. Identify the one underlined expression (A, B, C or D) that must be changed in order to correct the sentence -**
None of the children wants to be in the group that has to stay inside because everyone prefer to go A outside and play.
(A) A (B) B
(C) C (D) D [C]
- 158. Find the Antonym for 'Acquit' -**
(A) Convict (B) Disclose
(C) Adjudge (D) Imprison [A]
- 159. Complete the following sentence -**
If you answer the questions correctly
(A) you were the winner.
(B) you could be the winner.
(C) you have been the winner.
(D) you could have been the winner. [B]
- 160. Correct the following sentence -**
If I were you, I will never give up.
(A) If I was you, I will never give up.
(B) If I were you, I was never give up.
(C) If I were you, I would never give up.
(D) If I were you, I will never have give up. [C]
- 161. Which part has error in it?**
Despite for her protests / I decided/ to buy the saree/ which she did not like.
(A) Despite for her protests
(B) I decided
(C) to buy the saree
(D) which she did not like [A]
- 162. Which of the following means 'a middle course'?**
(A) By the way
(B) Through communication
(C) Via media
(D) The right order [C]
- 163. Complete the sentence with suitable Article -**
France is European country.
(A) a (B) an
(C) the (D) no article [A]
- 164. Mark the most appropriate one-word substitution for the following -**
'Undue favour shown by a person in power to his relatives.'
(A) Misanthrope (B) Flagrant
(C) Perquisition (D) Nepotism [D]
- 165. Put the following into indirect speech -**
Rahul asked Raj, "Why have you not allowed the book to be published?"
(A) Rahul asked Raj that why have the book not been published.
(B) Rahul asked Raj why he had not allowed the book to be published.
(C) Rahul asked Raj why was the book not published.
(D) Rahul asked Raj why they have not allowed the book to be published. [B]

- 166. Find the synonym for 'Veracity' -**
(A) Audacity (B) Perfection
(C) Judgement (D) Truth [D]
- 167. Find out the correct spelling -**
(A) Variagated (B) Variegated
(C) Varegated (D) Varigated [B]
- 168. Complete the sentence with suitable Articles -**
His car struck tree; you can still see mark on tree.
(A) a, the, the (B) the, the, the
(C) a, a, the (D) a, a, a [A]
- 169. Which of the following Question Tag is correct for the sentence?**
We're doing it the right way,
(A) aren't we? (B) are we?
(C) do we? (D) don't we? [A]
- 170. Choose the compound sentence -**
(A) You must take rich diet to gain weight.
(B) You must take rich diet or you will not gain weight.
(C) You must take rich diet in order to gain weight.
(D) You will gain weight by taking rich diet. [B]

भाग - द
भाषा योग्यता : हिन्दी

- 171. "खटाई में पड़ना" मुहावरे का अर्थ होता है -**
(A) लड़ाई में मारे जाना
(B) मारे-मारे फिरना
(C) काम होने में देरी या संदेह होना
(D) साफ-साफ बात कहना [C]
- 172. मुहावरे और उनके अर्थ की दृष्टि से सही विकल्प नहीं है -**
(A) नाकों चने चबाना - खूब तंग करना
(B) निन्यानवे का फेर - अनुभव शून्य होना
(C) पगड़ी उछालना - अपमान करना
(D) दूज का चाँद - कठिनाई से दर्शन देना [B]
- 173. "वर्षा, तुम गाना गाओ।" वाक्य किस प्रकार का है?**
(A) विधानार्थक (B) आज्ञार्थक
(C) इच्छार्थक (D) संकेतार्थक [B]
- 174. किस विकल्प में गलत संधि है?**
(A) तत् + लीन = तल्लीन
(B) तत् + हित = तद्धित
(C) तृष् + ना = तृष्णा
(D) एक + एक = एकैक [C]
- 175. "चंद्रमा" का पर्यायवाची नहीं है -**
(A) हिमांशु (B) सुधांशु
(C) राकेश (D) मयूख [D]
- 176. 'महौषध' शब्द में कौनसी संधि है?**
(A) वृद्धि (B) गुण
(C) दीर्घ (D) यण [A]
- 177. इनमें से शुद्ध वाक्य है -**
(A) मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की।
(B) मेरे को दो निबंध लिखने हैं।
(C) हम रात में भोजन खाते हैं।
(D) बालक मिठाई और दूध पीकर सो गया। [A]

178. जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या प्रधान उपवाक्य या समानाधिकरण उपवाक्य, किसी संयोजक शब्द से जुड़े हों, उसे कहते हैं -
 (A) साधारण वाक्य (B) मिश्र वाक्य
 (C) संयुक्त वाक्य (D) संज्ञा उपवाक्य [C]
179. "कर्कश" शब्द का विलोम शब्द है -
 (A) मधुर (B) सर्कस
 (C) निष्ठुर (D) कसूरवार [A]
180. किस शब्द में "नि" उपसर्ग नहीं है?
 (A) निमग्न (B) निश्चल
 (C) निवारण (D) निषेध [B]
181. "जीतने की इच्छा" कहलाती है -
 (A) लिप्सा (B) जिगीषा
 (C) बुभुक्षा (D) जिजीविषा [B]
182. "तड़ाक-तड़ाग" शब्द युग्म का सही अर्थ है -
 (A) जल्दी - तालाब (B) दुर्बल - तालाब
 (C) जल्दी - तगड़ा (D) तालाब - जल्दी [A]
183. इनमें से अशुद्ध शब्द कौनसा है?
 (A) महैश्वर्य (B) चक्रपाणी
 (C) लावण्य (D) कवयित्री [B]
184. "थोड़ी वस्तु से बड़ा काम नहीं हो सकता।" को दर्शाने वाली लोकोक्ति है -
 (A) चूहों की मौत, बिल्ली का खेल।
 (B) चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है।
 (C) चोटटी कुतिया जलेबियों की रखवाली।
 (D) चूहों के चाम से कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं। [D]
185. "इकतीस" शब्द में कौनसा समास है?
 (A) बहुब्रीहि (B) द्विगु
 (C) कर्मधारय (D) द्वंद्व [D]
186. "श्वेत-स्वेद" युग्म शब्दों का सही अर्थ है -
 (A) सफेद - धागा (B) सफेद - कान
 (C) सफेद - पसीना (D) सफेद - सभा [C]
187. निम्न में से किस विकल्प में सभी शब्द परस्पर पर्यायवाची नहीं हैं?
 (A) माधव, दामोदर, मुकुंद
 (B) चपला, विशिख, विहग
 (C) नरेश, महीप, महीपति
 (D) आदित्य, दिवाकर, प्रभाकर [B]
188. अशुद्ध शब्द है -
 (A) दुरावस्था (B) द्रवीभूत
 (C) नूपुर (D) अन्त्याक्षरी [A]
189. "ईंट की लेनी, पत्थर की देनी" लोकोक्ति का अर्थ होता है-
 (A) जिसकी करनी उसी को फल मिलता है।
 (B) समय बीत जाने पर काम करना।
 (C) दुष्टता के बदले और अधिक दुष्टता।
 (D) जैसा व्यक्ति वैसी आवभगत। [C]
190. इनमें से अशुद्ध वाक्य कौनसा है?
 (A) ये मेरे ही हस्ताक्षर हैं।
 (B) वह अपनी धुन में जा रहा था।
 (C) प्यास के मारे उसका प्राण निकल गया।
 (D) उसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हैं। [C]

191. द्वंद्व समास का उदाहरण है -
 (A) नीलकंठ (B) कपड़े-लत्ते
 (C) त्रिभुवन (D) महाजन [B]
192. "अभ्यागत" शब्द में कौनसा उपसर्ग है?
 (A) अभी (B) अभ्य
 (C) अभि (D) अ [C]
193. "वाणिग्वर्ग" शब्द में संधि है -
 (A) गुण संधि (B) अयादि संधि
 (C) व्यंजन संधि (D) विसर्ग संधि [C]
194. इनमें से किस विकल्प में परस्पर विलोम शब्द नहीं हैं?
 (A) उत्कर्ष - अपकर्ष (B) उत्थान - पतन
 (C) उद्धृत - विनीत (D) इष्ट - अभीष्ट [D]
195. उर्दू उपसर्ग से बना शब्द है -
 (A) अधकच्चा (B) औगुन
 (C) सुडौल (D) बाकायदा [D]
196. इनमें से किस विकल्प में परस्पर विलोम शब्द नहीं हैं?
 (A) अनन्त - सान्त (B) अथ - आदि
 (C) अग्रज - अनुज (D) अज्ञ - विज्ञ [B]
197. निम्न में से शुद्ध वाक्य है -
 (A) बेटों में युद्ध हो गया।
 (B) इस गीत की दो-चार लड़ियाँ सुना दो।
 (C) टिड्डियों की मंडली सारी फसल चट कर गई।
 (D) गोलियों की बौछार के सामने कोई टिक न सका। [D]
198. किस विकल्प के सभी शब्द शुद्ध हैं?
 (A) नीरोग, व्रतान्त (B) अत्युक्ति, ज्योत्स्ना
 (C) दुर्वसन, अनुगृह (D) द्वन्द्व, समृद्ध [B]
199. संधि विच्छेद की दृष्टि से सही विकल्प नहीं है -
 (A) सन् + चय = संचय
 (B) किम् + चन = किंचन
 (C) वाक् + मय = वाङ्मय
 (D) षट् + मुख = षण्मुख [A]
200. "लाघव" शब्द में प्रत्यय है -
 (A) अ (B) व
 (C) अव् (D) घव् [A]

भाग - द
भाषा योग्यता : संस्कृतम्

171. 'दृश्' धातोः लोटलकारे मध्यमपुरुष-द्विवचने रूपमस्ति -
 (A) पश्यत (B) पश्यतः
 (C) पश्यतम् (D) पश्यथः [C]
172. 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्रस्योदाहरणं वर्तते -
 (A) प्रायेण याज्ञिकः
 (B) पुण्येन दृष्टो हरिः
 (C) दण्डेन यतिः
 (D) नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा [C]
173. 'अन्तरेण' अव्ययस्य योगे विभक्तिः प्रयुज्यते -
 (A) तृतीया (B) द्वितीया
 (C) चतुर्थी (D) पञ्चमी [B]
174. 'दा' धातोः लटलकारे प्रथमपुरुषस्य द्विवचने रूपम् अस्ति-
 (A) दत्थः (B) दत्थे
 (C) दत्तः (D) दत्थ [C]

175. वर्गाणां प्रथमा-तृतीया-पञ्चमाः यणश्च -
 (A) अल्पप्राणाः (B) स्वरिताः
 (C) विकृताः (D) महाप्राणाः [A]
176. अ, ए, ओ इति वर्णानां का संज्ञा?
 (A) गुण-संज्ञा (B) सर्वनाम-संज्ञा
 (C) वृद्धि-संज्ञा (D) अपृक्त-संज्ञा [A]
177. आधारस्य संज्ञा भवति -
 (A) सम्बन्धसंज्ञा (B) अपादानसंज्ञा
 (C) करणसंज्ञा (D) अधिकरणसंज्ञा [D]
178. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं दन्तोष्ठमस्ति?
 (A) तकारस्य (B) वकारस्य
 (C) लकारस्य (D) मकारस्य [B]
179. 'जटाभिस्तापसः' इत्यस्मिन् वाक्ये तृतीया-विधायकं सूत्रमस्ति -
 (A) हेतौ (B) इत्थंभूतलक्षणे
 (C) येनाङ्गविकारः (D) ध्रुवमपाये [B]
180. लिङ्गदृष्ट्या शुद्धवाक्यमस्ति -
 (A) इदम् मम पुस्तकम्। (B) इयम् मम पुस्तकम्।
 (C) अयम् मम पुस्तकः। (D) इदम् मम पुस्तकाः। [A]
181. 'गवां कृष्णा बहुक्षीरा' इत्यस्मिन् उदाहरणे प्रवृत्तसूत्रमस्ति-
 (A) षष्ठी हेतुप्रयोगे (B) कर्तृकर्मणोः कृति
 (C) यतश्च निर्धारणम् (D) क्तस्य च वर्तमाने [C]
182. "राज्ञः पुरुषः" इत्यत्र कः सम्बन्धः?
 (A) जन्यजनकभावः (B) कार्य-कारणभावः
 (C) स्वस्वामिभावः (D) जातिव्यक्तिभावः [C]
183. 'रमा' शब्दस्य तृतीयाविभक्तेः एकवचने रूपं भवति -
 (A) रमाया (B) रमायाः
 (C) रमायै (D) रमया [D]
184. अच् प्रत्याहारे अयं वर्णः न परिगण्यते -
 (A) ऋ (B) लृ
 (C) ह (D) उ [C]
185. 'नृत्' धातोः लङ्लकारे मध्यमपुरुषस्य द्विवचने रूपं भवति -
 (A) अनृत्यताम् (B) अनृत्यम्
 (C) अनृत्यत (D) अनृत्यतम् [D]
186. "सः बालिकां पृच्छति।" इत्यस्मिन् रिक्तस्थाने उपयुक्तः शब्दः कः?
 (A) इमं (B) इमे
 (C) इयम् (D) इमां [D]
187. 'अन्वयः' इत्यत्र उपसर्गः वर्तते -
 (A) अन् (B) अनु
 (C) अन्व (D) अन [B]
188. गायकः इति पदे कः प्रत्ययः?
 (A) क्यप् (B) यत्
 (C) ण्वुल् (D) ण्यत् [C]

189. 'परा + जि' धातुयोगे अपादानसंज्ञकः भवति -
 (A) ईप्सितः (B) असहोऽर्थः
 (C) प्रीयमाणः (D) उत्तमर्णः [B]
190. स्पर्शवर्णानां संख्या भवति -
 (A) 24 (B) 25
 (C) 26 (D) 20 [B]
191. 'पञ्चगवम्' इति पदस्य समुचितं विग्रहवाक्यं किम्?
 (A) पञ्च गावो यस्य सः तम्
 (B) पञ्च गवां समाहारः
 (C) पञ्चानां गवानां समाहारः
 (D) पञ्चानां गवां समाहारः [D]
192. अधस्तनेषु "रोगमुक्तः" इत्यस्मिन् पदे प्रयुक्तसमासस्य नाम किम्?
 (A) तृतीया-तत्पुरुषः (B) चतुर्थी-तत्पुरुषः
 (C) पञ्चमी-तत्पुरुषः (D) सप्तमी-तत्पुरुषः [C]
193. 'स्था' धातोः लोट्लकारे मध्यमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-
 (A) तिष्ठतः (B) तिष्ठथः
 (C) तिष्ठथ (D) तिष्ठत [D]
194. 'स्था' धातोः विधिलिङ्ग - लकारे मध्यमपुरुषे बहुवचने रूपं भवति -
 (A) तिष्ठेयम् (B) तिष्ठेव
 (C) तिष्ठेयुः (D) तिष्ठेत [D]
195. 'अस्' धातोः लङ्लकारे प्रथमपुरुषैकवचने रूपं स्यात् -
 (A) अस्तु (B) भविष्यति
 (C) अस्ति (D) आसीत् [D]
196. 'धीमान्' इत्यस्मिन् पदे प्रकृतिप्रत्ययौ स्तः -
 (A) धी + मतुप् (B) धी + क्तवतु
 (C) धी + शानच् (D) धी + शत् [A]
197. 'आत्मा' इति शब्दस्य किं लिङ्गम्?
 (A) पुंलिङ्गम् (B) स्त्रीलिङ्गम्
 (C) उभयलिङ्गम् (D) नपुंसकलिङ्गम् [A]
198. निषेधार्थकस्य 'अलम्' इति पदस्य योगे विभक्तिर्भवति -
 (A) द्वितीया (B) चतुर्थी
 (C) तृतीया (D) पंचमी [C]
199. "देवैश्वर्यम्" पदस्य सन्धिविच्छेदः निर्णयः -
 (A) देव + ऐश्वर्यम्
 (B) देवी + ऐश्वर्यम्
 (C) देव + ऐश्वर्यम्
 (D) देवी + ऐश्वर्यम् [A]
200. 'राम' शब्दस्य रूपं नास्ति -
 (A) रामैः (B) रामेण
 (C) रामानाम् (D) रामयोः [C]

♦ ♦ ♦ ♦

अनुभवी शिक्षकों का मार्गदर्शन

सफलता की सही तैयारी



Anil Sir
Maths / Reasoning



Rahul Sir
Science



Kunal Sir
Psychology,
Teaching Methods



Marwadi Sir
हिन्दी



Manish Mangal Sir
English



Nagvendra Sir
Polity & Indian History



RS Sir
Art & Culture/History



S.K. Sir
Geography



Pankaj Sir
Art & Culture

BSTC परीक्षा हेतु अक्षांश प्रकाशन द्वारा प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकें



MRP : ₹ 799

S.No.AP0147
CODE : APDO(35) NRT

अक्षांश पब्लिकेशन

10 - 21, Vani Garden K Pas, Jhamar Kotda Road, Udaipur, 313002 Rajasthan
Mobile - 7850960198 | www.store.akshanshpublish.com



DOWNLOAD THE APPLICATION
ONLINE COURSE प्राप्त करने
के लिए QR CODE SCAN करें